www.terapanthinfo.com

इस अंक में

अहिंसक-नैतिक चेतना का अग्रदूत पाक्षिक

अणुव्रत

वर्ष : 56 ■ अंक : 10 ■ 16-31 मार्च, 2011

संपादक : डॉ. महेन्द्र कर्णावट
सहयोगी संपादक : निर्मल एम. रांका

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

❐ सदस्यता शुल्क :

- एक प्रति : बारह रु.
- वार्षिक : 300 रु.
- त्रैवार्षिक : 700 रु.
- दस वर्षीय : 2000 रु.

❐ विज्ञापन सहयोग :

- द्वितीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- तृतीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- चतुर्थ मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 20,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'पूरा' : 5,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'आधा' : 3,000 रु.

❐ सम्पर्क सूत्र :

अणुव्रत महासमिति
अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली–110002

दूरभाष : (011) 23233345
फैक्स : (011) 23239963

E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com
Website : anuvratinfo.org

- व्यक्तित्व का आईना — *आचार्य तुलसी* — 3
- ध्यान और अनुशासन का महत्व — *आचार्य महाप्रज्ञ* — 5
- सेवा है शाश्वत धर्म — *आचार्य महाश्रमण* — 7
- राजनीति के शुद्धिकरण की प्रेरणा — *मुनि राकेशकुमार* — 9
- घर पर बनाएं होली के प्राकृतिक रंग — *नरेन्द्र देवांगन* — 11
- मद्यपान के नुकसान — *डॉ. दिलीप धींग* — 12
- मूल्यों के विकास में शिक्षा की भूमिका — *प्रो. चाँदमल कर्णावट* — 14
- मिष्ट वचन — *डॉ. शुद्धात्मप्रकाश जैन* — 16
- प्रस्थित हुआ अहिंसा रथ — *मुनि सुखलाल* — 17
- कानून का डर किसे है — *आशीष वशिष्ठ* — 18
- आनन्दोल्लास का सर्वोत्तम मदनोत्सव : होली — *ओमप्रकाश 'दार्शनिक'* — 20
- रिश्वत मांगने वाले को थप्पड़ दूंगा : शान्तनु — *जनार्दन शर्मा* — 22
- सफलता के स्वर्णिम सूत्र — *मुस्कान बरड़िया* — 23
- क्रोध प्रबंधन के प्रभावी सूत्र — *मुनि सुधाकर* — 24
- मर्यादित और सुखी परिवार की कसौटी — *कनक बरमेचा* — 27
- बदलते परिवेश में बिखरता अस्तित्व — *साध्वी डॉ. कुन्दनरेखा* — 28
- ढलती उम्र का प्राणवायु — *शिवचरण मंत्री* — 30
- सबसे आवश्यक है पानी का सदुपयोग — *मेघराज जैन* — 31

■ स्तंभ

- संपादकीय — 2
- राष्ट्र चिंतन — 8
- प्रेरणा — 10
- झांकी है हिन्दुस्तान की — 22
- कविता — 25, 26
- लघुकथा — 27
- अणुव्रत आंदोलन — 33-40

www.terapanthinfo.com

पर्यावरण की सुध लें

पर्यावरण प्रदूषण 21वीं शताब्दी की सबसे बड़ी समस्या है। मानवीय कारणों से उत्पन्न विभिन्न तत्त्व पर्यावरण को निरंतर नुकसान पहुंचा रहे हैं। देश में बढ़ते औद्योगिकरण एवं शहरीकरण के कारण घने वन-उपवन नष्ट किए जा रहे हैं। फलस्वरूप पर्यावरण का सारा संतुलन अस्त-व्यस्त हो रहा है। औद्योगिकरण ने रोजगार और देश की अर्थव्यवस्था को जहां मजबूती दी है वहीं दूसरी ओर इसके खतरनाक और नकारात्मक पहलू हैं जिसके कारण पर्यावरण को ज्यादा नुकसान हुआ है। स्थिति इतनी खराब हो गई है कि सभी नदियां, समुद्र, भूगर्भीय जलवायु, झीलें, पहाड़ आदि बुरी तरह से प्रदूषित हो गए हैं। बढ़ते शोर प्रदूषण के कारण हर वर्ष देश में 23 प्रतिशत सड़क दुर्घटनाओं में वृद्धि हो रही है। मोटर-गाड़ी व अन्य यातायात के साधनों में बेतहाशा बढ़ोतरी और इनसे निकलने वाला धुआं एवं शोर बच्चों, गर्भवती महिलाओं, बीमार लोगों तथा बुजुर्गों पर पड़ता है। हमारे यहां कार्बन मोनो-ऑक्साइड, सीसा, सल्फर तथा नाइट्रोजन के ऑक्साइड हानिकारक स्तर को पार कर चुके हैं। विकास के नाम पर यह संकट जल, जमीन, ताप, वायु, खनिज, वनस्पति आदि अनेक क्षेत्रों में पैदा हुआ है। उपभोक्तावादी संस्कृति को पैदा करने वाला विकास पर्यावरण संकट का मूल कारण है। इसीलिए पृथ्वी का स्वास्थ्य लगातार गिरता जा रहा है। हम आंख मूंदे बेखबर हैं भविष्य में प्राणीजगत के विनाश के लिए। धरती में बढ़ता तापमान, ओजोन कवच में छिद्र, यह वायुमंडल के विध्वंस की घंटी का संकेत है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट बताती है कि विकासशील देशों में भारत भी शामिल है। जहाँ श्वांस, नेत्र, त्वचा, पेट एवं मानसिक रोगियों की संख्या में गत दो दशकों से बेतहाशा वृद्धि हुई है। भविष्य में भारत पर ग्लोबल वार्मिंग का सबसे बुरा असर पड़ सकता है क्योंकि दुनिया में ग्लोबल वार्मिंग अपना प्रभाव दिखा रही है। अगर हम वक्त रहते नहीं चेते तो यह न केवल पर्यावरण व जनजीवन के लिए हानिकारक होगा बल्कि इससे सामाजिक और राजनैतिक 'अराजकता' की स्थिति भी बन सकती है। एक सर्वे के अनुसार 25-30 वर्षों में भारतीय उपमहाद्वीप के देशों में अस्थिरता के हालात का खतरा बन सकता है। मानव जनित प्रदूषण के प्रति हमें जागरूक रहना होगा। अन्यथा पृथ्वी और मानव दोनों का अस्तित्व निश्चय ही खतरे में पड़ सकता है।

आओ! संकल्प करें कि हम पानी, पेड़, जंगल, पहाड़, ऊर्जा एवं नदी-झीलों को बचाने हेतु अपने तौर पर जो जहां है अपना सहयोग दें। एक पेड अवश्य लगाएं, हरे-भरे वृक्ष न काटें, पानी का सदुपयोग करें, बिजली व ऊर्जा की बचत करें, कागज या कपड़े की थैलियों का उपयोग करें, नदियों और झीलों को साफ रखें, खेतों में कृत्रिम खाद अपनाएं, वाहन का हॉर्न बेवजह न बजाएं, रेडियो, लाऊड-स्पीकर की आवाज पर नियंत्रण रखें, सौर ऊर्जा का प्रयोग करें तथा जीव-जंतुओं का वध न करें इत्यादि कार्यों पर अमल करने की आदत डालें।

सरकार ने देर से ही सही परंतु इस वर्ष के केन्द्रीय बजट में पर्यावरण विरोधी तकनीकों, प्रक्रियाओं को हतोत्साहित करने के लिए एक छोटा-सा कदम आगे बढ़ाया है। प्रस्तुत बजट में वानिकी और वन्य जीवों के संरक्षण के लिए एक निश्चित धनराशि तय की है। इसके तहत राष्ट्रीय वनारोपण एवं पारिस्थितिकीय विकास, नदियों और झीलों की सफाई के लिए प्रावधान रखा है। ग्रीन तकनीकों के करों में थोड़ी कटौती करके इस बार ग्रीन बजट की झलक दिखाई गई है। हालांकि पर्यावरण में सुधार कार्यक्रमों के लिए 200 करोड़ का प्रावधान पर्यावरणविदों के अनुसार कम है, जिसे बढ़ाए जाने की जरूरत है।

हम संयममयी अणुव्रत जीवनशैली अपनाकर पर्यावरण बचाने की मुहिम से जुड़ पृथ्वी की सेहत बचाकर समस्त प्राणीमात्र के कल्याण में सहयोगी बनें।

www.terapanthinfo.com

व्यक्तित्व का आईना

आचार्य तुलसी

मनुष्य के पास भावों की अभिव्यक्ति के जितने साधन हैं, भाषा उनमें बहुत सशक्त साधन है। बोलने की क्षमता दो इन्द्रियों वाले प्राणियों को प्राप्त हो जाती है। किन्तु द्वीन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के प्राणियों में मनुष्य की तरह सोचने वाला दूसरा कोई प्राणी नहीं है। मनुष्य के मस्तिष्क में कुछ ऐसे तत्त्व या रसायन हैं। जिनके कारण उसकी स्मरण शक्ति और कल्पना शक्ति का विकास संभव है। अन्य प्राणियों में वैसी क्षमता नहीं होती। इसलिए उनकी सोच का दायरा बहुत सीमित होता है। चिन्तन की भाषा में बहुत अच्छा संबंध है। सामान्यतः चिंतन स्व तक रहता है, जबकि भाषा का उपयोग दूसरों के लिए होता है।

भाषा एक उपलब्धि है। इसका सदुपयोग भी हो सकता है और दुरुपयोग भी। सदुपयोग करने वाले लोग कम होते हैं। दुरुपयोग करने वालों की संख्या बताना कठिन है। वे लोग इतना बोलते हैं कि बोलते ही जाते हैं। बोलने की अपेक्षा है या नहीं, इस बिन्दु पर विचार किए बिना निरन्तर बोलते जाना शक्ति का सदुपयोग कैसे हो सकता है?

भगवान महावीर सत्य के द्रष्टा ही नहीं, प्रवक्ता थे। उन्होंने साधक के लिए भाषा का पूरा विवेक दिया। कब बोलना चाहिए? कैसी भाषा बोलनी चाहिए? इस संदर्भ में उनका निर्देश था "बिना पूछे कुछ भी न बोले। कोई पूछे, जिज्ञासा करे तो असत्य न बोले। कही हुई बात कोई न माने तो उस पर आवेश न हो। आवेश उत्पन्न हो जाए तो उसे विफल कर दिया जाए। प्रिय या अप्रिय जो भी प्रसंग उपस्थित हो, उसे सहन किया जाए।"

भगवती आराधना में उक्त पद्य की व्याख्या इस प्रकार की है साधक जब तक अकष्ट हो, अपरिपक्व हो, तब तक उपदेश न दे। परिपक्वता के बाद उपदेश देने का प्रसंग आए तो असत्य का संभाषण न करे। सत्य बात कहने पर कोई गुस्सा करे तो उसको सफल न करे। प्रिय-अप्रिय परिस्थितियों को शांति से सहन करे।

क्रोध व्यक्ति के विवेक चक्षु को बन्द कर देता है। क्रोध की स्थिति में न तो वह शांति से सोच पाता है और न बोलने का विवेक रख पाता है। मां अपने पुत्र को कितना प्यार करती है, किन्तु वही जब क्रोधाविष्ट होती है, उसे गाली दे देती है। एक बालक उत्पात मचा रहा था। उसकी मां परेशान हो गई। कुछ और भी कारण थे। वह आग-बबूला हो उठी। उसी समय उसका पुत्र उसके पास आ गया। उसने गुस्से में उसके दो चपत जड़ दिए और कहा 'इसे मौत भी नहीं आती। मर जाए तो मेरा पिण्ड छूटे।'

दूसरे दिन बालक अच्छा काम करके आया। मां ने उसको आशीर्वाद देते हुए कहा 'बेटा! चिरंजीवी बनो।' बालक समझदार था। उसने अपनी मां से पूछा 'मां कल तुम कह रही थी कि मैं मर जाऊं तो ठीक रहे और आज तुम मुझे दीर्घजीवी होने का आशीर्वाद दे रही हो। वह क्या है?' मां को अपनी भूल का अहसास हो गया। वह बोली 'बेटा! कल तेरी मां नहीं बोल रही थी। उसके भीतर चाण्डाल बोल रहा था।'

मौन अच्छा है, बोलना भी अच्छा है। विवेकरहित मौन और संभाषण दोनों ही अच्छे नहीं होते। इसलिए बोलने से पहले और बोलते समय सूक्ष्म बुद्धि से काम लेना जरूरी है। जो व्यक्ति बोलने में विवेक रखता है, भाषा संबंधी विधि-निषेधों के प्रति जागरूक रहता है, वह अनेक स्थानों पर अवसाद से बच सकता है।

व्यक्ति सफलता की आकांक्षा रखता है। पर ऐसे प्रसंगों में क्रोध को सफल बनाना श्रेयस्कर नहीं हो सकता। इसी दृष्टि से कहा गया है कि क्रोध को असफल करो।

किसी के साथ वार्तालाप करना हो, किसी को प्रतिबोध देना हो अथवा किसी की आलोचना करनी हो, शब्दों का प्रयोग बहुत सोच-समझकर करना चाहिए। अन्यथा व्यक्ति अपने ही शब्दजाल में ऐसे फंसता है कि उसके सामने मुसीबत खड़ी हो जाती है।

दो पंडित साथ-साथ पढ़े और साथ-साथ ही एक सेठ के घर भोजन के लिए आमंत्रित हुए। वे वर्षों तक साथ रहने पर भी एक-दूसरे से ईर्ष्या करते थे। सेठ के घर पहुंचकर दोनों ने थोड़ी देर विश्राम किया। उनके साथ थोड़े से संपर्क से सेठ उनके स्वभाव को पहचान गया। अपनी समझ को प्रमाणित करने के लिए उसने दोनों पंडितों के साथ अलग-अलग बात करने का निर्णय लिया।

भोजन का समय होने वाला था। एक पंडित स्नान करने गया। सेठ ने दूसरे पंडित से कहा 'पंडितजी! आप विद्वान् हैं। आपके बारे में मैंने बहुत सुना है आपके साथ जो पंडित आए हैं, वे कैसे हैं?'

पंडित अपनी प्रशंसा सुनकर फलक

www.terapanthinfo.com

उठा। वह बोला 'सेठ साहब! उसके बारे में आपको क्या बताऊं? वह तो बना-बनाया बैल है। कुछ नहीं जानता। रास्ते में साथ हो गया इसलिए खाने-पीने की व्यवस्था हो गयी। अन्यथा इसे कौन पूछता है?' यजमान ने कहा 'पंडितजी! आपका आभार मानता हूं। आपने मुझे सही-सही जानकारी दे दी। मैं तो कुछ जानता ही नहीं हूं।'

कुछ समय बाद पंडित स्नान कर आ गया। उसके आने पर दूसरा स्नान करने गया। यजमान बोला 'पंडितजी! मैं बहुत भाग्यशाली हूं। आप जैसे महान् पंडित के चरण मेरी झोपड़ी में टिके। आपके दर्शन कर मैं कृतार्थ हो गया। आपके साथ जो एक और पंडित आए हैं, उनका क्या परिचय है?' पंडित ने सोचा 'यजमान भोला है। दोनों को बराबर समझेगा तो एक समान दान-दक्षिणा देगा। इसे जो कुछ देना है, सब मुझे मिल जाए, ऐसा उपाय करना है। अपनी सोच के अनुसार योजना बनाकर उसने कहा 'सेठ साहब! वह पंडित क्या है, बना-बनाया गधा है। न तो वह कुछ जानता है और न उसमें कुछ क्षमता है। वह तो केवल माल उड़ाना जानता है।'

सेठ ने दो काष्ठ पट्ट बिछाए। उस पर दो गद्दे बिछाए। दोनों पंडितों को भोजन के लिए बिठाया। चांदी के थाल लगवाए। पर उसने उनमें परोसा क्या? एक में भूसा और एक में घास। पंडित अपने भोजन में भूसा और घास देख स्तब्ध रह गए। और वे बोले 'सेठ साहब! यह कैसी मजाक है?' सेठ ने कहा 'पंडितों के साथ मजाक करने की धृष्टता में कैसे कर सकता हूं?' पंडित बोले 'हमको क्या परोसा है?' सेठ ने कहा 'मैं तो आपको पहचानता नहीं। आप दोनों ने एक-दूसरे का जो परिचय दिया, उसी के अनुसार खाने की व्यवस्था की गयी है। बैल का भोजन भूसा है और गधे का भोजन घास है।'

दोनों पंडितों के सिर शर्म से झुक गए। अब वे कहें तो क्या कहें? हाथ कमाया कामणा, किणनै दीजे दोष? दोनों को एक साथ जीवन का नया बोधपाठ मिल गया। दूसरों को बुरा बताने वाला स्वयं अपनी बुराई प्रकट करता है। दूसरे के बारे में ऐसे अभद्र शब्दों का प्रयोग करने वाला अपनी अभद्रता को प्रकट करता है। दोनों पंडितों ने क्षमा मांग वहां से विदा ली। दोषपूर्ण भाषा का प्रयोग करने के कारण उन्हें कठिनाई का सामना करना पड़ा।

भाषा गुणात्मक भी होती है और दोषपूर्ण भी होती है। किस भाषा का क्या प्रभाव पड़ेगा, इसे समझे बिना बोलने वाला अनर्थ कर बैठता है। इसलिए भगवान् ने कहा है ''भाषा के गुणों और दोषों को जानकर दोषपूर्ण भाषा का सदा वर्जन करने वाला प्रबुद्ध हितकर और अनुकूल वचन बोले।''

दशवैकालिक एक ऐसा आगम है, जो साधक को भाषा, चर्या, गोचरी आदि का पूरा विवेक देता है। इसका सातवां अध्ययन भाषा का विशद विवेचन करने वाला है। भाषा संबधी विधानों की सम्यक् अवगति न हो तो पग-पग पर प्रमाद की संभावना बनी रहती है। इसकी दो चूलिकाएं अध्यात्म के गंभीर तत्त्वों का खजाना है। किसी कारण मन संयम से विचलित हो जाए तो चूलिकाओं में प्रतिपादित आलम्बन सूत्रों के सहारे मन को फनः संयम में स्थिर किया जा सकता है।

भाषा व्यक्तित्व का आईना है। कौन व्यक्ति किस भाषा में बोलता है, इसके आधार पर उसके व्यक्तित्व का अंकन किया जाता है। मितभाषिता व्यक्तित्व का एक गुण है। कम शब्दों में अधिक बात कहने की कला विरले व्यक्तियों में होती है। जो व्यक्ति इस कला में निष्णात होते हैं, वे अपनी ऊर्जा का व्यय किए बिना काम करते रहते हैं। अधिक बोलने की आदत साधना की दृष्टि से उचित नहीं है, शिष्टता भी इसे ठीक नहीं मानती। सत्य सीमित और हितकर भाषा का मूल्य हर परिस्थिति में सुरक्षित रहता है।

अधिक बोलने वाले व्यक्ति की बात पर कम ध्यान दिया जाता है। वह कोई महत्त्वपूर्ण सूचना देता है, उसके प्रति भी उपेक्षा बरती जाती है। कुछ लोग तो यहां तक कह देते हैं 'अधिक बोलने वाले, अधिक फत्रियों के पिता और दो गांवों में घर बसाने वाले व्यक्ति पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ता है। ऐसे व्यक्तियों को कोई क्या मारेगा? उन्हें तो स्वयं भगवान् (कुदरत) ही मार देते हैं।'

भाषा का संबंध वाणी और लेखनी दोनों के साथ है। भाषा वह सेतु है, जो व्यक्ति को समाज के साथ जोड़ता है। भाषा न हो तो एक-दूसरे के भावों को समझने के लिए केवल संकेत ही बचा रहता है। भाषा की तुलना में संकेत बहुत दुर्बल रह जाता है। भाषा के साथ संकेत का उपयोग होने से अभिव्यक्ति और अधिक सशक्त बन जाती है।

भाषा के चार प्रकार हैं सत्य, असत्य, मिश्र और व्यवहार। जो तत्त्व जैसा है, उसको वैसा ही समझना और उसी रूप से प्रतिपादित करना सत्य भाषा है। अयथार्थ निरूपण का नाम असत्य भाषा है। मिश्र भाषा वह है, जिसमें सत्य और असत्य दोनों का मिश्रण होता है। जो भाषा न सत्य हो और न असत्य हो, वह व्यवहार भाषा है। आदेश, उपदेश आदि देना व्यवहार भाषा का प्रयोग है। इसके अनेक प्रकार है यह काम करो, अमुक वस्तु लाओ, क्या सूर्योदय हो गया है, जीव-अजीव आदि नौ तत्त्व हैं, क्रोध नहीं करना चाहिए।

असत्य और मिश्र भाषा के प्रयोग से पाप कर्म का बंधन होता है। मुनि के लिए इन भाषाओं का प्रयोग निषिद्ध है। सत्य और व्यवहार भाषा का प्रयोग विहित है। पर उसमें भी विवेक आवश्यक है। अप्रिय या मर्म को प्रकट करने वाले सत्य का प्रयोग सम्मत नहीं है। इस प्रकार की सत्य भाषा भी हितों को विघटित कर सकती है।

मौन अच्छा है, बोलना भी अच्छा है। विवेकरहित मौन और संभाषण दोनों ही अच्छे नहीं होते। इसलिए बोलने से पहले और बोलते समय सूक्ष्म बुद्धि से काम लेना जरूरी है। जो व्यक्ति बोलने में विवेक रखता है, भाषा संबंधी विधि-निषेधों के प्रति जागरूक रहता है, वह अनेक स्थानों पर अवसाद से बच सकता है।

www.terapanthinfo.com

ध्यान और अनुशासन का महत्व

आचार्य महाप्रज्ञ

हाथ का संयम, पैर का संयम, खड़े रहने का अभ्यास, बैठने का अभ्यास। बड़ा कठिन है खड़ा रहना, बड़ा कठिन है बैठना। बैठने का अभ्यास क्या सरल है? बड़ा कठिन है। ध्यान करते समय एक घंटा, पौन घंटा एक आसन में बैठना होता है। किसी का पैर सो जाता है, किसी का हाथ सो जाता है, किसी का शरीर सो जाता है। बड़ी कठिनाई का अनुभव होता है। और जब बदलने लगते हैं तो कभी एक पैर बदलो, कभी दूसरा, और बदलते-बदलते आस-पास के भाव बदलने लग जाते हैं। बड़ा कठिन होता है शरीर का अनुशासन। शरीर पर अनुशासन करने वाला व्यक्ति तीन घंटे तक एकासन में बैठ सकता है, तीन दिन और तीन महीने और तीन वर्ष बैठ सकता है। शरीर पर अनुशासन करने वाला व्यक्ति तीन घंटे खड़ा रह सकता है, तीन दिन, तीन महीने और तीन वर्ष तक खड़ा रह सकता है।

कर्नाटक में बाहुबलि की प्रतिमा है। बाहुबलि खड़े हैं कायोत्सर्ग की मुद्रा में। कब से खड़े हैं? प्रतिमा के रूप में तो एक हजार वर्ष से खड़े हैं, किन्तु साधना काल में वे भी एक वर्ष तक खड़े रहे। मुनि बन गए और कायोत्सर्ग की मुद्रा में खड़े हो गए। खड़े रहे, खड़े रहे। दिन बीते, महीने बीते, पूरा वर्ष बीत गया। पूरे वर्ष तक अविचल मुद्रा में खड़े रहे। कितना कठिन है शरीर का यह अनुशासन! एक घंटा भी यदि खड़े रहना हो तो बैठते समय शिकायत होती है कि पैर सो गया और खड़े रहना हो तो बैठते समय शिकायत होती है कि पैर सो गया और खड़े रहते शिकायत रहेगी कि पैर थंभा बन गया। सारा रक्त नीचे उतर गया और पैर में चलने की क्षमता ही नहीं रही। किन्तु मनुष्य के भीतर कितनी क्षमता है, उसका अनुमान नहीं किया जा सकता। मानवीय क्षमताओं के बारे में हमारी कल्पना ही नहीं होती। इतनी अज्ञात क्षमताएं हमारे मस्तिष्क में भरी पड़ी हैं कि मस्तिष्क का नब्बे प्रतिशत भाग तो काम ही नहीं आ रहा है। यह क्षमता का भंडार पड़ा का पड़ा रह जाता है। शेष बचे दस प्रतिशत को काम लेने वाले भी कितने हैं? सामान्य आदमी तो दो-चार या पांच प्रतिशत को ही काम में ले पाता है। सात प्रतिशत को काम में लेने वाला एक अच्छा आदमी, भाग्यशाली आदमी बन जाता है और दस प्रतिशत का काम में लेने वाला तो महान आदमी, बड़ा आदमी बन जाता है। इस प्रकार नब्बे प्रतिशत शक्तियां तो सोई-की-सोई पड़ी हैं। उन शक्तियों को जगा सकें, उन शक्तियों को प्रकट कर सकें, उस महास्रोत को खोल सकें तब कोई काम बनता है और तब यह अनुशासन प्रकट होता है। उस अनुशासन को, उन शक्तियों को जगाने की प्रक्रिया ध्यान के सिवाय आज तक कोई नहीं। उस महान अज्ञात स्रोत को उपलब्ध करने का, उस अनंतकाल से बंद दरवाजे को खोलने के लिए कोई चाबी बन सकता है तो वह 'ध्यान' बन सकता है। शरीर का अनुशासन बहुत कठिन होता है तो श्वास का अनुशासन और भी कठिन है।

श्वास का संयम बड़ा कठिन है। जो लोग श्वास शुरू करते हैं वे श्वास को ठीक लेना सीखते हैं। सम्यक् श्वास का मतलब होता है भलीभांति श्वास को लेना और भलीभांति छोड़ना और धीमे-धीमे उसे रोकने व संयम का अभ्यास करना श्वास का संयम होता है, श्वास का अनुशासन होता है।

प्राण का अनुशासन उससे भी कठिन है। श्वास का पता तो चलता है कि आ रहा है। यह जीवन का लक्षण है। श्वास चलता है तो आदमी जिंदा है, श्वास नहीं आएगा तो आदमी कैसे जीएगा? किन्तु प्राण तो और भी सूक्ष्म बन गया, उसका पता ही नहीं चलता, पकड़ में भी नहीं आता। जब प्रेक्षा-ध्यान के अभ्यास में कहा जाता है कि प्राण के प्रकंपनों को पकड़ें, प्राण के प्रवाह का अनुभव करें, प्राण के स्पंदनों का अनुभव करें तो लोग कहते हैं कहां हो रहा है, यह तो भूल-भुलैया है, कुछ पता ही नहीं चलता। अरे! कैसे चलेगा? स्थूल जगत में जी रहे हैं, सूक्ष्म जगत की बात कर रहे हैं, कैसे पता चलेगा? सूक्ष्म को पकड़ने के लिए चित्त को भी सूक्ष्म होना होगा। जब तक चित्त सूक्ष्म नहीं होगा तो सूक्ष्म का पता ही नहीं चल सकेगा।

जब प्राण के अनुशासन की क्षमता जाग जाती है तो एक हाथ के तापमान को बढ़ाया जा सकता है, दूसरे हाथ के तापमान को घटाया जा सकता है। दाएं भाग के तापमान को बढ़ाया जा सकता है और बाएं भाग के तापमान को घटाया जा सकता है। उलटा भी किया जा सकता है। चाहे जिस अवयव को स्तब्ध किया जा सकता है और चाहे जिस अवयव को अधिक सक्रिय किया जा सकता है। कला

चित्त के निर्माण के लिए आत्मानुशासन अपेक्षित है। आत्मानुशासन तब घटित होता है जब व्यक्ति में शरीर, श्वास, प्राण, वाणी और मन इन पांचों पर अनुशासन करने की क्षमता विकसित होती है। इन सब अनुशासनों का घटक है 'ध्यान'। ध्यान के जरिए हम एक आत्मानुशासन को विकसित करने की दिशा में प्रस्थान कर सकते हैं।

www.terapanthinfo.com

का विकास, शिल्पकर्म का विकास ये सारे प्राण-शक्ति के चमत्कार हैं। प्राण-शक्ति का चमत्कार है कि आंख के देखने मात्र से आदमी को वहीं का वहीं खड़ा रखा जा सकता है। आदमी को सुलाया जा सकता है और आदमी को जगाया जा सकता है। ये सम्मोहन की सारी क्रियाएं प्राण-शक्ति के चमत्कार हैं। लोहे की सांकल को तोड़ा जा सकता है। ये सारे प्राण के चमत्कार हैं। प्राण पर अनुशासन होने का मतलब है स्वतःचालित नाड़ी पर हमारा नियंत्रण हो जाता है।

वाणी का अनुशासन यानी वचन पर हमारा अनुशासन बहुत कठिन होता है वाणी पर अनुशासन करना। मौन का दिन है क्या यह वाणी नहीं है? स्मृति भी वाणी है, अबोली भाषा है। भाषा के बिना स्मृति कैसे आएगी? कोई भी स्मृति शब्दातीत नहीं होती। चिंतन आता है, वह भी वाणी है। चिंतन भाषातीत नहीं है। शब्दों के बिना चिंतन नहीं होता, चिंतन भी एक वाणी है। कल्पना होती है, कल्पना कहां से आई? आकाश से टपक गई क्या? भाषा के माध्यम से ही तो होगी। आप बोल नहीं रहे हैं, मन में कल्पना का चक्र चल रहा है। बोल ही तो रहे हैं। यानी बहिर्जल्प नहीं हो रहा है, अंतर्जल्प हो रहा है। तर्क-शास्त्र में दो प्रकार के जल्प होते हैं अंतर्जल्प और बहिर्जल्प। आपका बहिर्जल्प नहीं है, किन्तु अंतर्जल्प तो चल रहा है। आप सपना ले रहे हैं। क्या हो रहा है? बोल रहे हैं, सपने में भी भाषा है। वैज्ञनिक परीक्षण किए गए कि सपने के समय में भी मनुष्य का स्वरयंत्र सक्रिय होता है। स्वरयंत्र निष्क्रिय हो जाए तो फिर स्मृति नहीं हो सकती, कल्पना नहीं हो सकती, चिंतन नहीं हो सकता। यह सारी सक्रियता स्वरयंत्र की सक्रियता से ही हो सकती है। इसीलिए आपको निर्देश दिया जाता है कि विशुद्धि-केन्द्र पर ध्यान केन्द्रित करें, कंठ की प्रेक्षा करें। जैसे-जैसे इसके गूढ़ रहस्य आपकी समझ में आते जाएंगे तब सही मूल्यांकन होगा कि हम क्या कर रहे हैं। अन्यथा तो ऐसे लगता है कि कंठ को देखो, इस जीभ को देखो, इनको तो क्या देखना है? रोज खा रहे हैं, जीभ को देख ही रहे हैं। स्थूल बात को पकड़ते हैं, समझ में नहीं आता। जैसे-जैसे गहरे उतरेंगे, रहस्य को पकड़ेंगे, तब ज्ञात होगा कि कंठ को देखना कितना मूल्यवान होता है। जिस व्यक्ति ने कंठ पर कायोत्सर्ग करना सीख लिया, स्वरयंत्र को शिथिल करना सीख लिया उसने बहुत-सारी समस्याएं हल कर लीं। एक प्रश्न होता है कि सामयिक समस्याएं हल कर लें तो आंतरिक समस्याओं का समाधान भी मिल जाए, किन्तु समस्या केवल आंतरिक ही तो नहीं है। यथार्थ की समस्याएं भी मुंह बांए खड़ी हैं। गरीबी है तो रोटी की चिंता, परिवार है तो लड़के-लड़कियों की पढ़ाई की चिंता, शादी की चिंता, कितना दहेज, कितनी यथार्थ की चिंताएं। ध्यान करने से वे समस्याएं नहीं सुलझेंगी। आपने दस दिन ध्यान का अच्छा अभ्यास किया। घर पर गए, ऐसा तो कोई जादू नहीं होगा कि लड़के-लड़कियों की शादी भी मजे में हो जाएगी, पढ़ाई के खर्चे के बिल भी आप चुका देंगे। यह तो नहीं होगा। यथार्थ की समस्याओं का समाधान करना पड़ेगा, तभी समाधान मिलेगा। तो फिर ध्यान एक सामयिक उपचार ही रहा कि यहां दस दिन बैठे रहे। आराम से रहे, कायोत्सर्ग करते रहे। अच्छा लगा और जैसे ही उस भट्ठी में गए वैसे ही आंच आने लगी। यह एक स्वाभाविक बात है। अगर कोई आदमी यह सोचे कि ध्यान के द्वारा खेती भी हो जाएगी, रोटी भी मिल जाएगी, गरीबी भी मिट जाएगी, विवाह-शादियां भी हो जाएंगी। पढ़ाई का खर्चा भी मिल जाएगा, कपड़े भी मिल जाएंगे तो ध्यान को जैसे ऐसा कल्पवृक्ष मान लिया कि सब कुछ उससे हो जाएगा। यह कैसे होगा? धर्म को भी कुछ लोग कहते हैं कि धर्म करो, सब-कुछ हो जाएगा। मैं जानता हूं कि इससे बड़ा कोई झूठ नहीं हो सकता। यह तो बड़ा झूठ है। ध्यान कोई अनंत और असीम शक्तिशाली नहीं है। ध्यान की भी अपनी सीमा है। वह अपनी सीमा में ही काम कर सकता है। आपके मानसिक तनाव को, भीतर से आने वाले तनाव को, आवेगों, संवेगों से आने वाले तनाव को 'ध्यान' मिटा सकता है। आप यह समझें कि वह रोटी भी उपलब्ध करा देगा, तो बहुत झूठी कल्पना होगी। पर एक बात और समझें कि ध्यान रोटी तो नहीं दे सकता, विवाह-शादी का खर्चा तो नहीं दे सकता, पढ़ाई का खर्च व होटल का बिल चुकाने की बात तो नहीं कर सकता, किन्तु इन यथार्थ की समस्याओं से जूझते समय जो परेशानियां होती हैं उनसे जरूर आपको बचा लेगा।

दो बाते होती हैं (1) समस्या का सामना करना, (2) समस्या से परेशान होना। ये बिल्कुल अलग-अलग दो बाते हैं। हिन्दुस्तान की गरीबी और अन्य समस्याओं में सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि समस्या को सुलझाने के लिए जिस प्रकार की चित्त की प्रेरणा चाहिए वह नहीं है। इसके विपरीत परेशान करने की स्थितियां काम कर रही हैं। अगर हम इन दो बातों को अलग कर सकें, पानी में आकर पड़ी हुई गदंगी को साफ कर सकें, पानी को फिल्टर कर सकें, तो पानी बिल्कुल साफ होगा। हम इस बात को नहीं समझ पा रहे हैं कि समस्याओं का समाधान खोजने में, समस्यओं से जूझने में जिस प्रकार के चित्त की आवश्यकता है वैसा हमारा चित्त नहीं है। जाते तो हैं समस्या का समाधान करने के लिए, किन्तु परेशान चित्त के कारण एक और समस्या पैदा कर लेते हैं।

हम ऐसे चित्त का निर्माण करें जिससे समस्याओं का सामना करने में वह सक्षम हो सके। कभी भी समस्याओं से परेशान न हों। इस प्रकार से चित्त के निर्माण के लिए आत्मानुशासन अपेक्षित है। आत्मानुशासन तब घटित होता है जब व्यक्ति में शरीर, श्वास, प्राण, वाणी और मन इन पांचों पर अनुशासन करने की क्षमता विकसित होती है। इन सब अनुशासनों का घटक है 'ध्यान'। ध्यान के जरिए हम एक आत्मानुशासन को विकसित करने की दिशा में प्रस्थान कर सकते हैं।

www.terapanthinfo.com

सेवा है शाश्वत धर्म

आचार्य महाश्रमण

सेवाधर्म परम गहन तत्त्व है। इसलिए परमार्थ की भावना से, परार्थ की भावना से सेवा की जाए तो कर्म-निर्जरा होगी और सामने वाले व्यक्ति को भी समाधि मिलेगी। सेवा से परस्पर सम्बन्ध सुदृढ़ बनते हैं, आश्वासन मिलता है और स्वयं की चेतना भी निर्मल बनती है।

समाज में एक-दूसरे को जोड़ने वाला और परस्पर मधुर सम्बन्ध स्थापित करने वाला तत्त्व है सेवाभाव। जहाँ अनेक व्यक्ति साथ रहते हैं, वहाँ एक दूसरे की अपेक्षा भी रहती है। आचार्य उमास्वाति ने तत्त्वार्थाधिगम सूत्र में एक सुन्दर सूत्र प्रस्तुत किया है परस्परोपग्रहोजीवानाम्। प्राणियों का एक दूसरे के आलम्बन से काम चलता है। इस दुनियाँ में पूर्णतया निरपेक्ष होकर जीवन जीना असम्भव सा लगता है।

मनुष्य संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी माना जाता है। उसके जीवन में भी कितनों की सापेक्षता रहती है, तब कहीं वह जीवन जी सकता है। उदारणस्वरूप मेरे हाथ में एक डायरी है, जो मेरे काम आ रही है। इस में भी कितनों का योग लगा है तब लेखन के योग्य सिद्ध हो रही है। कहीं कागज तैयार हुए होंगे। किसी ने उन कागजों को डायरी के रूप में गठित किया होगा। किसी ने उनको खरीदा होगा। फिर हम ने अथवा किसी साधु-साध्वी ने गृहस्थ से प्राप्त किया होगा। तब कहीं जाकर मैं इस डायरी का उपयोग कर रहा हूँ। इसी प्रकार रोटी, कपड़ा आदि के निष्पन्न होने में भी अनेक व्यक्तियों का समय और श्रम लगता है,तब वह भोग्य अथवा उपभोग्य बनता है। एक दूसरे के सहयोग परस्परता और सेवाभाव के बिना कठिनाई पैदा हो सकती है। गुरु और शिष्य में भी परस्परता रहती है। गुरु शिष्य को ज्ञान देता है, वात्सल्य देता है, संस्कार देता है और उसपर अनुशासन करता है तो शिष्य भी गुरु की सेवा करता है, विनय करता है, सम्मान देता है और उनकी आज्ञा में रहता है। इस प्रकार गुरु और शिष्य का परस्पर सापेक्ष जीवन होता है। कोई यह कहे कि मुझे तो किसी की भी जरूरत नहीं है, यह निरपेक्ष बात नहीं हो सकती। जहाँ जीवन है, वहाँ पदार्थों की भी आवश्यकता रहती है और व्यक्तियों की भी आवश्यकता होती है। परस्परावलम्बन है सेवा का अर्थ भी यही है कि आदमी ठीक तरह से एक दूसरे के काम आ सके। हर व्यक्ति में हर तरह की क्षमता नही होती। सब में अलग-अलग क्षमता होती है। अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार दूसरों को सहयोग देना जीवन की एक सार्थकता होती है।

सेवा के दो प्रकार हो सकते हैं पारमार्थिक सेवा और व्यवहारिक लौकिक सेवा। पारमार्थिक सेवा के अन्तर्गत लोग जनता को अर्हत् वाणी सुनाते हैं, ज्ञानदान देते हैं। उन्हें सम्बोध प्रदान करने का प्रयास करते हैं। उनकी बुराइयों को छुडाने का, आपसी वैमनस्य को दूर करने का और समस्याओं को सुलझाने का प्रयत्न करते हैं।

सांसारिक सम्बन्धों में व्यावहारिक या लौकिक सेवा का भी महत्व है। एक असहाय व्यक्ति की कोई सहायता करे तो लौकिक सेवा हो जाती है इस सेवा के द्वारा समाज में आपसी सम्बन्ध अच्छे बनते हैं और लोगों को समस्याओं का समाधान भी मिलता है। आदमी यह चिन्तन करे कि अभी मेरा शरीर स्वस्थ है, मैं सक्षम हूँ, इस लिए मेरी स्वस्थता और सक्षमता

www.terapanthinfo.com

औरों की सेवा में सहयोगी बने। एक आदमी सेवा भी करे और उसे बार-बार जताए कि देखो, मैने तुम्हारा अमुक काम किया,यह किया, वह किया। यह गिनाने की प्रवृत्ति सेवा के महत्त्व को और उसके फल को भी कम कर देती है। सेवा निष्काम भाव से की जाए। सेवा देकर वापस कुछ प्राप्त करने की भावना न रहे। निष्काम से सेवा देने की भावना एक उच्च कोटि की भावना होती है। सेवादायी व्यक्ति सेवाग्राही व्यक्ति के शरीर को अपने शरीर के सामन समझे, अपितु अपने से भी ज्यादा उसका ध्यान रखे। जहाँ इतनी आत्मीयता होती है, वहाँ सेवा अच्छी हो सकती है। शारीरिक सेवा के साथ-साथ मानसिक समाधी का भी बहुत मूल्य है।

किसी आदमी का मन असमाहित हो, उस समय उसकी व्यथा-कथा सुन ली जाये तो मानसिक असमाधि से ग्रस्त व्यक्ति को बड़ा सम्बल मिल सकता है। गुरु देव तुलसी के समय कुछ प्रसंगों में मैने देखा कि वे किस प्रकार असमाधिस्थ व्यक्ति को समाधिस्थ बना देते थे। उन्होंने अपने ग्रन्थ पंचसूत्रम् में सुन्दर कहा है

ज्ञानी व्यक्ति भी महान् होते हैं और ध्यानी व्यक्ति भी महान होते हैं। किन्तु सेवापरायण व्यक्ति उन सब से महान होते हैं। आदमी में ज्ञान ज्यादा न भी हो, अगर सेवा की भावना ज्यादा है और सहज स्नेह की भावना है तो कम ज्ञान वाला व्यक्ति भी प्रिय बन जाता है। उसकी प्रतिष्ठा भी बढ़ती है और सब से बडी बात है कि उसकी चेतना निर्मलता को प्राप्त हो जाती है। इतना ही नहीं, स्वयं तीर्थकर कहते हैं कि जो मुनि अग्लान भाव से रूग्ण मुनि की सेवा करता है, वह वास्तव में मेरी ही सेवा करता है। आदमी नाम, ख्याति, प्रतिष्ठा और प्रतिफल की आकांक्षा से सेवा न करे। इस परिप्रेक्ष्य में माँ को याद करना चाहिए। एक बच्चा जो शारीरिक या मानसिक दृष्टि से अविकसित होता है, फिर भी माँ अपने ममत्वभाव से अथवा दायित्वभाव से बच्चे की सेवा करती है। उन बच्चों से भविष्य में पुनः कुछ पाने की आशा नहीं होती। इसके बावजूद भी माताएँ मानो अपना मातृत्व धर्म निभाते हुए उन बच्चों की सेवा करती रहती है। यह एक उदाहरण है कि किस प्रकार निष्काम भाव से और प्रतिफल की आशा के बिना भी सेवा की जा सकती है। इस संसारिक सेवा का भी महत्त्व है तो पारमार्थिक सेवा तो अपने-आपमें बहुत बड़ी बात होती है। सेवा तो शाश्वत धर्म है। सेवा करने से भेद का त्याग होता है। सेवा में अपना समर्पण होता है।

सेवाधर्म परम गहन तत्त्व है। इसलिए परमार्थ की भावना से, परार्थ की भावना से सेवा की जाए तो कर्म-निर्जरा होगी और सामने वाले व्यक्ति को भी समाधि मिलेगी। सेवा से परस्पर सम्बन्ध सुदृढ़ बनते हैं, आश्वासन मिलता है और स्वयं की चेतना भी निर्मल बनती है।

राष्ट्र चिन्तन

◆ भ्रष्टाचार के मामलों में सरकार द्वारा कोई कार्रवाई नहीं करने के बाबत विपक्ष के आरोप बेबुनियादी हैं। 2-जी स्पेक्ट्रम और कॉमनवेल्थ खेलों की गड़बड़ियों में शामिल किसी भी व्यक्ति को बख्शा नहीं जाएगा। कानून अपना काम करेगा। सार्वजनिक जीवन को साफ-सुथरा बनाने के लिए सरकार हर संभव प्रयास करेगी। अगर कोई घोटाला है तो इसकी जांच होनी चाहिए। मगर किसी के इरादे पर शक नहीं करना चाहिए। शक संसदीय प्रणाली के लिए अच्छा नहीं है। हम संसद को भरोसा दिलाते है कि किसी भी गलत काम करने वाले को बख्शा नहीं जाएगा। काले धन के प्रवाह को रोकने के लिए कानूनों में बदलाव की जरूरत है। काले धन की समस्या से निपटने के लिए राजनीतिक दलों को आम सहमति से कोई रास्ता निकालना चाहिए। विदेशों से काला धन वापस लाने के बारे में हमारी राय भी वही है, जो विपक्ष की है। महंगाई एक समस्या बन गई है। आर्थिक विकास की गति को बाधित किये बिना महंगाई को नियंत्रित किया जाएगा।

डॉ. मनमोहन सिंह, *प्रधानमंत्री*

◆ इस बार गेहूं, चावल और चीनी का अच्छा उत्पादन होने के आसार हैं, इसलिए सरकार को इनके निर्यात पर लगी पाबंदी खत्म करने पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। क्योंकि देश में इनका पर्याप्त स्टॉक है। इसी हफ्ते मंत्रियों की सामूहिक बैठक में पहले से स्वीकृत पांच लाख टन चीनी के निर्यात पर फैसला हो जाएगा। गेहूं, चावल और प्याज के निर्यात की अनुमति देने पर भी विचार होगा। पिछली बार गेहूं का उत्पादन 8.1 करोड़ टन हुआ। इस बार इसके 8.4 करोड़ टन के आसपास रहने की उम्मीद है। साथ ही गेहूं का पर्याप्त भंडार है। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में इनके रेट भी काफी ऊँचे चल रहे हैं। इसलिए इनके निर्यात से देश को फायदा होगा। निर्यात की अनुमति से पहले देश के आम उपभोक्ता का पूरा ध्यान रखा जाएगा। सरकार प्याज के निर्यात पर जनवरी में लगाई गई रोक भी हटाना चाहती है।

शरद पवार, *कृषि मंत्री*

www.terapanthinfo.com

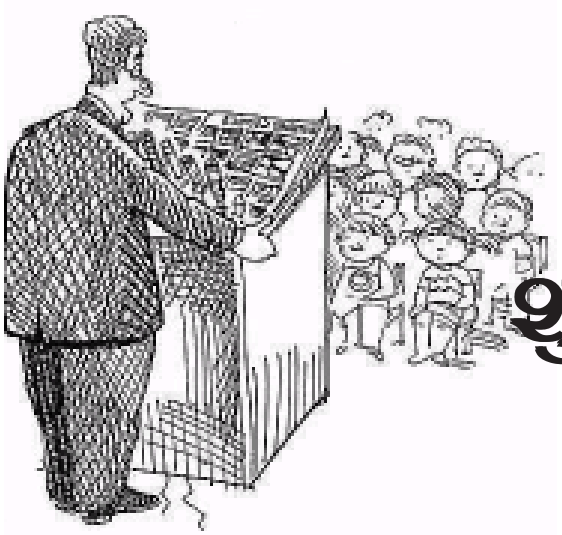

संस्मरण

राजनीति के शुद्धिकरण की प्रेरणा

(विधायकों द्वारा संकल्प)

मुनि राकेशकुमार

शिक्षा व्यापार, प्रशासन आदि की तरह राजनीति का क्षेत्र भी समाज और राष्ट्र का एक प्रमुख अंग है। अणुव्रत के मंच से उसके शुद्धिकरण और आध्यात्मीकरण की दिशा में समय-समय पर विविध प्रयत्न होते रहे हैं। राजनीति की शुद्धि-अशुद्धि के लिए जितने राजनेता जिम्मेवार हैं उतनी ही जनता भी जिम्मेवार है। जब तक दोनों पक्षों में जागरण और परिवर्तन नहीं होगा, इस दिशा में सफलता नहीं मिल सकती। जनता नेताओं पर दोषारोपण करती है, नेता जनता पर करते हैं, यह उचित नहीं है। सुधार और बदलाव के लिए स्वयं का आत्मनिरीक्षण और परिवर्तन करना जरूरी है। तभी इस दिशा में सफलता प्राप्त हो सकती है।

राजनीति में आज जो अशुद्धियों और विकृतियों का समावेश हुआ है, उसका मुख्य कारण चुनाव प्रणाली है। चुनाव प्रणाली में साधनों की शुद्धि पर विशेष ध्यान देना चाहिए, पर आज इस सत्य को उपेक्षित और विस्मृत-सा किया जा रहा है। चुनाव में सफल होने के लिए अधिकतर लोग हिंसा और भ्रष्टाचार का सहारा लेते हैं। संस्कृत भाषा का एक सुप्रसिद्ध श्लोक है

घटं भिन्द्यात् पटं छिन्द्यात्, कुर्याद् रासभरोहणम्।
येन केन प्रकारेण, प्रसिद्ध पुरुषो भवेत्।।

मनुष्य प्रसिद्धि पाना चाहता है, इसके लिए उसे चाहे तोड़-फोड़ करनी पड़े, गर्दभराज की सवारी करनी पड़े, उसे यह सब स्वीकार है। इस पद्य के चतुर्थ पद ''प्रसिद्ध पुरुषोभवेत्'' के स्थान पर आज के संदर्भ में यह कह सकते हैं ''सत्तासीनो जनो भवेत्''। मानव येन-केन प्रकारेण सत्तासीन होना चाहता है। आज सत्ता प्राप्ति के लिए जिस तरह के घिनोने हथकंडे अपनाए जाते हैं, उन्हें देखते हुए उपरोक्त चित्रण बिलकुल यथार्थ प्रतीत होता है।

लोकतंत्र में चुनाव लड़ना हर व्यक्ति का अधिकार होता है। पर उसके साथ उम्मीदवार को साधनों की पवित्रता का ध्यान रखना चाहिए तथा अपने लक्ष्य को शुद्ध और समीचीन बनाना चाहिए।

आदर्श राजनेता वह होता है जिसके मन में जन सेवा की भावना होती है। पर आज अधिकतर राजनेताओं के मानस में सत्ता-सुख भोगने का लक्ष्य रहता है। विधान सभा और लोकसभा के चुनावों में आर्थिक व्यय की सरकार द्वारा सीमा निर्धारित है। पर उसका निःसंकोच अतिक्रमण होता है। महात्मा गांधी ने स्वतंत्र भारत की जिस प्रतिमा का अपने मानस में रेखांकन किया था, वह आज बिलकुल धूमिल और मलीन हो रही है, आज की चुनाव व्यवस्था उसका प्रमुख कारण है। राजनेता चुनाव के समय उद्योगपतियों से आर्थिक सहयोग लेते हैं, उद्योगपति और व्यापारी अपने उद्योग-धन्धों के लिए नेताओं के माध्यम से अनुचित लाभ प्राप्त करते हैं। राष्ट्र के स्वर्णकल्प शरीर में आज जो भ्रष्टाचार का कैंसर तेजी से फैल रहा है, उसका मुख्य कारण भ्रष्ट चुनावी व्यवस्था है।

राजनीति के शुद्धिकरण और आध्यात्मीकरण तथा चुनाव प्रणाली में सुधार के लिए अणुव्रत के मंच से राजनेता और जनता दोनों को जागृत करने का प्रयास होता रहा है। इस संबंध में विधानसभा भवनों और संसद भवन में कई संगोष्ठियां आयोजित की गयी, जिनमें गुरुदेव श्री तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी का भी सान्निध्य प्राप्त हुआ है। इसी प्रकार की विधायकों की एक संगोष्ठी जयपुर में आयोजित हुई थी, जिसमें इस विषय पर महत्वपूर्ण परिचर्चा हुई। उसकी संक्षिप्त परिचर्चा यहां प्रस्तुत है

सन् 1990 को अणुव्रत वर्ष घोषित किया गया, उस वर्ष मेरा चातुर्मास जयपुर था। उस चातुर्मास में अणुव्रत की दृष्टि से अच्छा कार्य हुआ। साम्प्रदायिक सद्भावना की दृष्टि से दो विशाल सम्मेलन हुए, जिनमें विभिन्न संप्रदायों के धर्मगुरुओं ने अपने अनुयायियों के साथ बड़ी संख्या में भाग लिया। मुस्लिम संप्रदाय के भी सैकड़ों लोग उपस्थित थे। ग्रीन हाऊस का विशाल प्रांगण जनसमुदाय से भर गया था। अनेक विद्यालयों में अणुव्रत और जीवन विज्ञान की दृष्टि से प्रेरक कार्यक्रम रहे। जिनमें सैकड़ों-हजारों शिक्षकों और विद्यार्थियों ने अणुव्रत की प्रतिज्ञाएं ग्रहण कीं। राजस्थान विश्व विद्यालय छात्र संघ की तीन संगोष्ठियां हुई। छात्र संघ ने सामूहिक रूप से हिंसात्मक तोड़-फोड़ मूलक प्रवृत्तियों से दूर रहने का संकल्प ग्रहण किया। छात्र संघ के कई सदस्य गुरुदेव के दर्शन करने भी गए, वहां भी उन्होंने खड़े होकर अपने संकल्प दोहराये। छात्र संघ के माध्यम से विश्वविद्यालय में एक बड़ा कार्यक्रम हुआ जिसमें सैकड़ों छात्रों ने हिंसा और नशामुक्ति का संकल्प ग्रहण किया।

इसी क्रम में जुलाई के अंतिम सप्ताह में वहां विधायकों की संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता विधानसभा के तत्कालीन अध्यक्ष हरिशंकर भाभड़ा ने की। इस गोष्ठी में सभी राजनैतिक संगठनों के वरिष्ठ 25 सदस्य उपस्थित थे।

श्री हरिशंकर भाभड़ा ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा स्वस्थ राष्ट्र के लिए राजनीति का शुद्ध और स्वस्थ होना आवश्यक है। इसलिए अणुव्रत समिति द्वारा आयोजित इस संगोष्ठी को बहुत महत्वपूर्ण मानता हूं। हमारा देश आज स्वतंत्र है, हर व्यक्ति को विकास करने का अधिकार है। पर **नैतिक आदर्शों की प्रतिष्ठा के बिना स्वतंत्रता का सही उपयोग नहीं हो सकता। इसलिए अणुव्रत आंदोलन के कार्य को मैं बहुत महत्वपूर्ण मानता हूं। गुरुदेव तुलसी ने उद्घोष दिया है ''निज पर शासन, फिर अनुशासन'' हर विधायक को इस संदेश का अपने जीवन में अनुसरण करना चाहिए। श्री भाभाड़ा ने आगे कहा आज की राजनीति अनैतिकता का पर्यायवाची बन गई है। हम सभी को उसके सुधार और बदलाव का संकल्प करना चाहिए।**

मैंने अपने भाषण में कहा विधायक जनप्रतिनिधि होता है। उसके आचार और व्यवहार का समाज पर व्यापक प्रभाव होता है। राजनीतिक भ्रष्टाचार का एक प्रमुख कारण दोषपूर्ण चुनाव प्रणाली है। आप लोगों को ऐसी चुनाव पद्धति का सुझाव देना चाहिए, जिससे भ्रष्टाचार को बढ़ावा नहीं मिले।

मैंने आगे कहा विधायक और सांसद समाज के सेवक होते हैं। उनको अपनी जीवनशैली अध्यात्मप्रधान और संयमप्रधान बनानी चाहिए, तभी वे अपने दायित्व को सुचारु रूप से निभा सकते हैं। कार्यक्रम के अंतर्गत प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाए गये। कई विधायकों ने उसमें अच्छी रुचि ली।

ऊर्जा तथा उच्च शिक्षा मंत्री सुमित्रा सिंह ने कहा हमें अधिकार की अपेक्षा कर्त्तव्य को अधिक महत्त्व देना चाहिए। पार्टी के हितों से राष्ट्र के हित को उच्च स्थान देना चाहिए। पूर्व वित्तमंत्री श्री चंदनमल बैद ने कहा अणुव्रत आंदोलन आत्मानुशासन का संदेशवाहक है। समाज के हर वर्ग में संयम, अनुशासन और नैतिकता की भावना का विकास होना चाहिए। राजनीति की शुद्धि के लिए जनता और नेता दोनों के दृष्टिकोण में सुधार होना जरूरी है।

वन तथा पर्यावरण मंत्री मदन कौर ने कहा **दूसरों के हितों और अधिकारों का शोषण करना हिंसा और भ्रष्टाचार का रूप है। जब शोषक और शोषित का भेद समाप्त होगा तभी सच्चे अर्थ में नैतिकता का विकास होगा।**

गृहराज्य मंत्री श्री शांतिलाल चपलोत ने कहा **राज्य सत्ता पर धर्मसत्ता का अंकुश होना चाहिए। राजनीति में सुधार का कार्य विधायक लोग कर सकते हैं। उनका मनोबल मजबूत होना चाहिए।**

इस गोष्ठी में श्री गोपाल सिंह खंडेला, श्री कुंदनलाल मिगलानी, श्री चंपालाल बांठिया, श्रीमती तारा भंडारी, श्रीमती उजला अरोड़ा, श्री अमृतलाल परमार, श्री मिश्रीलाल चौधरी, श्री लक्ष्मीलाल मेहता आदि अनेक मंत्रियों व विधायकों ने भाग लिया और सभी ने राजनीति के शुद्धिकरण को आवश्यक बताया।

गोष्ठी के अंत में विधानसभा के अध्यक्ष श्री हरिशंकर भाभड़ा ने तीन लिखित प्रस्ताव रखे, जो सर्वसम्मति से पारित किए गये। इन प्रस्तावों में राजनीति के शुद्धिकरण तथा चुनाव प्रणाली में सुधार और परिष्कार पर बल दिया गया। सभी विधायकों ने खड़े होकर प्रस्तावों का अनुमोदन किया।

आरंभ में मुनि मानसकुमार ने अणुव्रत गीत प्रस्तुत किया। श्री दीपचंद डागा ने स्वागत भाषण किया। सोहनलाल गांधी ने आभार प्रदर्शन करते हुए अणुव्रत की रूपरेखा पर प्रकाश डाला। श्री मन्नालाल सुराणा आदि ने साहित्य भेंट कर अतिथियों का स्वागत किया। विधायकों की ऐसी संगोष्ठियां समय-समय पर अणुव्रत समिति के अंतर्गत राज्यों की अनेक राजधानियों में आयोजित हुईं। अनेक सांसद व विधायक अणुव्रत के साथ भावनात्मक रूप से जुड़े एवं उनका अणुव्रत के प्रसार में अच्छा सहयोग मिला।

सस्ते का स्वाद

प्रेरणा

पुरानी बात है। हर साल की तरह उस साल भी गाँव में ठठेरे आए और गलियों में घूम- घूम कर आवाजें लगाने लगे, ''टूटे-फूटे बर्तन सँवरवा लो, बर्तनों पर कलई करा लो।'' लोग भी इंतजार में थे कि ठठेरे आएँ और पीतल-ताँबे के टूटे-फूटे बर्तनों की मरम्मत हो। घरों से टूटे-फूटे बर्तन बाहर निकलने लगे और होने लगा मोल-भाव। जो काम पहले दस रुपये में होता था उस काम के लिए ये नये ठठेरे सिर्फ पाँच रुपये मांग रहे थे ये जानकर लोग खुश थे लेकिन फिर भी मोल-भाव हो रहा था। ठठेरों ने दस रुपये की बजाय पाँच रुपये माँगे तो भी किसी ने कहा कि तीन रुपये से ज्यादा न देंगे। फिर भी ठठेरों ने मना नहीं किया।

ठठेरे जो जितना कहता मान लेते और भाग-भाग कर बर्तन जमा करने लगे। देखते-देखते बर्तनों का अंबार लग गया। धीरे-धीरे सांझ घिर आई। ठठेरे अपना खाना बनाने का जुगाड़ करने में लग गए और लोगों से कहा कि कल सुबह भट्ठी चालू करके बर्तनों की मरम्मत का काम शुरू करेंगे। लोग बर्तन देकर अपने-अपने कामों में लग गए। जो लोग उस समय घरों में नहीं थे घर आने पर उन्होंने जब ये सुना कि इतने सस्ते में बर्तन मरम्मत हो रहे हैं तो वो भी अपने-अपने बर्तन लेकर ठठेरों के रुकने के स्थान पर पहुँचे। वहाँ जाकर देखा तो पाया कि न तो ठठेरे ही वहाँ मौजूद थे और न बर्तन ही रखे थे।

अब लोगों की समझ में आया कि वो इतने कम दामों में बर्तन सँवारने के लिए क्यों तैयार हो गए थे। लेकिन अब क्या हो सकता था? जहाँ भी हम लोभ या मुफ्त-लाभवृत्ति के वशीभूत हो जाते हैं वहाँ ऐसा ही होता है। ऐसा होना स्वाभाविक है। लेकिन सोचिए कि कोई किसी को मुफ्त में या बहुत कम कीमत में कोई चीज या सेवा कैसे उपलब्ध करा सकता है? क्या आप सामान्य अवस्था में ऐसा कर सकते हैं? नहीं न? तो कोई भी कैसे ऐसा कर सकता है और यदि कोई ऐसा करने का दिखावा करता है तो वह बहुत महँगा पड़ता है। अतः हानि और दुख से बचने के लिए लोभ तथा मुफ्त-लाभवृत्ति का त्याग करना ही श्रेयस्कर है।

● **सीताराम गुप्ता, *ए.डी.-106-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-110034***

घर पर बनाएं होली के प्राकृतिक रंग

नरेन्द्र देवांगन

होली रंगों का त्योहार है। जितने अधिक से अधिक रंग उतना ही आनंद। लेकिन इस आनंद को दोगुना भी किया जा सकता है। प्राकृतिक रंगों से खेलकर, पर्यावरण मित्र रंगों के उपयोग द्वारा भी होली खेली जा सकती है। यह रंग घर पर ही बनाना एकदम आसान भी है। इन प्राकृतिक रंगों के उपयोग से आपकी त्वचा को कोई खतरा नहीं होता और कई प्रकार की बीमारियों से भी बचाव होता है।

गहरा लाल रंग : लाल सुर्ख रंग उत्सव प्रियता, शक्ति और ऊर्जा का रंग है। होली के अवसर पर यह रंग सबसे अधिक उपयोग किया जाता है। होली में लाल रंग घर पर ही बनाने के लिए निम्न तरीका अपनाएं

● लाल गुलाब की पत्तियों को अखबार पर बिछाकर सूखा लें। उन सूखी पत्तियों को बारीक पीसकर लाल गुलाल के रूप में उपयोग कर सकते हैं जो कि खुशबूदार भी होगा।

● रक्त चंदन (बड़ी गुमची) का पाउडर भी गुलाल के रूप में उपयोग किया जा सकता है। यह चेहरे पर फेस पैक के रूप में भी उपयोग होता है।

● रक्त चंदन के दो चम्मच पाउडर को पांच लीटर पानी में उबालें और इस घोल को बीस लीटर पानी में बड़ा घोल बना लें। यह एक सुगंधित गाढ़ा लाल रंग होगा।

● लाल हिबिस्कस के फूलों को छाया में सूखाकर उसका पाउडर बना लें। यह भी लाल रंग के विकल्प के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

● लाल अनार के छिलकों को मजीठे के पेड़ की लकड़ी के साथ उबालकर भी सुंदर लाल रंग प्राप्त किया जा सकता है।

● टमाटर और गाजर के रस को पानी में मिलाकर भी होली खेली जा सकती है।

हरा रंग : प्रकृति में सबसे अधिक पाया जाने वाला रंग हरा है। यह रंग दया, पवित्रता और सद्भाव का प्रतीक है। यह एक चिकित्सकीय प्रभाव वाला रंग है तथा सामान्यतः प्राकृतिक और जड़ी-बूटी के रूप में पाया जाता है।

● गुलमोहर, पालक, धनिया, पुदिना आदि की पत्तियों को सूखाकर और पीसकर हरे गुलाल के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

● किसी भी आटे की बराबर मात्रा में हिना अथवा दूसरे हरे रंग मिलाकर भी हरे गुलाल के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

● एक लीटर पानी में दो चम्मच मेहंदी को घोलने पर भी हरे रंग का प्राकृतिक विकल्प तैयार किया जा सकता है।

नीला और गहरा बैंगनी : बैंगनी रंग हमारे तमाम पूर्वाग्रहों को तोड़ने वाला रंग माना जाता है। इसी प्रकार नीला रंग भी शांति और विश्वास के साथ ही नई रचनात्मक शुरूआत का प्रतीक माना जाता है।

● एक लीटर गरम पानी में चुकंदर को रातभर भिगोकर रखें और इस बैंगनी रंग को आवश्यकतानुसार गाढ़ा अथवा पतला किया जा सकता है।

● 15-20 प्याज के छिलकों को आधा लीटर पानी में उबालकर गुलाबी रंग प्राप्त किया जा सकता है।

● नीले गुलमोहर के फूलों को सूखाकर उसके पाउडर द्वारा तैयार घोल से भी अच्छा नीला रंग बनाया जा सकता है।

● नीले गुलमोहर की पत्तियों को सूखाकर बारीक पीसने पर नीला गुलाल भी बनाया जा सकता है।

भगवा रंग : केसरिया और नारंगी रंग खुशी, उत्सव और जोश तथा आशावाद का प्रतीक है।

● हल्दी पाउडर और चंदन पाउडर को मिलाकर हल्का नारंगी पेस्ट बनाया जा सकता है।

● परंपरागत रूप से जंगलों में पाए जाने वाले टेसू के फूलों को उबालकर भी नारंगी केसरिया रंग प्राप्त किया जाता है।

पीला रंग : पीला रंग ऊर्जा, बुद्धि और जागरूकता का परिचायक होता है इसलिए यह रंग बसंत का रंग भी कहलाता है।

● दो चम्मच हल्दी को चार चम्मच बेसन के साथ मिलाकर उसे पीला गुलाल के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

● अमलतास और गेंदे के फूलों की पत्तियों को सूखाकर उसका पेस्ट अथवा गीला रंग बनाया जा सकता है।

● दो चम्मच हल्दी पाउडर को दो लीटर पानी में उबालें, गाढ़ा पीला रंग बन जाएगा।

● दो लीटर पानी में 50 गेंदें के फूलों को उबालने पर पीला रंग प्राप्त होगा।

रासायनिक रंगों के दुष्प्रभाव : एक अध्ययन के अनुसार होली के रंगों को बनाने के लिए जिन जहरीले रसायनों का प्रयोग किया जाता है उनका स्वास्थ्य पर बहुत विपरीत प्रभाव पड़ता है। जैसे काला रंग बनाने के लिए लेड ऑक्साइड का प्रयोग किया जाता है, जिससे किडनी फेल होने का खतरा होता है। हरा रंग कॉपर सल्फेट से बनता है इसका कुप्रभाव सीधा आंखों पर पड़ता है और आंखों में एलर्जी, सूजन तथा व्यक्ति अस्थाई रूप से अंधा भी हो सकता है। लाल रंग मरक्यूरी सल्फाइट से बनता है। यह रसायन अत्यंत जहरीला होता है, इससे त्वचा का कैंसर हो सकता है।

सूखे रंगों से होली खेलने वाले प्रायः गुलाल का प्रयोग करते हैं। गुलाल कोलोरेंट से मिलकर बनता हैं। कोलोरेंट जहरीला होता है और उसका आधार सिलिका या एस्बेसेटॉस हो सकता है। इन दोनों से ही स्वास्थ्य समस्याएं खड़ी हो सकती है। कोलोरेंट में हैवी मैटल होता है जिसके कारण अस्थमा हो सकता है, त्वचा में खुजली की शिकायत हो सकती है तथा यह आंखों पर भी विपरीत प्रभाव डालता है।

नरेन्द्र फोटो कॉपी
पोस्ट - खरोरा 493225
जिला-रायपुर (छ.ग.)

मद्यपान के नुकसान

डॉ. दिलीप धींग

भारत जैसे उष्ण कटिबन्धीय तथा आध्यात्मिक देश में युवाओं में नशे की बढ़ती प्रवृत्ति किसी महामारी से कम नहीं है। यौवन का जो स्वर्णिम समय व्यक्ति-निर्माण से विश्व-निर्माण की अद्भुत क्षमता रखता है, वह मद्यपान और नशे से शीघ्र नष्ट हो जाता है। मदिरापान से तन, मन और मस्तिष्क पर अत्यन्त विपरीत असर होता है और मानव की अंतर्शक्ति क्षीण हो जाती है। युवावस्था ही क्या, नशा जीवन की हर अवस्था को अव्यवस्थित कर देता है। संसार के सभी धर्मशास्त्रों, महापुरुषों और विचारकों ने मद्यपान को हानिकारक बताया है।

जैनाचार्यों ने जिन सात व्यसनों को छोड़ने की सलाह दी है, उनमें एक मदिरापान भी है। मूल आगम दशवैकालिक सूत्र में मदिरापान का निषेध करते हुए कहा गया है कि वह लोलुपता, छल, कपट, झूठ, अपयश, अतृप्ति आदि दुर्गुणों को पैदा करने वाला और दोषों को बढ़ाने वाला है। आठवें अंग आगम अन्तकृतदशा के अनुसार शराब उच्छृंखलता पैदा करती है। शराब की वजह से वासुदेव श्रीकृष्ण की स्वर्णपुरी विशेषण युक्त सम्पन्न द्वारिका नगरी का भी विनाश हो गया था। मूलाचार में मद्य-मांस को महाविकृति कहा है तथा उन्हें काम, मद, हिंसा आदि का जनक बताया है। हेमचन्द्राचार्य के अनुसार शराब से विवेक, संयम, ज्ञान, सत्य, शौच, दया आदि गुण नष्ट हो जाते हैं। आचार्य हरिभद्र ने मद्यपान के निम्नांकित दुष्परिणाम बताये हैं

- शरीर विविध रोगों का आश्रयस्थल होना व शरीर का विद्रूप होना।
- परिवार व समाज से तिरस्कार होना।
- समय पर कार्य करने की क्षमता का नहीं रहना।
- अन्तर्मन में द्वेष पैदा होना।
- ज्ञान-तंतुओं का धुंधला होना व स्मृति क्षीण होना।
- बुद्धि का भ्रष्ट होना।
- शक्ति का न्यून होना।
- सज्जनों से सम्पर्क नहीं होना और दुर्जनों से सम्पर्क बढ़ना।
- वाणी में कठोरता।
- कुलहीनता व उत्तम संस्कारों का क्षरण।
- धर्म, अर्थ और काम का नाश होना।

व्यक्ति के पतन के लिए इन/इतने सारे दुर्गणों में से कुछ ही पर्याप्त हैं। ये ही दुर्गुण समाज और देश को भी शक्तिहीन और विपन्न बनाते हैं। जैन दिवाकर मुनि चौथमल ने कहा था 'जिन भले आदमियों को इहलोक और परलोक न बिगाड़ना हो, उन्हें मदिरापान से सदैव बहुत दूर ही रहना चाहिये। शराब सौभाग्य रूपी चन्द्रमा के लिए राहू के समान है। वह लक्ष्मी और सरस्वती नष्ट करने वाली है।

विविध धर्मों के अनुसार

मांसाहार और मद्यपान सहवर्ती बुराइयां हैं। अथर्ववेद में मांस भक्षण के साथ मद्यपान को भी बुरा बताया गया हैं गीता में कहा गया है कि जितने मादक पदार्थ हैं वे तमाम तमोगुणी हैं, अतः विवेक को नष्ट करने वाले हैं। ऐसे पदार्थों में शराब सिरमौर है। दयानन्द सरस्वती के अनुसार मदिरा मनुष्य को राक्षस बना देती है। सन्त तिरुवल्लुवर ने कहा था, 'जिन लोगों में शराब की लत पड़ जाती है, उनसे सुंदरी लज्जा अपना मुंह फेर लेती है अर्थात् वे निपट निर्लज्ज/बेहया हो जाते हैं।' बाइबिल में लिखा है 'शराबी का प्रभु के राज्य में प्रवेश निषिद्ध है।' कुरान के अनुसार ईमान वाले और ईमान को जानने वाले शराब को नापाक मानकर उसका त्याग करते हैं। चीनी संत लाओत्से के अनुसार 'पहले आदमी शराब को पीता है और फिर बाद में शराब उसका खून पीती है।' जापानी संत कागावा ने कहा कि 'कटी हुई पतंग, झूमता हुआ शराबी, गिरता हुआ तारा और मझधार में फंसा जहाज कहां जाकर टकराएगा कोई नहीं बता सकता?' आध्यात्मिक उन्नति में मद्य बाधक तत्व है, इसलिए सभी धर्मों में मद्यपान का निषेध किया गया है।

विचारकों द्वारा निन्दनीय

दुनियाभर के महापुरुषों और विचारकों ने शराब को निन्दनीय बताया है। जिन लोगों को मद्यपान का व्यसन लगा हुआ है, उनके शत्रु उनसे कभी नहीं डरते हैं। सुकरात ने कहा 'प्रचुर रेशमी वस्त्र, शराब और व्यभिचार की सुविधाएं उपलब्ध करवा देने से शीघ्र ही किसी भी कौम या मुल्क को हथियार उठाए बगैर खत्म किया जा सकता है।' वाल्तेयर ने मांसाहार और मद्यपान को संयुक्त बुराई बताते हुए लिखा 'जो मनुष्य पशुओं के मृत शरीर का भक्षण करता है और खूब मद्यपान करता है, उसका रक्त दूषित हो जाता है और वह उसे पागल कर देता है।' विश्व इतिहासकार टॉयन्बी का निष्कर्ष बहुत भयावह है 'अति प्राचीनकाल से अस्तित्व में आई कुल इक्कीस संस्कृतियों में से उन्नीस संस्कृतियों के पतन का कारण शराब है।' कश्मीरी कवयित्री लल्लादेवी के अनुसार 'घर को पत्थरों से भले ही भर दो; लेकिन शराबी को घर में किसी भी स्थिति में मत रखो।' शेक्सपीयर के अनुसार **'शराब का जाम चेतना, बुद्धि, प्राण और सम्पदा को हरण करने वाले जहर की अपेक्षा कहीं अधिक भयंकर है।' डॉ. विलियम के अनुसार 'उबलते शीशे के घोल और शराब में कोई अन्तर नहीं है, दोनों बराबर हैं।' अमरीकी न्यायाधीश एडमंड डिलैंटी के अनुसार 'नशाखोरी ने मुर्दों का शहर बसाने में; आग अकाल, महामारी और तलवार से भी बड़ी भूमिका निभायी है।'**

बीमारियों का द्वार

शराब से हृदय रोग, केंसर, अनिद्रा, अल्सर, मधुमेह, नपुंसकता, जोड़ों में दर्द, लकवा, हेपेटाइटिस, उन्माद, मिरगी, यकृत-विकृति, गुर्दों की कार्यशीलता में

कमी आदि कई भयंकर रोग होते हैं। शराब स्वास्थ्य और सुख की भयंकर शत्रु है। पागलखानों के एक सर्वेक्षण के अनुसार प्रति दस पागलों में से छह व्यक्ति बेहद शराब पीने के कारण पागल हुए थे। चरक संहिता के अनुसार 'शराब सभी कुकर्म कराने वाली है। वह देह का सर्वनाश करती है। शराबी पर कोई औषधि असर नहीं करती। जो बुद्धिमान व्यक्ति मद्यपान नहीं करते हैं, वे इससे होने वाली शारीरिक और मानसिक व्याधियों से मुक्त रहते हैं।' गांधीवादी चिकित्सक डॉ. सुशीला नैय्यर के अनुसार 'औषधिशास्त्र में एल्कोहल (शुद्ध मद्य) का कोई स्थान नहीं है।' अमेरिका की मेडिकल एसोसिएशन के अनुसार भी एल्कोहल में चिकित्सा का कोई गुण नहीं है। शराब से व्यक्ति ही नहीं, समाज भी बीमार होता है।

गरीबी का कारण

शराब से सरकारी खजाना भले ही भर जाए, जनता निर्धनता और बेरोजगारी के गर्त में चली जाती है। शराब की आय से एक ओर राजस्व-वृद्धि होती है, दूसरी ओर शराबजनित सामाजिक, शारीरिक, नैतिक और सांस्कृतिक विकृतियों को दूर करने या उनसे जूझने पर सरकार को जो खर्च करना पड़ता है, वह आय की तुलना में कई गुना अधिक होता है। पुलिस और चिकित्सा पर भी अनाप-शनाप खर्च होता है। डॉ. नेमीचंद जैन के अनुसार 'शराब एक ऐसा अभिशाप है; जो व्यक्ति, कुटुम्ब, समाज, संस्कृति, नैतिकता, अर्थतंत्र और राष्ट्रीय अनुशासन को नष्ट और क्षतिग्रस्त करता है।' काका कालेलकर ने कहा था 'शराब की प्याली में एक सम्पूर्ण परिवार की खाना-खराबी समायी होती है।' शराब सुख-समृद्धि की शत्रु है।

तनाव की जननी

कई लोग तनाव से मुक्ति पाने के लिए शराब का सेवन करने लगते हैं। लेकिन मद्य से तनाव कम होने की बजाय स्थायी रूप से बढ़ जाते हैं। मद्यपान से स्नायु तंत्र, बौद्धिक क्षमता और विचार शक्ति क्षीण हो जाती है। फलस्वरूप मनुष्य शारीरिक, बौद्धिक और मानसिक रूप से कमजोर पड़ने लगता है। हम एक उदाहरण लें। दूध से पात्र आधा भरा है। पात्र को अग्नि पर रखने से दूध उफनता है। लगता है पूरा भर गया। जब अग्नि पर से उतारा जाता है तो दूध पहले से कम हो जाता है। यही होता है नशे में। लगता है कि शक्ति आ गई, किन्तु नशा उतरने के बाद पता चलता है कि अपार शक्ति का व्यर्थ ही क्षय हो चुका है। इस प्रकार धीरे-धीरे व्यक्ति अवसाद, कुंठा, थकान, चिन्ता और तनाव से घिरता चला जाता है।

अपराधों की जननी

शराब मर्यादा, संयम, विवेक, शिष्टाचार, अनुशासन जैसे मानवोचित गुणों को नष्ट करके अराजकता को जन्म देती है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था, 'मैं मद्यपान को चोरी, यहां तक कि वेश्यावृत्ति से भी अधिक निन्दनीय मानता हूं; क्योंकि यह उक्त दोनों बुराइयों की जननी है। यदि मुझे एक घण्टे के लिए समूचे भारत का डिक्टेटर (अधिनायक) बना दिया जाए तो मैं पहला काम यह करूंगा कि शराब की तमाम दुकानों को बिना मुआवजा दिये बन्द करा दूं।' **व्याभिचार, महिलाओं पर अत्याचार, सड़क दुर्घटनाएं, पारिवारिक कलह आदि अनेक समस्याओं का कारण मद्यपान और नशा है। न्यायाधीश टेकचन्द के अनुसार 'शराब नैतिक, आत्मिक, आर्थिक, सामाजिक, सामरिक एवं सुरक्षा द्वारों को खुला छोड़ देती है।' कई सड़क दुर्घटनाओं में शराब भी निमित्त बनती है।** एक अनुमान के अनुसार भारत में प्रतिवर्ष 80000 से अधिक व्यक्ति सड़क-दुर्घटनाओं में काल के ग्रास बन जाते हैं तथा 12 लाख से अधिक घायल हो जाते हैं। इन सड़क दुर्घटनाओं की वजह से देश को 55000 करोड़ रुपयों की आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। अखबारों में आये दिन जहरीली शराब से मौतों की खबरें आती रहती हैं। मार्क ट्वैन ने लिखा 'दुनिया की तमाम सेनाओं ने मिलकर जितने आदमी और जितनी सम्पत्ति नष्ट नहीं की है, उससे कई गुना शराब की लत ने की है।'

नशाखोरी के कारण

स्पष्ट है कि नशा विष से भी अधिक अनिष्टकारी है। नशा हर देश और समाज के लिए हानिकारक है। इस कुटेव के लिए निम्न व्यक्ति और घटक दोषी हैं

- वे माता-पिता जो अपनी संतान को जीवन-निर्माणकारी सुसंस्कार नहीं देते।
- वे गुरु/अध्यापक जो अपने शिष्यों/विद्यार्थियों को पाठ्यक्रमेत्तर सद्शिक्षाएं नहीं देते।
- स्कूल-कॉलेजों की बिगड़ैल मित्र-मंडली तथा अन्य कुमित्र।
- सिनेमा, मीडिया और विज्ञापनों के नशे को प्रोत्साहित करने वाले दृश्य।
- वे समाज जिनमें मदिरा को किसी-न-किसी रूप में सामाजिक मान्यता प्राप्त है।
- वे ख्यातिप्राप्त और धनाढ्य लोग जो नशे से परहेज नहीं करते और युवा मन को दुष्प्रेरित करते हैं।
- नशे को अंजाम देकर किये जाने वाले व्यावसायिक सौदे।
- पारिवारिक कलह, बेरोजगारी या किसी असफलता से उपजी हताशा।

नशे को लेकर समाज और युवाओं में फैली भ्रान्तियों का निराकरण अत्यावश्यक है। युवाओं को किसी भी प्रकार का कोई भी कारण या निमित्त उपस्थित होने पर भी नशे की ओर कभी भी प्रवृत्त नहीं होना चाहिये। यदि व्यक्ति सुसंस्कारित, उच्च-आचरण और दृढ़ मनोबल वाला हो तो किसी भी परिस्थिति में वह नहीं भटकेगा। किसी भी समाज या राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति के लिए उसके यौवन को बचाना अत्यावश्यक है। यह जानकर कि 'शराब खराब है' और 'नशा नाश का द्वार है', मद्यपान का परित्याग कर देना चाहिये। जिन समाजों में मद्य का निषेध हैं, वे समाज उन्नत, सुखी और संतुष्ट है।

53, डोरे नगर,
उदयपुर-313002 (राजस्थान)

मूल्यों के विकास में शिक्षा की भूमिका

प्रो. चाँदमल कर्णावट

आज सामान्य व्यक्ति से लेकर उच्च शिक्षित वर्ग के समक्ष एक विवाद उपस्थित है कि व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में समस्याओं का कारण क्या है? कई व्यक्ति इसके लिए कुछ व्यक्तियों को उत्तरदायी मानते हैं तो अन्य व्यक्ति इसके लिए राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक कारकों को कारणभूत करार देते हैं। अंततोगत्वा एक विचार पर सबकी सहमति दृष्टिगोचर होती है कि सत्य, सहयोग, सहनशीलता जैसे महान् मूल्यों का ह्रास ही इन समस्याओं का मूल कारण है। जितनी-जितनी जीवन में इन मूल्यों की हानि होती जा रही है, उतनी ही उतनी समस्याएं भी बढ़ती जा रही हैं।

भारतीय समाज और विश्व समाज आज नकारात्मक एवं विनाशकारी मूल्यों का सामना कर रहा है। इन हानिकारक मूल्यों से ग्रस्त समाज दीर्घकाल से ऐसे सहकार और सहयोग की प्रतीक्षा कर रहा है, जो शांति और सुख के मार्ग पर अग्रसर कर सके प्रेम और निर्माण की राह पर आगे बढ़ सके। वस्तुतः यह सहयोग का हाथ किसी अन्य का न होकर हमारा अपना ही सहयोग का हाथ होगा, जो समाज का सुंदर नवनिर्माण कर सकेगा। निःसंदेह यह सहयोग मूल्यों की शिक्षा का होगा जो समाज में बुनियादी और व्यापक परिवर्तन लाने में समर्थ है।

मूल्यों की शिक्षा पर विस्तृत चर्चा करने से पूर्व हमें यह जानना होगा कि मूल्या क्या हैं? शिक्षा से उनका क्या संबंध है? वे जीवन में कैसे स्थान पाते हैं और उन्हें कैसे जीवन में विकसित किया जा सकता है? गहराई से विचार करने पर ज्ञात होगा कि शिक्षा के उद्देश्य और लक्ष्य कुछ नहीं जीवन के मूल्य ही हैं। मिल, हॉर्न और नन जैसे शिक्षाविदों द्वरा की गयी शिक्षा की परिभाषाएं इसका प्रमाण हैं। जॉन स्टुअर्ट मिल ने संस्कृति के संप्रेषण को, हॉर्न ने समायोजन की योग्यता को तथा नन ने मानव कल्याण में योगदान को ही शिक्षा माना है। **निर्विवाद रूप से शिक्षा का प्रयोजन ही मानव में नैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का विकास करना है जो शिक्षा सूचनाओं के प्रसारण एवं क्रियाओं के प्रावधान से कहीं बढ़कर है। मूल्यों की शिक्षा वास्तव में कुछ होने और कुछ बनने की शिक्षा है।**

गेजर के अनुसार 'मूल्य प्रतिस्पर्द्धात्मक अनेकानेक मानव रुचियों से चयनित व्यवहार हैं। ये हमारे कार्यों को अग्रसर करने और समाज में हमारे व्यवहार की सफलता से जुड़े हुए हैं। **समस्याओं का समाधान करने वाले विचार और व्यवहार ही व्यक्तियों के जीवन में मूल्यों का रूप ग्रहण करते हैं। मूल्य किसी वस्तु या क्रिया की गुणवत्ता के द्योतक हैं। ये हमारे संवेगों से जुड़े हैं। संवेगों को प्रेरित करने वाले विचारों को ग्रहण करके ही हम उन मूल्यों की ओर प्रवृत्त होते हैं।** ब्राउडी ने अपनी पुस्तक 'बिल्डिंग फिलॉसफी ऑफ एजूकेशन, मूल्य विकास के दो सिद्धांतों की विवेचना की है। उनमें से संवेग सिद्धांतवाद एक है। ज्यों ही कोई क्रिया या विचार हमारे संवेगों को जागृत करने लगता है, तदनुसार ही मूल्य हमारे भीतर उभरना शुरू हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त अनुभव के स्तर पर अमूर्त मूल्य, मूर्तरूप लेने लगते हैं। मूल्यों के दो घटक हैं सामाजिक वांछनीयता और स्वीकार्यता, जो मानव और समाज दोनों के कल्याण हेतु कार्य करते हैं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

अब हम मूल्यों की शिक्षा के संबंध में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को देखें, जहां दार्शनिकों एवं मनोवैज्ञानिकों ने अपने विभिन्न विचार एवं दृष्टिकोण, मूल्यों की शिक्षा के विषय में व्यक्त किये हैं। सुकरात संवाद के द्वारा जनमानस में संदेह को उभार कर मूल्यों को प्रेरित व अभिमुख करते थे। हीगल अन्य विषयों के साथ नैतिक शिक्षा के द्वारा, आदर्शों की प्रस्तुति को महत्त्व देते थे। कान्ट ने मानव को साध्य मानकर उसकी इच्छाओं को महत्ता दी। डीवी ने न्यायिक समाज में न्यायिक विद्यालयों की स्थापना पर बल दिया। इसके अतिरिक्त गांधी ने मूल्यों की शिक्षा के लिए अनुभवों और क्रियाओं को महत्व प्रदान किया। टैगोर ने अकृत्रिम या स्वाभाविक संस्थितियों में सांस्कृतिक एवं सामाजिक क्रियाओं के आयोजन और अभ्यास का क्रियान्वयन किया। अरविन्द ने 'क्या' के स्थान पर 'क्यों' के प्रति चेतना जगाकर निहित मूल्यों को उद्घाटित करने का विचार दिया। ब्राउडी ने मूल्य विकास के लिए प्रयोगशीलता पर विशेष बल दिया।

मूल्यों का विकास

पियाजे जैसे मनोवैज्ञानिक ने नैतिक मूल्यों को सामाजिक मूल्यों के सम्मान के रूप में स्वीकार किया है। हमारे नैतिक निर्णयों पर ही हमारे नैतिक व्यवहार निर्भर करते हैं। इस दृष्टि से मूल्यों का ज्ञान और उनकी जानकारी बहुत आवश्यक है। पियाजे के अनुसार चेतना नैतिक नियमों के अभ्यंतरीकरण का प्रतिनिधित्व करती है। नैतिक नियमों का जीवन में समावेश ही चेतनारूप है।

कोल्हबर्ग ने मूल्य विकास की जिन अवस्थाओं का उल्लेख किया है वे हैं

1. किसी समस्या या कठिन स्थिति को देखना।
2. इस स्थिति के बारे में विचार-चर्चा।
3. कठिन स्थिति या समस्या के निवारण हेतु किसी क्रिया की अभिशंसा।
4. अभिशांसित क्रिया की क्रियान्विति या प्रयोग।
5. निष्कर्षों की स्वीकृति।

उदाहरणार्थ दो बालकों के अलग-अलग व्यवहार घर से बिना पूछे वस्तुओं को ले जाने के बारे में यह एक कठिन स्थिति या समस्या है। एक बालक अप्रामाणिकता अपनाता है, जबकि दूसरा नहीं। इस घटना को देखकर उस पर विचार चर्चा किया जाना। अप्रामाणिक व्यवहार वाले बालक के सुधार हेतु किसी क्रिया की अभिशंसा करना। अंत में उस क्रिया को कार्यान्वित करके निष्कर्ष निकालना एवं ऐसी ही अन्य संस्थितियों में निष्कर्ष को क्रियान्वित करना।

साइमन्स द्वारा अभिशांसित मूल्य विकास की अवस्थाएं हैं

1. देखी या सुनी हुई घटना का विश्लेषण।
2. अन्य अनुभवों के साथ (संबंधित व्यक्ति के) इसका संबंध स्थापित करने पर चिंतन।
3. अंत में अच्छे या बुरे का मूल्यांकन।

यहां पर 'क्या' का मूल्यांकन करने की अपेक्षा 'कैसे' के मूल्यांकन करने पर अधिक बल दिया गया है।

कोल्हबर्ग की 'रोल प्ले विधि' भी मूल्य विकास की दिशा में एक सबल कदम है। यह एक विशेष योग्यता-अर्जन की क्रिया है जिसमें भिन्न-भिन्न संस्थितियों में विभिन्न भूमिकाओं का निर्वाह करते हुए विचारों-व्यवहारों का संप्रेषण और अंतः क्रिया में संलग्न होना होता है। 'रोल प्ले' द्वारा किसी विशेष भूमिका के निर्वाह की दृष्टि से शिक्षार्थी वस्तुओं या समस्यागत व्यवहारों की विवेचना करते हुए कुछ मूल्यों तक पहुंचते हैं। ये मूल्य उनके जीवन को प्रभावित करते हैं और प्रेरित करते हैं।

मूल्य स्पष्टीकरण की व्यूह रचना को मूल्य विकास की विधि में शिक्षार्थियों को कुछ संस्थितियां दी जाती हैं। जिन पर प्रश्नों के द्वारा उन्हें उन संस्थितियों पर चर्चा करने और स्वयं ही सही व्यवहार के निर्णय करने और कारणों पर विचार के अवसर दिये जाते हैं। किसी घटना में सही गलत पर विचार-विमर्श के प्रश्नों के माध्यम से करते हुए छात्र स्वयं सही गलत का निर्णय करते हैं। ये विचार उन्हें सही की प्रेरणा देते हैं, जो उनके जीवन में सही मूल्यों की स्थापना में सहयोगी बनती हैं।

अन्य पाठ्यक्रम और पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएं तो इन मूल्यों के विकास में सहयोगी हैं ही। सामूहिक खेल, समूह गीत, अभिनय, छात्र संसद जैसी क्रियाओं का सम्यग् आयोजन शिक्षार्थियों में अनुशासन, सहयोग, सहनशीलता, साहस, सच्चाई जैसे मूल्यों का विकास कर सकता है। चर्चाओं का आयोजन भी इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है। संचार माध्यम टी.वी., रेडियो का समुचित प्रयोग भी मूल्य शिक्षा का रोचक और उपयुक्त साधन हो सकता है।

शिक्षकों का प्रशिक्षण इस दृष्टि से आवश्यक है। उन्हें विकास के उपागमों, सामाजिक अधिगम के सिद्धांतों तथा स्वयं अधिगम के बारे में पर्याप्त जानकारी देकर प्रशिक्षित किया जाना अपेक्षित है।

मूल्य विकास की शिक्षा पर कार्य करते हुए निम्नांकित सिद्धांतों पर ध्यान देना नितांत आवश्यक है

- समुचित संवेगों को जागृत कर और अभिवृत्ति में परिवर्तन लाकर मूल्यों का वपन किया जा सकता है।
- समूह क्रिया और सामाजिक अंतःक्रिया जितनी अधिक होगी, मूल्य विकास की गति भी उतनी ही तीव्र होगी।
- कोई भी शिक्षार्थी घर-परिवार से मूल्य हीन नहीं आता, अतः घर परिवार के मूल्यों पर ही अन्य मूल्यों का विकास किया जाये।
- शिक्षार्थी की विकास अवस्थाएं मूल्य विकास की नैसर्गिक अवस्थाएं होती हैं।
- मूल्य विकास समग्रता में घटित होता है। अतः घर विद्यालय समाज में सर्वत्र शैक्ष्य मूल्य का परिवेश होना वांछनीय है।
- मूल्य-विकास के विषय में अभिभावकों माता-पिताओं का प्रशिक्षण भी बहुत आवश्यक है।

प्लॉट नं. 35, अहिंसापुरी
फतहपुरा, उदयपुर (राज.) 313001

जिस शिक्षा से कर्त्तव्यनिष्ठा और नैतिकता फलित न हो,
वह शिक्षा अधूरी है।

● आचार्य तुलसी ●

संप्रसारक :

एम.जी. सरावगी फाउंडेशन

41/1-सी, झावूतल्ला रोड, बालीगंज-**कोलकाता**-700019

● दूरभाष : 22809695

मिष्ट वचन

डॉ. शुद्धात्मप्रकाश जैन

सत्य ही सदाचार का मूल है। सत्य को तप के समान उत्तम बताया गया है और असत्य को महापाप बताया गया है। श्री शुभचन्द्राचार्य ने अपने ग्रंथ ज्ञानार्णव में दूसरों की निन्दा करने वालों के मुख को नगर में बहने वाली नाली के सदृश कहा तथा असत्य बोलने वाले को सर्पिणी बिल कहा है जो कि मुख रूपी बिल से निकलकर कानों में प्रवेश कर भयानक संताप को जन्म देती है।

टॉमस वेण्टवर्थ हिगिन्सन ने कहा है "मुझे किसी अंधेरी कोठरी में बन्द कर दो, तो भी मैं उनकी आवाज से बतला सकता हूं कि उनमें से कौन सज्जन और कौन दुर्जन है।

परनिन्दा को महापाप बताते हुए हरिवंशपुराणा में कहा गया है कि यदि कोई व्यक्ति किसी के विद्यमान दोषों को भी कहता है तो उसे प्रबल पाप का बंध होता है, तब फिर जो व्यक्ति किसी के अविद्यमान दोषों को कहता फिरता है उसे तो निश्चित रूप से नरक ले जाने वाला महापाप लगेगा ही। इसमें क्या संदेह है?

मिष्ट वचनों के संदर्भ में हमें कौए और कोयल का उदाहरण जरूर स्मरण में रखना चाहिए। अर्थात् कौआ और कोयल दोनों ही काले होते हैं। रंग की दृष्टि से दोनों में कोई अंतर नहीं है, लेकिन वसंत ऋतु आने पर कौए और कोयल में अंतर सहज ही पता चल जाता है।

कीरो हस्तरेखा नामक पुस्तक में लिखा है कि एक व्यक्ति के मामले में जिसे लेकर पेरिस में प्रयोग किया गया। वह जन्मांध था, लेकिन प्रकृति ने आंखों के बदले उसे अत्यधिक श्रवणशक्ति प्रदान कर दी थी। प्रयोग करने पर पाया गया कि इन कोषाणुओं के कम्पनों को सुनकर वह किसी भी व्यक्ति के लिंग, आयु, स्वभाव, स्वास्थ्य, यहां तक कि रोग अथवा मृत्यु से उसकी दूरी तक के बारे में बता सकता था। इस उदाहरण से यह सहज सिद्ध होता है कि किसी के वचनों में कितनी शक्ति होती है और उसकी वाणी उसके बारे में कितना कुछ बता सकती है। अतः वचनों को बोलने से पहले तोल लेना चाहिए।

मिष्ट वचनों को बोलने की प्रेरणा देते हुए महाकवि भूधरदास ने अपने ग्रंथ में लिखा है **हे मनुष्य! तुम क्यों अप्रिय वचन बोलकर अपना धर्म खोते हो। यदि तुम कोमल वचन बोलोगे तो इससे तुम्हारी जिह्वा घिसेगी नहीं और न ही तुम्हें दरिद्रता आयेगी। साथ ही सभी को तुम्हारी वाणी प्रिय लगेगी।**

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा है कि सत्य ही सदाचार का मूल है और व्यक्ति सदाचार के द्वारा उन्नति के शिखर पर पहुंच सकता है। इस प्रकार मिष्ट वचनों के साथ-साथ सत्य वचनों को भी जीवन में अवश्य अपनाना चाहिए।

लेकिन ऐसा सत्य जो लौकिक रीति से विपरीत हो तो उसे बिल्कुल भी नहीं बोलना चाहिए। अर्थात् ऐसा सत्य जो लोक व्यवहार के प्रतिकूल है उसे हरगिज नहीं बोलना चाहिए। जैसे किसी अंधे को अंधा कहना उचित नहीं है। **असत्य वचन बोलना ही झूठ नहीं है, अपितु कुटिल, अप्रिय, अहितकारी वचन बोलना भी झूठ है।**

एक ऐसा सत्य जो किसी को हानि पहुंचाता हो, किसी को जान का खतरा उत्पन्न करता हो उसे भी शीघ्र त्याग दो। जैसे एक महात्मा की कुटिया में हांफती, घबरायी हुई गर्भवती हिरणी आ छिपी। उसके पीछे-पीछे एक शिकारी कुटिया में चला आया। उसने महात्मा से हिरणी के बारे में पूछा। धर्मसंकट में फंसे महात्मा ने सत्य का साथ नहीं छोड़ा और छिपी हुई हिरणी की ओर इशारा कर दिया। शिकारी ने हिरणी और उसके पेट में पल रहे बच्चे का तुरंत वध कर दिया।

भले ही आज मोबाइल के युग में सत्य बोलना कठिन हो गया, लेकिन ऐसा नहीं है कि सत्य से बचा ही नहीं जा सके। एक बार पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपने एक भाषण में कहा "मैंने डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को जीवन में कभी असत्य बोलते नहीं देखा, न सुना।" अर्थात् राजनीति में रहकर भी असत्य से बचा जा सकता है।

अधिक एवं अनावश्यक बोलना भी अहितकारी होता है। इस सम्बन्ध में एक कथा आती है ग्रीष्म ऋतु में एक बार तालाब का जल सूख जाने पर सभी जलचर प्राणी अन्यत्र स्थान पर जा रहे थे। एक बूढ़ा कछुआ रो रहा था और सभी से सहायता मांग रहा था। दो हंसों ने उसे अन्यत्र ले जाने हेतु आकाश मार्ग से ले जाना निश्चित किया और कछुए को पूर्व निर्देश दिये कि तुम्हें अपना मुंह बंद रखना है। दोनों हंसों ने एक लकड़ी के दोनों सिरों को मुंह से पकड़ा और कछुए ने लकड़ी को बीच से पकड़ा। रास्ते में खेलते हुए बच्चों ने यह देखा तो शोर करने लगे। उन्हें देखकर कछुआ बोल पड़ा और लकड़ी उसकी पकड़ से छूट गई। वह धड़ाम से नीचे गिरा और मर गया। अतः **अधिक वाचाल होना भी ठीक नहीं है। कम से कम बोलो। जरूरत होने पर ही बोलो। अनावश्यक बोलना झगड़े की उत्पत्ति का कारण है। ईश्वर ने हमें दो कान और एक मुंह दिया है, इसका सीधा सा मतलब है कि ज्यादा सुनो और कम बोलो।**

आदिनाथ विद्या निकेतन
पानी की टंकी के पास,
ग्राम-बेसवां, जिला-अलीगढ़ (उ.प्र.)

प्रस्थित हुआ अहिंसा रथ

मुनि सुखलाल

अहिंसा एक सनातन सत्य है। हमारी दुनिया अहिंसा के आधार स्तंभ पर ही टिकी हुई है। हिंसक प्राणी जातियां धीरे-धीरे काफी नष्ट हो गयी है। जो शेष हैं उनका भविष्य भी बहुत लम्बा नहीं है। मनुष्य ने अपनी एक जीवन परम्परा बनायी है। उसका रहस्य यही है कि उसने अहिंसा को समझा है। यद्यपि समय-समय पर ऐसे अनेक क्रूर व्यक्ति भी अवतरित होते रहे हैं, जिन्होंने खून की नदियां बहाई, निरपराध लोगों को मौत के घाट उतारा। फिर भी यदि मनुष्य जाति आज अस्तित्व में है तो उसका यही मुख्य कारण है कि कुछ लोग अहिंसा की रोशनी हाथ में थाम कर हिंसा के गहन तिमिर में भी रास्ता दिखाते रहे हैं।

हमारे युग में महात्मा गांधी एक ऐसे व्यक्ति हुए, जिन्होंने अहिंसा के आलोक से हमारे युग को आलोकित किया। सचमुच ऐसे पुरुष हजारों वर्षों में कभी-कभी आते हैं। हमारे इस युग में आचार्य तुलसी भी एक ऐसे दिव्य पुरुष हुए हैं जिन्होंने अणुव्रत के रूप में अहिंसा का जीवंत संदेश दिया। अहिंसा का अपना एक आध्यात्मिक मूल्य तो है ही पर परस्पर उपग्रह के रूप में उसका एक नैतिक मूल्य भी है। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत को नैतिकता का एक नया पर्याय बना दिया। अणुव्रत ने पूरे देश में पारस्परिक सौहार्द का एक अविराम कदम उठाया। भारत की आजादी के बाद अणुव्रत ही एक ऐसा आध्यात्मिक नैतिक आंदोलन था, जिसने पूरे देश में अपनी पहचान बनाई।

आचार्य तुलसी के बाद उनके उतराधिकारी आचार्य महाप्रज्ञ ने अहिंसा यात्रा के रूप में अणुव्रत मिशन को पुनर्नवा बनाया। सात वर्षों की अहिंसा यात्रा से एक उत्साहपूर्ण वातावरण बना। देश में भी सौहार्द का एक अनुपम वातावरण बना। आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जैन परम्परा के तेरापंथ सम्प्रदाय के मुखिया थे। पर उन्होंने अपने उर्जस्वल नेतृत्व से तेरापंथ को एक व्यापक रंग-रूप प्रदान किया। यही कारण है कि उनकी अनुपस्थिति में आज उनकी परम्परा के संवाहक आचार्य श्री महाश्रमण अहिंसा यात्रा के सूत्र को जन-जीवन के साथ जोड़ने का एक अमूल्य प्रयास कर रहे हैं। आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने अहिंसा यात्रा को केवल वैचारिक आधार ही प्रदान नहीं किया, अपितु उसे अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में प्रायोगिक स्वरूप भी प्रदान किया। यही कारण है कि आज देश में अहिंसा प्रशिक्षण के 37 केन्द्र तथा 450 उपकेन्द्र कार्यरत हैं। इन केन्द्रों पर मनुष्य की भावधारा को परिवर्तित करने का प्रयास किया जा रहा है। भाव-धारा ही हिंसा और अहिंसा की पृष्ठ भूमि बनती है। अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्रों पर भाव धारा के परिवर्तन के साथ विचार शुद्धि तथा अहिंसक जीवन शैली का भी प्रशिक्षण दिया जाता है।

यह अनुभव किया गया कि अहिंसा के सारे प्रयोग तब तक अप्रभावी रहते हैं जब तक आदमी के पेट की आग नहीं बुझती। पेट की आग मनुष्य की मस्तिष्क को भी प्रभावित करती है। अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्रों में भूख की समस्या को समाहित करने का भी प्रयोग किया जा रहा है। बहुत बार अन्न-दान के रूप में भूख की समस्या को सुलझाने को आध्यात्मिक रूप दे दिया जाता है पर वह प्रयास अहिंसा की प्रतिष्ठा नहीं कर सकता। अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्रों में भूख की समस्या को मिटाने के लिए अन्न कूट नहीं खोले जाते। अपितु रोजगार का ऐसा प्रशिक्षण दिया जाता है, जिससे आदमी भिखारी नहीं बनकर आत्म-निर्भर बनता है वह केवल अपना ही पेट नहीं भरता, अपितु अपने पूरे परिवार का परिपोषक भी बन जाता है। इन केन्द्रों पर ऐसे लोगों ने भी रोजगार का प्रशिक्षण प्राप्त किया है जो भूख की व्याकुलता से पीड़ित होकर आत्महत्या करने के लिए उद्यत हो गए थे। वे अपने परिवार के लिए भी भारभूत हो गए थे। पर उन्होंने अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्रों पर भावात्मक रोजगार का प्रशिक्षण प्राप्त कर न केवल अपने आपको भी स्वनिर्भर बना लिया अपितु अपने पूरे परिवार का कायाकल्प कर दिया। इस तरह से अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र अहिंसा का मुखर शंखनाद कर रहे हैं।

आचार्य श्री महाश्रमण ने 14 फरवरी 2011 को राजलदेसर से अहिंसा के अभियान की वल्गा अपने हाथों में थाम ली और अहिंसा का रथ पुनः गतिमान हो गया है। अहिंसा यात्रा के इस प्रथम पड़ाव के अवसर पर लूणासर में आस-पास की छह अणुव्रत समितियों के प्रतिनिधियों ने आचार्यश्री के सान्निध्य में उपस्थित होकर न केवल अहिंसा का व्रत ही ग्रहण किया, अपितु अपने-अपने गांव में रोजगार प्रशिक्षण के लिए व्यवस्था का संकल्प भी स्वीकार किया है।

हिंसा की उत्तेजना को उग्र करने में अपराधों की भी सशक्त भूमिका रहती है। अधिकांश अपराधों के मूल में नशा एक प्राणघातक रोग है। अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्रों के माध्यम से विद्यार्थियों को नशामुक्त बनाने के प्रयास किये जा रहे हैं। पूरे भारत से सैकड़ों शिक्षक इस अभियान में सहभागिता निभाने के लिए आगे आ रहे हैं। निश्चय ही आज नई पीढ़ी नशे के चंगुल में फंसकर गलत रास्ते अपना रहे हैं। उन्हें नव चेतना देने के लिए यह आवश्यक है कि नशामुक्ति अभियान को पूरी जागरूकता और दृढ़निष्ठा के साथ आगे बढ़ाया जाय। अहिंसा यात्रा का ये सुनिश्चित कदम नियोजित रूप में आगे बढ़ रहे हैं। अणुव्रत आंदोलन एवं अन्य अहिंसक शक्तियां इस अभियान को आगे बढ़ाने में सक्रिय हो रही हैं।

कानून का डर किसे है

आशीष वशिष्ठ

कानून का राज, कानून अंधा होता है, कानून के हाथ बड़े लंबे होते हैं आदि ये वो वाक्य हैं जिन्हें हम बरसों-बरस से सुनते-पढ़ते चले आ रहे हैं। लेकिन अगर वर्तमान हालातों पर नजर डाले तो ऐसा प्रतीत नहीं होता है कि देश में कानून का राज है। असलियत तो यह है कि कानून को तोड़ना और कानून का उल्लंघन करने का चलन देश में आम होता जा रहा है।

हां जो दबे-कुचले हैं, जिनके सिर पर किसी प्रभावशाली का हाथ नहीं है या फिर जो स्वयं ही एक सभ्य नागरिक की भांति जीवन यापन कर रहा है आदि को छोड़कर अधिकतर जनता कानून का मजाक ही समझती है और कानून, नियम-कायदों को फुटबाल की भांति इधर-उधर उछालने का मजा आए दिन लूटता है। बड़े लोगों की जागीर है कानून और नियम कायदे तो उनकी जेब में रहते हैं। वो जब चाहे, जैसे चाहे कानून को लिखते और मिटाते रहते हैं उन्हें रोकने-टोकने वाला कोई नहीं है। कानून की देवी उनके चरणों की दासी है और कानून के रखवाले उनकी चौखट के बाहर पहरेदार की भांति मुस्तैद खड़े रहते हैं। ऐसा मत समझिएगा कि ये किसी हिन्दी फिल्म के डायलाग हैं बल्कि ये वो तल्ख हकीकत है जो देश का हर छोटा-बड़ा आदमी बखूबी जानता है क्योंकि इन हालातों से सभी का कभी न कभी न सामना हो ही जाता है। न्याय के मंदिर और उसमें बैठने वाले पुजारी दोनों भी बिकने लगे हैं। ऐसा नहीं है कि न्याय के मंदिर और सारी कानूनी प्रक्रिया ही बिकाऊ हो चली है लेकिन बेईमानों की भीड़ में ईमानदार इतने कम संख्या में बचे हैं कि उनका होना या न होना कोई महत्व नहीं रखता है।

आजादी के उपरांत देश में जब प्रथम स्वदेशी सरकार का गठन हुआ तो अंग्रेजी शासन काल से चली आ रही न्याय प्रणाली और व्यवस्था में बिना किसी छेड़-छाड़ के पूर्व की भांति जारी रखा गया। अंग्रेजी शासन काल में जो भी कानून बनाये गये थे उनमें थोड़ा बहुत परिवर्तन तो बाद में किया गया और जरूरत के हिसाब से नये कानूनों का निर्माण भी किया गया लेकिन कानून और शासन की मूल भावना और आत्मा अंग्रेजी शासन की मनोवृत्ति और कार्यप्रणाली से ही ओत-प्रोत रही। पहले से चले आ रहे कानूनों में परिवर्तन और नये कानूनों का निर्माण देश के कर्णधारों ने अपनी सुविधा और सहूलियत के हिसाब से किया। न्यायपालिका पर विधायिका इस कदर हावी हो गयी की न्यायपालिका को कदम-कदम पर विधायिका का मुंह और और मिजाज देखना पड़ता है। कहने को तो कानून अंधा है, का अर्थ यह है कि कानून की देवी की आंखों पर पट्टी बंधी और हाथ में तराजू है। पट्टी बांधने का अर्थ यह है कि न्याय की देवी या कानून की नजर में छोटे-बड़े, अमीर-गरीब, रसूखदार और गैर-रसूखदार, दबंग और

देश में कानून का राज और डर न होना चिंता का कारण तो है ही। जिस तरह से देश के कई प्रदेशों में नक्सलवाद, अलगाववाद अपनी जड़े जमाता जा रहा है उससे तो ऐसा ही प्रतीत होता है कि संपूर्ण देश में नहीं बल्कि कुछ प्रदेशों में ही कानून और न्याय व्यवस्था सिमट कर रह गई है। अपराधियों को पकड़ कर और उन पर भारी भरकम धाराएं लगाकर उनकों सलाखों के पीछे धकेलने मात्र से अगर कानून का राज कायम हो जाता तो कब से देश में अपराध और अपराधी समाप्त हो गए होते लेकिन जो प्रभावशाली हैं उनका कहना तो यह है कि कानून बनाया ही तोड़ने के लिए जाता है। ट्रैफिक नियमों से लेकर अन्य सैंकड़ों दूसरे कानूनों को तोड़ना लोग अपनी शेखी समझते है और कानून उल्लंघन के किस्सों को बहादुरी के रूप में दूसरे के सामने पेश करने में भी गर्व महसूस करते हैं।

दबे हुए में कोई भेदभाव या पक्षपात नहीं है। और कानून का डण्डा अपराधी की जात-बिरादरी, हैसियत, पद और पहुंच को देखे बिना चलेगा लेकिन हमारे कर्णधारों ने कानून अंधा होता है कि परिभाषा और मायने ही बदल दिये हैं। उन्होंने कानून की देवी की आंखें फोड़ डाली हैं और न्याय के मंदिरों को खरीदकर कानून की किताबों का अर्थ और मायने अपनी सुविधा और सहूलियत से निकालना शुरू कर दिया। देश की छोटी-बड़ी सभी अदालतों में मुकदमों की बढ़ती संख्या इस बात की गवाही दे रहे हैं कि देश में कानून का डर किसी को नहीं है। और चारों ओर से मार खाया आम आदमी राहत पाने के लिए अदालत की शरण में आ तो जाता है लेकिन वो यहां की हकीकत भी बखूबी जानता समझता है। लेकिन अन्य कोई विकल्प या ठौर न होने की स्थिति में उसे आखिरी पड़ाव अदालत की चौखट ही नजर आती है। न्याय की ढीली चाल और लचर व्यवस्था इस देश में आम आदमी को कितना रूलाती है इसका नमूना देखना है तो देश के किसी भी न्यायालय में चले जाइए। वहां न्याय की आस में आए लोगों की लंबी-लंबी कतारें खुद-ब-खुद सारी कहानी बयां कर देंगी। जो असरदार हैं वो पुलिस, कचहरी सबको खरीद लेते हैं और जिनके पास कोई साधन या सहारा नहीं है वो अदालत की शरण में अपने लिए आसरा ढूंढते हैं और फिर बरसो-बरस या फिर जिंदा रहने तक डर-डर कर, अदालत के चक्कर काट-काटकर संसार से अलविदा हो जाते हैं।

आम जीवन में बढ़ती दबंगई, अपराध, भ्रष्टाचार, अनाचार, अत्याचार, दुष्कर्म इस बात की ओर सीधा इशारा करते हैं कि देश का बड़ा तबका कानून से बेखौफ है उसको कानून का कोई डर या भय नहीं है। कानून की मोटी-मोटी किताबें उनके लिए किसी उपन्यास की भांति हैं और कानून का पालन-पोषण करने वाले उनके लिए बिकाऊ माल से अधिक कुछ नहीं है। पिछले लगभग तीन-चार दशकों में देश में अपराध और कानून तोड़ने के आंकड़ों का हिसाब देख लीजिए आपको स्वयं मालूम हो जाएगा की देश में कानून किस चिड़िया का नाम है और कितने प्रतिशत को कानून के डंडे का डर है। जिनके पास ताकत है या जिनके ऊपर ताकत का साया है वे कानून को मजाक समझते हैं और जहां-तहां उसका खिलवाड़ करने से बाज नहीं आते हैं। अगर किसी दशा में जेल जाना भी पड़ जाए तो दबंग, प्रभावशाली, असरदार और पावरफुल जमात जेल में भी वीआईपी जीवन बिताती है।

पूरी तस्वीर ही काली है, ऐसा भी नहीं है लेकिन आजादी के 63 सालों के बाद भी देश में कानून का राज और डर न होना चिंता का कारण तो है ही। जिस तरह से देश के कई प्रदेशों में नक्सलवाद, अलगाववाद अपनी जड़े जमाता जा रहा है उससे तो ऐसा ही प्रतीत होता है कि संपूर्ण देश में नहीं बल्कि कुछ प्रदेशों में ही कानून और न्याय व्यवस्था सिमट कर रह गई है। अपराधियों को पकड़ कर और उन पर भारी भरकम धाराएं लगाकर उनकों सलाखों के पीछे धकेलने मात्र से अगर कानून का राज कायम हो जाता तो कब से देश में अपराध और अपराधी समाप्त हो गए होते लेकिन जो प्रभावशाली हैं उनका कहना तो यह है कि कानून बनाया ही तोड़ने के लिए जाता है। ट्रैफिक नियमों से लेकर अन्य सैंकड़ों दूसरे कानूनों को तोड़ना लोग अपनी शेखी समझते हैं और कानून उल्लंघन के किस्सों को बहादुरी के रूप में दूसरे के सामने पेश करने में भी गर्व महसूस करते हैं।

स्वतंत्र पत्रकार,
बी-96, इंदिरा नगर, लखनऊ - 226016 (उ.प्र.)

नियम संख्या 8 के अनुसार
अणुव्रत पाक्षिक का स्वत्वाधिकार संबंधी विवरण

1. प्रकाशन स्थल	:	210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग नई दिल्ली–110002
2. प्रकाशन अवधि	:	पाक्षिक
3. मुद्रक का नाम	:	राजीव जैन
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	बुकमैन प्रिंटर्स ए–121, विकास मार्ग शकरपुर, दिल्ली–110092
4. प्रकाशक का नाम	:	विजयराज सुराणा
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–110002
5. संपादक का नाम	:	डॉ. महेन्द्र कर्णावट
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	करुणा क्लिनिक राजसमंद–313326 (राजस्थान)
6. स्वत्वाधिकार	:	अणुव्रत महासमिति नई दिल्ली–110002

मैं विजयराज सुराणा घोषित करता हूँ कि मेरे ज्ञान और विश्वास के अनुसार उपर्युक्त विवरण सत्य हैं।

31–03–2011 **विजयराज सुराणा**
(प्रकाशक)

आनन्दोल्लास का सर्वोत्तम मदनोत्सव : होली

ओमप्रकाश 'दार्शनिक'

'दशकुमार चरित' में होली का उल्लेख 'मदनोत्सव' के नाम से किया गया है। वैसे भी, ऋतुराज काम का सहचर है। तभी कामदेव के विशेष पूजन का विधान है। कहीं फाल्गुन शुक्ल पक्ष द्वादशी से पूर्णिमा तक, कहीं चैत्र शुक्ल द्वादशी से पूर्णिमा तक मदनोत्सव का विधान है। आमोद-प्रमोद तथा उल्लास के अवसर पर हृदय की अमराई में मंजरित इस सुख-सौरभ का अपना एक अलग ही स्थान है।

''किन्तु 'यह मदनोत्सव' कालिदास, श्री हर्ष और वाणभट्ट की पोथियों की वायु बनकर रह गया है। अब बस 'मादन' रह गया है, न मदन है, न उत्सव! वर्तमान युग में काम को 'सेक्स' का पर्याय बनाकर इतना बड़ा अवमूल्यन सृष्टि-तत्त्व का हुआ है कि काम के देवत्व की बात करते डर लगता है। सच्चाई यह है कि काम व्यापनशील विष्णु और शोभा-सौन्दर्य की अधिष्ठात्री लक्ष्मी के पुत्र हैं। इसका तात्पर्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति के भीतर दो चेतनाएं होती हैं एक आत्मविस्तार की और दूसरी अपनी ओर खींचने की। दोनों का सामंजस्य होता है, तो काम जन्म लेता है। एक निराकार उत्सुकता जन्म लेती है। वह उत्सुकता यदि बिना किसी तप के आकार लेती है तो अभिशप्त होती है और अपने को छार करके आकार ग्रहण करे तो भिन्न होती है।''

डॉ. विद्या निवास मिश्र

दूसरी तरफ, 'काम' इतना हेय था तो भोलेनाथ उसे अपने तृतीय लोचन से भस्म करके भी अनंग रूप में जीवित ही क्यों करते? अन्तर तो बस इतना ही है कि आत्मा के मधुरतम और प्रियतम भाव की अनुभूति किये बिना होली के अवसर पर प्रकट होने वाले प्रेम को, जो मानव मन से सहस्त्रों धाराओं में बिखर जाता है, अनुभव नहीं किया जा सकता।

होली तो मधुमास का यौवन-काल है। ग्रीष्म के शुभागमन का प्रतीक है। वनश्री के साथ-साथ खेतों की श्री और हमारे शरीर व हृदय की श्री भी फाल्गुन के ढलते-ढलते संपूर्ण आभा में खिल उठती है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने फाल्गुन के सूर्य की ऊष्मा को 'प्रियालिंगन मधु-माधुर्य स्पर्श' बताते हुए कहा है 'सहस्त्र-सहस्त्र मधु-मादक स्पर्शों से आलिंगित कर रही इन किरणों ने फाल्गुन

के इस वासन्ती प्रातः को सुगन्धित स्वर्ण में आह्लादित कर दिया है।'

फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा को प्राचीन आर्यजन नये गेहूं और जौ की बालियों के हवन से अग्निहोत्र का प्रारंभ करते थे। कर्मकांड परम्परा में इस 'यवग्रहण-यज्ञ' का नाम दिया गया है। प्रतीत होता है, नवान्त की बालियों को प्रज्जवलित अग्नि में भूनने की सतयुग से आ रही परम्परा के कारण इस महोत्सव का नामकरण 'होली' हो गया है। अनाज की बालियां संस्कृत में 'होलक' कहलाती हैं, देश के वृहत्तर भाग में आज भी चने की सिकी-भूनी बालियों को 'होला' कहते हैं।

वसन्त में सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायण में आ जाता है। फल-फूलों की नई सृष्टि के साथ ऋतु भी 'अमृत प्राण' हो जाती है। इसीलिए होली के पर्व को 'मन्वन्तरारम्भ' भी कहा जाता है। यह पर्व तो आनन्दोल्लास का सर्वश्रेष्ठ रसोत्सव है। मुक्त, स्वच्छन्द परिहास का त्यौहार है। नाचने-गाने, हंसी-ठिठौली एवं मौज-मस्ती की त्रिवेणी है। सुप्त हृदय की कंदराओं में पड़े ईर्ष्या-द्वेष जैसे निम्न विचारों को निकाल फेंकने का सुनहरा अवसर है।

होली के साथ कई दंत-कथाओं का सम्बन्ध जुड़ा हुआ है। होली की रात अर्थात् फाल्गुन शुक्ल-पक्ष की पूर्णिमा को आग क्यों जलाई जाती है? इसके लिए पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं। पहली कथा है प्रह्लाद और होलिका की। दैत्यराज हिरण्यकश्यप विष्णु-विरोधी था, परन्तु उसके पूर्ण विपरीत उसका पुत्र प्रह्लाद विष्णु का परम भक्त। गुरु द्वारा समझाने-बुझाने तथा पिता द्वारा मना करने पर भी, उसने विष्णु-नाम की रट नहीं त्यागी। फलस्वरूप प्रह्लाद को मारने के लिए पिता की आज्ञा से अनेक यातनाएं दी गई, किन्तु भगवत्कृपा से वह जीवित रहा। अन्ततः हिरण्यकश्यप की बहन होलिका, जिसे अग्नि से न जलने का वरदान प्राप्त था, वह प्रह्लाद को गोद में लेकर अग्नि में फाल्गुन शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को बैठ गयी। किन्तु होलिका स्वयं तो जल गई और विष्णु-कृपा से प्रह्लाद पूर्ण रूप से सुरक्षित रहा तभी से यह त्यौहार प्रचलित हो गया।

कवयित्री महादेवी वर्मा कहती हैं 'प्रह्लाद का अर्थ है परम आह्लाद, परम आनन्द। किसान के लिए अन्न से ज्यादा क्या परम आनन्द हो सकता है।'

दूसरी पौराणिक कथानुसार ठुण्ढ़ा नामक राक्षसी बच्चों को पीड़ा पहुंचाती तथा उनकी मृत्यु का कारण बनती थी। एक बार वह राक्षसी पकड़ी गई। लोगों ने

क्रोध के वशीभूत होकर उसे जीवित जला दिया। इसी घटना की स्मृति में होली के दिन आग जलायी जाती है। आज होली की अग्नि में बालकों की अलाय-बलाय का समर्पण कर उनकी सुख-समृद्धि की सूचक हर्ष मनाया जाता है।

''इस कथा का अभिप्राय यही लगता है कि जड़ता का त्रास ही होलका राक्षसी है और इस त्रास को बाल-सुलभ मुक्त उल्लास, समवेत क्रीड़ा और निर्बन्ध भाषा से दूर किया जा सकता है।'' ***डॉ. विद्या निवास मिश्र***

शिव-तप को भंग करने के अपराध में शिव ने 'काम' को अपने तृतीय नेत्र से भस्म कर दिया था। होली की अग्नि उसी कामाग्नि का रूप है। कामुक भावनाओं का दहन कर आत्मा की प्रगति करो, यही घोषणा होली की पावन अग्नि करती है।

भारत कृषि प्रधान देश है। होली के अवसर पर पकी हुई फसल काटी जाती है। खेत की लक्ष्मी जब घर के आंगन में आती है तो कृषक अपने सुनहले स्वप्न को साकार पाता है। तब वह आत्म-विभोर होकर नाचता-गाता है। अग्नि देवता को नवान्न की आहूति देता है, जिसे 'नवान्नेष्टि-यज्ञ' कहते हैं।

फाल्गुन-पूर्णिमा होलिका-दहन का दिन है। लोग घरों से लकड़ियां इकट्ठी करते हैं, इसका शुभारम्भ वसन्त पंचमी से होता है। अपने-अपने मुहल्ले के चौराहों पर लकड़ियों के ढ़ेर तथा टूटे-फूटे काठ-कबाड़ एकत्र किये जाते हैं। इस कच्ची होली की पूजा करने के उपरांत ही मुहूर्तानुसार इसे जलाया जाता है। होली की तीव्र लपटों में गन्ने, नारियल तथा हरे चने भूने जाते हैं। सूखे रंगों-गुलाल आदि से होली की पूजा की जाती है। होली जलाने से पूर्व स्त्रियां लकड़ी के ढेर को उपलों का हार पहनाती है, उसकी पूजा करती हैं तथा रात्रि को उसे अग्नि की भेंट कर देती हैं। लोग होली के चारों ओर खूब नाचते और फाग गाते हैं। परस्पर गुलाल आदि लगाकर तथा गले मिलकर प्रेम प्रदर्शित करते हैं।

दूसरे दिन प्रतिपदा का दिन धुलेंडी का है। फाल्गुन की पूर्णिमा की शशि की ज्योत्सना, वसंत की मधुरिम मुस्कुराहट, परागी फगुनाहट, फगुहराओं की मौज-मस्ती, हंसी-ठिठोली, ऋतुराज की दुंदुभी बजाती धुलेंडी ठुमक-ठुमक कर आती है। रंग-भरी होली जीवन की रंगीनी बिखेरती है। मुखड़े पर अबीर-गुलाल, चन्दन या रंग लगाते हुए, गले मिलने में जो सुखद मजा आता है, उसके क्या कहने। मुंह को काला-पीला रंगने में जो उल्लास होता है, रंगभरी पिचकारी या बाल्टी भर रंग फेंकने में जो उमंग होती है, निशाना साधकर रंग भरा गुब्बारा मारने में जो शरारत झलकती है, ये सब जीवन की सजीवता के दर्शन कराते हैं।

चहुंओर अबीर-गुलाल की वर्षा, रंग भरी पिचकारी, ऊपर से नीचे मारी, गुब्बारों का बंधा समां, हास्य-रस के फव्वारे, सभी होली के रंग में रंगे। डफ-ढोल, मृदंग के साथ नाचती-गाती होली, कोई कहे बुरा न मानो होली है। परस्पर गले मिलती बालाएं, वीर बैन उच्चारती, आवाजें करती नर-नारियों की मस्ती, छेड़-छाड़ करती टोलियां, दोपहर तक होली के प्रेमानन्द में पगी हैं।

''बरस-बरस पर आती होली, रंगों का त्योहार अनूठा।

चुनरी इधर, उधर पिचकारी,
गाल-भाल का कुमकुम फूटा।।

लाल-लाल बन जाते काले, गोरी सूरत पीली-नीली।।'' *गोपाल सिंह नेपाली*

पारिवारिक होली के तो अपने अलग ही रंग हैं। देवर-भाभी की होली, पति-पत्नी की होली, भाभी-ननदों की होली, जीजा-साली की होली, सलहज-नंदोई की होली में एक-दूसरे को अधिक रंगने की होड़, एक-दूसरे को भिगोने की चुनौती देखते ही बनती है। हर्षोल्लास का यह वातावरण देख पड़ोसी ठगे से रह जाते हैं। पर भैया, कृष्ण-गोपिकाओं की होली तो और भी अद्‌भुत होती है।

''फागु के भीर अभीरन में गहि गोविन्द लै गई भीतर गौरी।

भाई करी मन की पद्‌माकर ऊपर नाई अबीर की झोरी।।

छीन पितम्बर कम्मरते सुबिदा दई मीडि कपोलन-रोरि।

नैन नचाइ कही मुसकाई लला फिर आइयो-खेलन होरी।।'' *पद्‌माकर*

ब्रज और मालवा की होली बेजोड़ है। यहां होली खेलने, देखने के साथ सहने की होती है। नारी लट्‌ठ के सामने बड़े-बड़े बहादुर तिनके तोड़ जाते हैं। हरियाणा की 'कोलड़ा मार' होली इसी लट्‌ठ होली का मृदु रूप है।

लगभग दो बजे मध्याह्न तक धुलेंडी का प्रेमानन्द समाप्त हो जाता है। नहा-धो लेने के पश्चात् सब कुछ बदल सा जाता है। नवीन वस्त्र, नए पकवान, नई सुगन्धी, नव धजा, नया शिष्टाचार और नया मंगल। संध्या की गोधूलि वेला के समय लगते ही होली के मेले और मनाया जाता है होली मिलन समारोह। निकलती है हास्य-व्यंग्य युक्त मूर्ख-सम्मेलन की सवारियां, आयोजित होते हैं मूर्ख (कवि) सम्मेलन और वितरित होती है हास्य उपाधियां देश के गणमान्य लेखकों, कवियों और राजनीतिज्ञों को।

होली का यह पावन पर्व मानवीय अवगुणों को जलाकर सामाजिक समरसता का पल्लवन करता है, किन्तु आज असामाजिक एवं अराजक तत्त्वों के मनमाने तथा उच्छृंखल आचरण से बदनाम हो गया है। आज होली परम्परा-निर्वाह की विवशता का प्रदर्शन-मात्र रह गया है। कहीं ज्वार तो दिखता नहीं, शालीनता की नकाब चढ़ी रहती है उल्लास दुबका रहता है। नशे से उल्लास की जागृति का निरर्थक प्रयास किया जाता है। वे भूल जाते हैं कि नशा बाहर के किसी मादक द्रव्य से नहीं होता, वह होता है अंतःकरण के मादन भाव से।

अर्थयुग का मानव अर्थ-चक्र में व्यस्त है, त्रस्त है। भागते हुए वक्त को वह वक्त के अभाव के कारण पकड़ नहीं पाता। अतः आनन्द, हर्ष, उल्लास, विनोद, उसके लिए ईद का चांद बन गया है। इस दमघोटू वातावरण में होली-पर्व चुनौती है। इस चुनौती को स्वीकार करें। मंगलमय रूप में हास्य, व्यंग्य-विनोद का अभिषेक करें।

फ्लैट नं. 2, आलोपी बाग
इलाहाबाद - 211006 (उ.प्र.)

रिश्वत मांगने वाले को थप्पड़ दूंगा : शान्तनु

जनार्दन शर्मा

हजारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पर रोती है,
तब होता है चमन में कोई दीदावर पैदा।

कर्मयोगी पूर्व पुलिस महानिदेशक स्व. शान्तनु कुमार के जीवन पर यह शेर शत-प्रतिशत लागू होता है।

सन् 1966 बैच के आई.पी.एस. शान्तनुजी (सेंट स्टीफेन्स कॉलेज दिल्ली से पढ़े) एक प्रतिभाशाली हर दिल अजीज ईमानदार व कर्मठ व्यक्ति थे। इन्हीं कारणों-गुणों से वे राज्य के पुलिस महानिदेशक बने। रिश्वतखोरी के घोर विरोधी शान्तनुजी 1967-68 के समय पुष्कर में भारतीय पुलिस सेवा के प्रशिक्षु अधिकारी थे। वे रिश्वत मांगने पर थप्पड़ देने वाले सिपाही थे और अपने पद के बड़प्पन से अछूते यहां उन्होंने युवा शिक्षकों व विद्यार्थियों एवं पुलिस जवानों की वालीवाल टीम बनाई, थाने की सुरक्षा एवं यातायात वाहनों में ओवरलोडिंग पर अंकुश के साथ असामाजिक तत्वों पर रोक लगाई तथा किसी के प्रभाव में नहीं आये। उस समय बड़े भोज व प्रभावशाली लोगों की पार्टी में शामिल नहीं हुए और हम युवकों के नवयुवक मंडल द्वारा कार सेवा से सरोवर की मिट्टी खुदाई अभियान तथा पं. नंदा गुरु जैसे निर्भीक नागरिक के नेतृत्व में भारत केसरी चन्दगीराम पहलवान के अभिनंदन में शान्तनुजी ने शिरकत की व सुरक्षा मुहैया कराई। हम लोगों की स्नेह-गोष्ठी में स्वयं पधारे एवं तत्कालीन उपखंड अधिकारी (जो उनके समकालीन डी.जी.पी. पद के समय राज्य के मुख्य सचिव रहे) ईमानदार अधिकारी इन्दरजीत खन्ना आई.ए.एस. को साथ लाये। इससे हमें निष्ठा व ईमानदारी की प्रेरणा मिली। मुझ पर प्राणघातक हमला होने पर बदमाशों का पर्दाफाश करने की प्रेरणा दी। भीलवाड़ा, जोधपुर एस.पी. तथा सीमा सुरक्षा बल एवं जेल महानिदेशक तथा पुलिस महानिदेशक पद पर रहते भी पुष्कर विकास सरोवर की खुदाई-सफाई पर रिपोर्ट लेते रहे। हाल ही में कई महत्वपूर्ण सुझाव तत्कालीन जिलाधीश नवीन महाजन एवं राजेश यादव को प्रेषित किये। उस कर्मयोगी तथा नैतिक मूल्यों के समर्थक शीर्ष अधिकारी को शतशत नमन व श्रद्धांजलि।

पूर्व अध्यक्ष, नगरपालिका, पुष्कर (राज.)

झाँकी है हिन्दुस्तान की

- इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ साइंस के वैज्ञानिकों ने कलम के आकार का बिना सुई वला ऐसा उपकरण बनाया है, जो मरीज के शरीर में दवा पहुंचाने के लिए सुपरसोनिक तरंगों का प्रयोग करेगा। भारत में इस तरह का आविष्कार पहली बार हुआ है। इंसान पर इस उपकरण का प्रयोग पूरा होने के बाद अगले दो-तीन साल में इसकी बिक्री शुरू हो जायेगी। दुनियाभर की कंपनियां और शोधकर्ता दवा लेने के लिए नेजल इनहेलर और स्किन पैचेज सरीखे बिना सुई वाले उपकरण बनाने में लगे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक वैश्विक स्तर पर हर साल 12 अरब इंजेक्शन का प्रयोग किया जाता है।

- जेपीसी मुद्दे पर 20 दिनों तक संसद बाधित रही। एक दिन की संसद की कार्यवाही पर देश के 7.8 करोड़ रुपए का खर्च आता है। इस हिसाब से कुल 20 दिन में देश का 156 करोड़ का नुकसान हुआ।

- भारत में हर साल 80 हजार लोग सड़क दुर्घटनाओं में मर जाते हैं तथा 12 लाख लोग हर साल गंभीर रूप से घायल होते हैं। 3 लाख के करीब स्थायी रूप से विकलांग हो जाते हैं। वाहन दुर्घटना मामले में दावे संबंधी नियमों में सुप्रीम कोर्ट ने दी ढिलाई।

- भारत संक्रामक रोगों पर बीमारियों पर खर्च होने वाली कुल राशि का 38 प्रतिशत खर्च करता है। उसे सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली को मजबूत करने के साथ ही इन बीमारियों से निपटने और नई रिसर्च के अपने इंतजामों को पुख्ता करना होगा। कुपोषण भी इस देश की एक बड़ी समस्या है। देश की 70 फीसदी किशोरियों में खून की कमी है।

- इनकम टैक्स विभाग की 150वीं वर्षगांठ पर भारत सरकार 150 रुपये का सिक्का जारी करेगी। 150 रुपये के सिक्के की जो डिजाइन और रूपरेखा होगी, वही पांच रुपये के नए सिक्के की भी होगी। जो इनकम टैक्स विभाग की 150 वीं वर्षगांठ से जुड़ा हुआ होगा।

सफलता के स्वर्णिम सूत्र

मुस्कान बरड़िया

महान् वैज्ञानिक व पूर्व राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम ने एक बार कहा-यदि मुझे देश की तीन नस्लों में सबसे शक्तिशाली नस्ल को चुनना है तो मैं युवक को चुनना पसंद करूंगा। युवा शब्द शक्ति व पुरुषार्थ का प्रतीक होता है। युवा अतीत से सबक लेते हुए वर्तमान की परिस्थितियों को देखते हुए भविष्य की संभावनाओं को तरासता है, वही राष्ट्रीय उज्ज्वल बनता है। युवा शक्ति बुद्धिमत्ता और नैतिकता से आप्लावित होती है। आज युवकों के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण है-कैरियर। विज्ञान और तकनीकी के इस युग में हर युवक डॉक्टर, इन्जीनियर, वैज्ञानिक बनने के सपने देखता है तो कोई आर्थिक प्रतिस्पर्धा में 'कौन बनेगा करोड़पति और बिग मनी' जैसे सिरियल पेश करता है। उद्देश्य सभी का एक है- हमारा कैरियर बने। सफल कैरियर के लिए आज युवा बाह्य व्यक्तित्त्व को तो निखारने की कोशिश करता है किन्तु आर्थिक प्रतिस्पर्द्धा की अंधी दौड़ में आन्तरिक व्यक्तित्त्व को समझना, जानना और निखारना भूल जाता है। आन्तरिक व्यक्तित्त्व जब निखरता है तब बाह्य उज्ज्वल व्यक्तित्त्व स्वतः प्रस्फुटित होता है। कैसे बनाये अपने आन्तरिक व्यक्तित्त्व को तेजस्वी और प्रभावशाली?

जगायें आत्मविश्वास

आन्तरिक आत्मविश्वास व दृढ़ निश्चय सफलता के महानतम सूत्र हैं। आत्मविश्वास से असंभव कार्य भी संभव बन जाता है। 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत, यह प्रसिद्ध वाक्य हमारी हर सांस में प्रतिध्वनित होना चाहिए। जहां निराशा और कुण्ठा होती है, वहां सफलता की प्राप्ति भी संदेह के घेरे में घिर जाती है। महान लेखक कालाईल ने कहा- 'हर श्रेष्ठ कार्य पहले असंभव ही नजर आता है।' मैंने सुना एक व्यक्ति इक्कीस वर्ष की उम्र में व्यापार में असफल हुआ। बाईस वर्ष की उम्र में वार्ड मेम्बर का चुनाव हार गया। चौबीस वर्ष की उम्र में व्यापार में असफल हुआ। पच्चीस वर्ष की उम्र में उसकी शादी हुई। छब्बीस वर्ष की उम्र में उसकी पत्नी का देहान्त हो गया। सत्ताईस वर्ष की उम्र में वह अपना मानसिक सन्तुलन खो बैठा। तीस वर्ष की उम्र में वह एम.एल.ए. का चुनाव हार गया। ३४ वर्ष की अवस्था में कांग्रेस का चुनाव हार गया। पैंतालीस वर्ष की उम्र में सीनेट का चुनाव लड़ा पर उसमें भी पराजित हुआ। सैंतालीस वर्ष की उम्र में उपराष्ट्रपति बनने में भी असफल रहा। उनचास वर्ष की उम्र में फिर सिनेट का चुनाव लड़ा किन्तु हार गया। फिर भी आत्मविश्वास, दृढ़ निश्चय निरन्तर प्रयास से वह बावन साल की उम्र में अमेरिका का राष्ट्रपति चुना गया, जिसका नाम था-अब्राहम लिंकन। याद रखें, चिड़िया टूटती शाखाओं से नहीं डरती, क्योंकि उसे शाखाओं से ज्यादा अपने पंखों पर विश्वास है।

फूलना नहीं, फलना सीखें

आचार्य तुलसी ने पंचसूत्रम् में लिखा-'विद्या तो दर्प को दूर करने वाली होती है।' पर यदि कोई विद्या का ही दर्प करे तो उसका बैद कौन होगा। सफलता के लिए विनम्रता का विकास जरूरी होता है। जो इंसान झुकने की कला को जानता है वही अपने कैरियर को सफलता के उच्च शिखर पर आरूढ़ कर सकता है। दुनिया का हर महापुरुष विनम्रता, सहजता और सहृदयता का प्रतीक होता है आज तक का इतिहास इस बात का साक्षी है। विचारक रस्किन ने कहा-'अहम् से आदमी फूल सकता है, फैल नहीं सकता।'

संघर्ष करना सीखें

जो व्यक्ति समस्याओं और मुश्किलों से न घबराकर उत्साह व उमंग से अपने लक्ष्य की ओर अपने कदमों को अग्रसर करता है वही अपने व्यक्तित्व को तेजस्वी और प्रभावशाली बना सकता है। संघर्ष की आग में तप कर ही सफलता के कुंदन को प्राप्त किया जा सकता है। याद रखें, भगवान महावीर के कानों में कीलें ठोकी गई थी। बुद्ध को गालियां सुननी पड़ीं। ईसा मसीह को सूली पर लटका दिया गया। महान् दार्शनिक सुकरात को जहर का प्याला पीना पड़ा, पर समस्याओं से न घबराकर लक्ष्य-प्राप्ति के लिए उन्होंने उसे सहजता से स्वीकार कर लिया। सोना आग में तपकर ही निखर पाता है और चंदन जब पत्थर पर घिसता है, तभी वह महक पाता है। स्टेण्डन ने कहा- 'तुम्हारे मार्ग में चाहे गुलाब आयें या कांटें किन्तु तुम निरन्तर चलते रहो। यही निरन्तरता तुम्हें मंजिल तक ले जायेगी।' याद रखें, थॉमस एडिसन बिजली के बल्ब के आविष्कार के समय १०,००० बार असफल हुआ। हेनरी फोर्ट चालीस वर्ष की उम्र में दिवालिया हो गये थे। अरबल आईन्टीन को विद्यार्थी जीवन में बुद्धु कहा जाता था पर इन्होंने अपनी असफलताओं के सामने घुटने नहीं टेके बल्कि पूरी शक्ति को अपने लक्ष्य पर केंद्रित करके अपने प्रयासों से दुनिया को चमत्कृत किया। हम समस्याओं से न घबराएं, विश्वास के साथ उसका समाधान करते हुए अपने पथ को निर्बाध बनायें।

आत्म-अनुशासन जागे

व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाने के लिए आत्म-अनुशासन का विकास अत्यन्त अपेक्षित होता है। युवा अवस्था में भरपूर जोश के साथ में विवेक-चेतना का विकास भी जरूरी होता है। विवेक के अभाव में व्यक्तित्त्व ऊंचाइयों को प्राप्त नहीं कर सकता। हर युवा स्वतंत्रता को पसंद करता है, उसे जीवन का ध्येय बनाता है। किन्तु स्वतंत्रता के साथ स्व-अनुशासन का होना भी जरूरी है। उसके अभाव में व्यक्ति सफलता को प्राप्त नहीं कर सकता। हमें इन पंक्तियों को याद रखना चाहिए-

''जल चाहता है मुझको कोई न बांधे
अन्न चाहता है मुझको कोई न रांधे
पवन चाहे मुझे कोई न रोके
मन चाहे मुझे कोई न टोके
पर जल प्यास बुझाये बँधकर
अन्न स्वाद दे रंधकर
पवन तैरती है रुककर
मन उबरता है झुककर''

आज अपेक्षा है अनुशासन की लौ को प्रज्ज्वलित करें। हम युग को नयी दृष्टि, नई मंजिल, नया सौपान, नये शब्द, नया परिधान, नये अलंकरण, नये मूल्य, नया प्रतिमान, नये पंख, नये स्वर, नये अरमान और नयी उमंग दे सकें। यह तभी संभव है, जब हम हमारे व्यक्तित्व को चरित्रनिष्ठ, नैतिकनिष्ठ और आत्मानुशासित बनाते हैंतभी हमारा व्यक्तित्व तेजस्वी, उज्ज्वल, प्रतिभाशाली और प्रभावशाली बनता है।

ओसवाल भवन के पास, श्रीडूंगरगढ़, बीकानेर (राज.)

क्रोध प्रबंधन के प्रभावी सूत्र

मुनि सुधाकर

क्रोध सफलता व प्रगति का महान शत्रु है। व्यक्तित्व विकास के लिए अनावेश की चेतना का विकास जरूरी है। क्षण भर का क्रोध हमारे व्यक्तित्व को धूमिल बनाकर सफलता की ओर बढ़ते कदमों को पीछे धकेल देता है। क्रोध पारिवारिक, सामाजिक और व्यापारिक सम्बन्धों को तहस-नहस कर हंसते-खिलते गुलशन भरे व्यक्तित्व में जहर घोल देता है। क्रोध स्वयं को जलाकर नष्ट कर देता है।

क्रोध प्रबन्धन के सूत्रों की चर्चा करने से पूर्व क्रोध के कारणों को जानना जरूरी है। क्रोध उत्पत्ति के मुख्य कारण हैं– अहंकार, असहिष्णुता, स्नावियक, दुर्बलता, नकारात्मक सोच, असंतुलित आहार आदि। क्रोध से मस्तिष्क में जहरीले रसायन पैदा होते हैं, जिससे व्यक्ति के परिपार्श्व का वातावरण भी विषाक्त बन जाता है। चिकित्सा विज्ञान की इम्युन न्युरोलॉजी शाखा भी क्रोध को अनेक बीमारियों का कारण मानती है। क्रोध से हाई कोलोस्ट्रोल, ब्लड प्रेशर, मानसिक असन्तुलन आदि बीमारियां पनपती हैं। क्रोध तनाव, आत्महत्या, असफलता जैसे विषैले बीजों को जन्म देता है। क्रोध शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक तीनों स्तर पर स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाता है। गीता में क्रोध की चर्चा करते हुए कहा गया है–

क्रोधाद् भवति सम्मोहः, सम्मोहात् स्मृतिविः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥

क्रोध से विवेक चेतना लुप्त हो जाती है जिससे करणीय और अकरणीय का भेद नहीं हो पाता है। क्रोध के गर्भ में खतरा छिपा होता है। जो अपने व्यक्तित्व को लोकप्रिय बनाना चाहते हैं, उनके लिए आवेश और आवेग पर नियन्त्रण करना जरूरी है। याद रखें, कोई हमें अपशब्द कहे तो हम दुःखी क्यों हों? तेरापंथ के प्रवर्तक आचार्य भिक्षु को जीवन में नाना प्रकार की परिस्थितियों से गुजरना पड़ा। किन्तु वे धैर्य, अनावेश और शान्ति के प्रतीक बने रहे। सन् 1856 में आचार्य भिक्षु का भीलवाड़ा में पदार्पण हुआ। वहां अध्यात्म निष्ठ लोगों को आनन्द और प्रसन्नता से आप्लावित होने का अवसर मिला, लेकिन आचार्य भिक्षु की बढ़ती लोकप्रियता से विद्वेषी जन बौखला उठे और विभिन्न तरीकों से उन्हें अपने लक्ष्य से विचलित करने का प्रयास करने लगे। आचार्य भिक्षु उनकी ओछी/घटिया हरकतों को नजर अन्दाज करते हुए अपने पथ पर प्रगतिशील रहे। आचार्य भिक्षु के अनन्य भक्त भैरूदानजी चिण्डालिया के लिए वे परिस्थितियां असह्य हो उठीं। वे आचार्य भिक्षु की धैर्यता, क्षमाशीलता व अनावेश की साधना से बड़े प्रभावित हुए। उन्होंने आचार्य भिक्षु से कहा—आप जिस तरह विरोधियों के अपशब्दों और आलोचनाओं को समभाव से सहन कर रहे हो यह बड़ा कठिन कार्य है। किन्तु अन्त में आपकी विजय वैसी ही होगी जैसी राव रघुनाथ के जंवाई की हुई। निकटस्थ बैठे व्यक्तियों ने आग्रह किया कि वे राव रघुनाथ के जंवाई के विषय में बताएं।

भैरूदानज चिण्डालिया ने घटना प्रसंग सुनाते हुए कहा—राव रघुनाथ अग्रवाल दिल्ली के प्रतिष्ठित व्यक्ति व बादशाह के कृपा पात्र थे। धन वैभव का उनके यहां कोई अभाव नहीं था। उनके एक इकलौती पुत्री थी जो उन्हें प्राणों से भी प्यारी थी। एक बार दिल्ली का कोई साधारण अग्रवाल अपने लड़के को नए कपड़े पहनाकर बाजार में लाया। किसी ने व्यंग्य में कहा—लड़के को ऐसा सजाया है जैसे राव रघुनाथ का जंवाई बनाने जा रहे हो। यह बात उनके दिल में चुभ गयी, उसने कहा वह अग्रवाल है, मैं भी अग्रवाल हूं, सगाई हो सकती है। मैं उनके ही पास जा रहा हूं और सगाई करके भी दिखा दूंगा। कुछ लोगों ने मजाक करते हुए कहा—हमें बारात में ले जाना मत भूलना। वह अपने लड़के को साथ लेकर राव रघुनाथ की कोठी पर गया और सम्बन्ध की बात चलाई। राव रघुनाथ को बड़ा बुरा लगा। कर्मचारियों ने संकेत पाकर उनको बाहर निकाल दिया। जब वह बाजार में पहुंचा तो लोगों ने पूछा 'सम्बन्ध तय कर दिया'? उसने कहा— आज पहला दिन था। केवल थुक्कम-थुक्का हुआ। दूसरे दिन वह लड़के को लेकर पुनः राव रघुनाथ के पास गया किन्तु राव रघुनाथ ने आवेश में आकर आज भी उसे बाहर निकाल दिया। बाजार में तमाशबीन लोगों ने पूछा—आज तो रिश्ता कर दिया होगा? हमें जल्दी से जल्दी मिठाई खिलाओ। उसने बड़ी शालीनता से कहा—कल तो थुक्कम थुक्का हुआ, आज धक्कम-धक्का हुआ, देखते जाओ आगे क्या होता है। दो दिन से चल रहे इस नाट्यक्रम पर उनकी पत्नी की नजर पड़ी, उन्होंने राव रघुनाथ से पूछा कि दो दिनों से नीचे क्या नाटक चल रहा है। राव रघुनाथ ने कहा— पता नहीं कौन कम्बख्त आता है। उनकी पत्नी ने पूछा लड़का कैसा है? राव रघुनाथ ने कहा—लड़का सुन्दर है और सुसंस्कारित प्रतीत होता है, किन्तु आर्थिक स्थिति कमजोर लगती है। उनकी पत्नी ने लड़के को पहले ही देख लिया था। उन्हें लड़का पसन्द आ गया सो राव रघुनाथ ने कहा— आर्थिक स्थिति कमजोर है तो क्या हुआ? हमारे पास धन वैभव का कोई अभाव नहीं है। हमें संस्कारी वर चाहिए। तीसरे दिन जब वह अग्रवाल पुनः अपने लड़के को लेकर आया तो रघुनाथजी ने उसे अपने पास बैठाया, अनेकों प्रश्नों के माध्यम से जानकारी ली, उनकी पत्नी ने लड़के से बातचीत कर उसके व्यवहार कौशल को देखा। सब तरह से सन्तुष्ट होकर उन्होंने पुत्री का सम्बन्ध उनके पुत्र से कर दिया। वस्त्र और धन देकर उसे पालकी में बैठाकर विदा कर दिया। पालकी बाजार में पहुंची तो लोगों के आश्चर्य का पार नहीं रहा और दातों

तले अंगुली दबाने लगे। अग्रवाल ने कहा—यह सब मेरे अनावेश और संतुलित व्यवहार का परिणाम है, पहले दिन थुक्कम-थुक्का, दूसरे दिन धक्कम-धक्का और आज छक्कम-छक्का हो गया। यदि मैं पहले दिन ही राव रघुनाथ के व्यवहार से उत्तेजित और विचलित हो जाता तो अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सफल नहीं होता। भैरूदानजी चिण्डालिया ने घटना का उपसंहार करते हुए आचार्य श्री भिक्षु से कहा—आज आपको जो गालियां दे रहे हैं वही कल आपकी स्तुति करेंगे।

जीवन में सफलता और शांति के लिए पहली शर्त है—क्रोध प्रबन्धन। परिवार, समाज और दफ्तर में वही लोकप्रिय बनता है जिसके चेहरे पर सदैव मुस्कान रहती है। छोटी-छोटी समस्याओं पर उत्तेजित होने की बजाय शान्ति से समाधान के सूत्रों को तलाशना चाहिए। आईए जानें क्रोध प्रबन्धन के स्वर्णिम और प्रभावी सूत्र—

1. स्वस्थ रहें— अपनी जीवन शैली को व्यवस्थित और संयम से अनुप्राणित बनायें। अस्वस्थ व्यक्ति क्रोधी व चिड़चिड़े स्वभाव का बन जाता है। **'रात में जल्दी सोएं और सुबह जल्दी उठें'** के सूत्र को अपनाएं। वैज्ञानिक भी मानते हैं– सुबह चार बजे से सूर्य उदय तक मेलोटोनिन नामक रसायन का स्राव होता है, जो व्यक्ति को आनन्द और मस्ती से भरपूर रखता है। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का वास होता है। स्वस्थ मन से स्वस्थ शरीर का निर्माण होता है। स्वस्थ चिन्तन व मन क्रोध पर नियन्त्रण करने में सक्षम होता है।

2. भूलना सीखें– हमारा मस्तिष्क भूलने और याद रखने दोनों दृष्टियों में सक्षम होता है। सुपर कम्प्यूटर (मस्तिष्क) में फीड और डिलिट दोनों किये जा सकते हैं। हमें अपने मस्तिष्क में उन्हीं यादों को रखना चाहिए जो आनन्द की अनुभूति कराये न कि यातनाओं की। मस्तिष्क से चिन्ता, तनाव, ईर्ष्या और अहंकार को निकाल कर खुशी को भरना चाहिए। क्रोध प्रबन्धन के लिए भूल जाओ। दुर्योधन द्रोपदी के 'अंधे के बेटे अंधे होते हैं' वाक्य को भूल जाता तो महाभारत का महायुद्ध नहीं होता।

3. क्षमा करना सीखें– जैन धर्म का प्रसिद्ध शब्द है– खमत-खामणा यानि क्षमा मांगना और क्षमा करना। राम, कृष्ण, बुद्ध और महावीर क्षमा के अवतार पुरुष थे। जब ईसा-मसीह को सूली पर चढ़ाया तो उन्होंने मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए कहा— प्रभु इन्हें क्षमा कर दो। क्योंकि वे नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं। क्षमतावान व्यक्ति ही क्षमावान बन सकता है। शिशुपाल की माँ ने जब भविष्यवाणी सुनी कि श्रीकृष्ण के हाथों शिशुपाल की मृत्यु होगी तो वह श्रीकृष्ण के पास आई और आग्रह किया कि वह शिशुपाल का वध न करने का संकल्प लें। श्रीकृष्ण ने कहा कि मैं यह संकल्प नहीं ले सकता पर शिशुपाल की 99 गलतियों को माफ जरूर करूंगा। शिशुपाल की मां बड़ी प्रसन्न हुई। उसने शिशुपाल से कहा कि कृष्ण के प्रति कभी कोई गलती न करे, किन्तु वह एक के बाद एक गलती करता चला गया। श्री कृष्ण ने उसकी 99 वें गलतियों को क्षमा करते हुए 100वीं गलती पर सुदर्शन चक्र चलाया। हम संकल्प करें कि श्रीकृष्ण 99 गलतियां माफ कर सकते हैं तो हम किसी की 9 गलतियां माफ क्यों नहीं कर सकते? क्रोध नियन्त्रण के लिए क्षमा मांगना और क्षमा करना सीखें।

4. सहनशील बनें– जीवन में लाभ-हानि, प्रशंसा-निंदा, मान-अपमान, यश–अपयश, सुख-दुःख, आते-जाते रहते हैं, पर दुःख में दुःखी होना-न होना हमारे हाथ में है। समता का विकास करें। धैर्य के अभाव में व्यक्ति सफलता का सही लाभ नहीं उठा पाता। हमें एक दूसरे के विचार, व्यवहार व कार्य के प्रति सहनशील और उदार बनना चाहिए।

5. आत्म-निरीक्षण करें– दिन में कितनी बार क्रोध किया, उसके परिणामों पर चिन्तन करें। संकल्प करें कि क्रोध नहीं करूंगा, शान्ति और प्रसन्नता से जीऊंगा। आवेश और आवेग पर विजय की साधना करूंगा। मन व मस्तिष्क को सकारात्मक सुझाव देने के साथ संकल्प बल को मजबूत बनायें।

6. वाणी का संयम– क्रोध आने पर मौन रहने की कोशिश करें। 'पहले तोलें–फिर बोलें' इस सूत्र का मतलब है कि अच्छी तरह सोच-समझ कर बोलें। आपका बोला हुआ शब्द क्रोधाग्नि में घी का काम न करे। आवेश में भाषा मधुर संयत नहीं रहती। असमय में (बिना उचित समय के) बोली गयी वाणी सत्य या सच्ची बात भी आवेश और अन्याय का कारण बन सकती है। तलवार के घाव भर जाते हैं लेकिन कड़वे शब्दों के घाव हमेशा हरे रहते हैं। इसलिए खूब सोच-समझ कर अवसर और वातावरण को देख कर बोलना चाहिए क्योंकि मुंह से निकले शब्द लौटाये नहीं जा सकते।

यह नहीं सिखाती

क्यों रहते हो अलग-अलग
कोई जात नहीं सिखाती।
क्यों कहते हो गालियां
कोई जुबान नहीं सिखाती।।

क्यों करते फिरते हो ईर्ष्या
कोई मां नहीं सिखाती।
क्यों जलाते हो भूमंडल
कोई मातृभूमि नहीं सिखाती।।

क्यों करते हो चोरी-फसाद
कोई ईमानियत नहीं सिखाती।
क्यों करते हो नरसंहार
कोई धर्म नहीं सिखाती।।

क्यों मचाते हो दहशतवाद
कोई मजहब नहीं सिखाती।
क्यों मारते हो निष्पात इंसान
कोई इंसानियत नहीं सिखाती।।

● **सुनील कुमार परीट**
सरकारी माध्यमिक पाठशाला
लककुंडी-591102, तह-बैलहोगल
जिला-बेलगाम (कर्नाटक)

नशामुक्त जीवन

इन्सान क्यों विवश हो जाता है नशे से,
क्यों हो जाता अपनों से दूर,
सब जानते, सब समझते हुए,
क्यों नहीं जी सकता नशामुक्त जीवन।।

क्या विवशता है, क्या है इस नशे में विशेषता
जो अपने रोम-रोम में इसे समा लेता है,
दिन हो या रात, नशे में मग्न रहता है,
छोड़ने की चाहत होती है, पर छोड़ नहीं पाता है।।

क्या यह नशा माँ की ममता,
पिता के दुलार, पत्नी के प्यार
और बच्चों के स्नेह
से भी ज्यादा अच्छा है।।

क्यों रुला देता वह अपने अपनों को
केवल बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू
शराब और गुटखा की खातिर
जो केवल एक स्वाद मात्र है।।

सोच कर बड़ी तकलीफ होती है,
कि आदमी कितना बेबस और लाचार है,
जिन्दगी सामने होते हुए भी
मौत को गले लगा लेता है।।

नासमझ नशा केवल दुःख है
पर आदमी उसे अपनी खुशी के लिए करता है।
नशा जानलेवा दुश्मन है
पर आदमी उसे अपना दोस्त मान लेता है।
नशा असाध्य रोग है,
पर आदमी उसे गले लगा लेता है।
नशा असमय मृत्यु है,
पर मनुष्य स्वयं ही यमराज बन जाता है।

यह जीवन अनमोल है
क्यों नहीं मनुष्य, नशामुक्त जीवन जी पाता।
क्यों नहीं वह अपने जीवन को सुन्दर बनाता।
क्यों मनुष्य अपना जीवन नशे में है गंवाता।

● **लता पारख**
'प्रकाश कोठी', 9/26, अम्मानकोइ स्ट्रीट,
चेन्नई-600003

अणुव्रतों की सुनहल किरणें

जागो युवकों अब जागो, तुमको समय पुकारे,
अणुव्रत की ले मशाल अब, दूर करो अंधियारे....

मद्य मांस मदिरा में देखो, आज समाज घिरा है,
नैतिकता को परे धकेले, मानव आज गिरा है,
आज बिलखती मानवता को, तुम बिन कौन संवारे....

झूठे अहं प्रदर्शन से, अब बाज नहीं वो आता,
शादी-ब्याह जन्मदिन मानो आडम्बर बन जाता,
सूत्र विसर्जन का सिखलाता, कैसे बने सहारे....

चारों ओर बढ़ी है हिंसा, त्राण नजर नहीं आए,
ऐसे गहन तिमिर में बोलो, शरण कहां कोई पाए,
तब सौंपे गुरुवर ने तुमको, अणुव्रत दीप उजारे....

फिर जगने की वेला आई, देखो 'रवि' मुस्काए,
अणुव्रतों की सुनहल किरणें, देखो तुम्हें जगाए,
नया जोश हो, नई उमंगें, फिर हो नई बहारें....

● **रवि बोथरा, *रॉयल टच***
मां दुर्गा शॉपिंग कॉम्पलेक्स, धुलाबारी (नेपाल)

सद्गुणों के मोती बटोरकर

सादगी एक ऐसा गहना है
जिसे गुणीजनों ने पहना है
सादा जीवन उच्च विचार का
जग में स्थान बहुत ऊंचा है।
संयम त्याग धारण करने से
काया-कल्प हो जाता है
'जियो और जीने दो', नारा
सुख-शांति का प्रदाता है।
क्रोध से काम बिगड़ जाते हैं
क्षमा भाव में अपार क्षमता है
सद्गुणों के मोती बटोर कर
जीवन-सूत्रों में लाना है।
अनाचार नरक का द्वार है
स्वर्ग की राहें सदाचार हैं
धर्म के पथ के पथिक को
अधर्म सुहाता नहीं तनिक है।

● **हुकमचंद सोगानी**
श्रीपाल प्लाजा, द्वितीय माला, फ्लैट नं. 201,
महावीर मार्केट, नई पेठ (उज्जैन-म.प्र.) 456006

मर्यादित और सुखी परिवार की कसौटी

कनक बरमेचा

कल-कल बहती सरिता ने तट से कहा ''मैं पूरे दिन तुमसे अठखेलियां करती हूं, कभी मंद तो कभी तेज धाराओं से तुम्हें छेड़ती हूं पर तुम तो कभी भी मुझ से खुश होकर अपना दिल बड़ा नहीं करते, मुझे विस्तार नहीं देते।'' तट ने कहा ''प्रिय, जब तक मैं मर्यादा में हूं तुम्हें अनुशासनहीन नहीं होने दूंगा, क्योंकि जिस दिन मेरी मर्यादा टूटी और तुम अनुशासनहीन बनी, उसी दिन तुम जीवनदायिनी नहीं बल्कि जीवनभक्षिणी बन जाओगी।'' यह महत्ता है मर्यादा और अनुशासन की। **मर्यादा और अनुशासन हमारी सभ्यता, संस्कृति, समाज एवं परिवार को सुरक्षित रखने वाला परकोटा है।** तेरापंथ धर्मसंघ को विश्व में महिमा मंडित करने वाला पर्व है मर्यादा महोत्सव।

मर्यादा और अनुशासन को व्यवहार में स्थापित करने वाले आचार्य भिक्षु को प्रणाम। मर्यादा को महोत्सव का रूप देकर उसे दुनिया का अनुपम महोत्सव बनाने वाले जयाचार्य को प्रणाम। एक आचार्य, एक विचार एवं एक आचार की तर्ज पर मजबूत संगठन की मिसाल पेश करने वाले धर्मसंघ के वर्तमान आचार्य महाश्रमण को प्रणाम। अनुशासन और मर्यादा के आधार पर जन-जन का प्राण और त्राण बनने वाला धर्मसंघ है तेरापंथ।

इस संघ में एक नहीं अनेक ऐसे उदाहरण मिल जाएंगे, जो अनुशासन एवं मर्यादा का बोध पाठ आने वाली पीढ़ी को देते रहेंगे। बात चाहे कुछ हाथ कपड़ा अधिक लेने की हो या फिर टोकसी भर पानी की। आचार्य भिक्षु एवं उत्तरवर्ती आचार्यों ने बड़े मनोवैज्ञानिक ढंग से अनुशासन का प्रशिक्षण संघ को दिया। यही कारण है कि पीढ़ी दर पीढ़ी संचित ये गुण इस संघ की सुषमा को पूरे विश्व में महका रहे हैं।

उपरोक्त चित्र है एक धर्मसंघ का, पर एक दूसरा चित्र भी हमारे सामने है हमारे समाज का। **रात को घर देर से लौटने वाली कन्या मां-बाप के द्वारा उपालंभ मिलने पर सुबह आत्महत्या कर लेती हैं। बहू ससुराल की दहलीज पर कदम रखने से पहले ही अपना-अलग घर बसाने का सपना लेकर आती है। पुत्र, पिता के साथ परम्परागत व्यवसाय में नहीं जुड़ सकता, मां को बेटी का ससुराल स्वतंत्र विचारों वाला चाहिए।** सारांश सभी जगह स्वच्छंदता प्रमुख एवं अनुशासन गौण। अगर यही विचारधारा सबकी रही तो आने वाला समय कसौटी भरा होगा, कहां मिलेगा हमें त्राण, कैसे टिकेगा परिवार में मर्यादा और अनुशासन।

अगर आपको सूर्य का प्रकाश लेकर तेजस्वी बनना है तो उसका ताप भी सहना पड़ेगा। अगर आप जीवन को सत्य, शिव और सुंदरता से परिपूर्ण बनाना चाहते हैं तो आत्मानुशासन और मर्यादा को जीवन में स्थापित करना पड़ेगा। जीवन में मर्यादा व अनुशासन के संस्कार देने की पहल आपको ही करनी है। इसके लिए जरूरी है

- परिवार में हो रहे गलत के प्रति उपेक्षा भाव न हो।
- बच्चों को निषेध की भाषा का भी ज्ञान कराएं।
- ''आज कल हर कोई ऐसे ही करता है'', ''क्या करें समय ही ऐसा है''

ऐसा सोचकर युवाओं व बच्चों की उचित अनुचित हर मांग को पूरा न करें।

- मर्यादा और अनुशासन का व्यावहारिक प्रशिक्षण बच्चों को हर कदम पर देते रहें।

यदि हम ऐसा करते हैं तो हमारा परिवार भी मर्यादित व सुखी परिवार बनेगा।

अर्हम् दीप अपार्टमेन्ट, रामदर्शन सोसायटी
न्यू सिविल रोड, सूरत-395002

लघुकथा

सच्ची आध्यात्मिकता

थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना करने वाली रूसी महिला हेलन पेत्रेव्ना ब्लावात्स्की ने पूरी दुनिया की सैर की और इस घुमक्कड़ी में एक थैला हमेशा उनके साथ होता था। इस थैले में भरे होते थे रंग-बिरंगे, ख़ुशबूदार फूलों के बीज। मेडम ब्लावात्स्की जहाँ कहीं से भी गुज़रतीं और खाली ज़मीन पातीं वहीं वे फूलों के कुछ बीज मिट्टी में दबा देतीं। लोग उनसे पूछते कि जब ये बीज उगेंगे तथा पौधे बड़े होकर फूलों से लद जाएँगे तब आप तो यहाँ नहीं होंगी। आप उन फूलों की ख़ुशबू और रंगों का आनंद नहीं ले पाएँगी तो फिर क्यों जगह-जगह फूलों के बीज बोती फिरती हैं?

मेडम ब्लावात्स्की जवाब देतीं, ''यदि मैं इन फूलों को देखकर आनन्दित नहीं हो पाऊँगी तो क्या? आप सब तो इन फूलों को देखकर अवश्य प्रसन्न होंगे। अन्य जो लोग उस समय यहाँ आएँगे वे तो आनन्दित होंगे। फूल तो सब लोगों के लिए खिलेंगे और अपनी सुगंध बिखेरेंगे।''

सच जो लोग दूसरों के जीवन में आनंद भरने का प्रयास करते हैं वही महान हैं। ऐसा निष्काम कर्म ही सच्ची आध्यात्मिकता है।

● प्रेम नारायण गुप्ता
ए.डी.-26-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-110034

बदलते परिवेश में बिखरता अस्तित्व

साध्वी डॉ. कुन्दन रेखा

परिवर्तन शाश्वत है। भारतीय संस्कृति के बदलते परिवेश पर दृष्टिपात करें तो प्रारंभिक जन जीवन कृषि पर आधारित था। समय बदला, स्थितियां बदली और औद्योगिक युग का प्रारंभ हुआ; जिसकी चकाचौंध ने मनुष्य को विकास के साथ तनाव भी दिया। आज तो ग्लोबलाइजेशन के चलते सम्पूर्ण विश्व का कायाकल्प हो चुका है। विश्व चाहे एक बन चुका है, लेकिन विसंगतियां मनुष्य की मनुष्यता को छीन रही हैं। ऐसे वातावरण में अस्तित्व की पहचान और उसकी सुरक्षा आसान प्रतीत नहीं होती। वह अस्तित्व जो मनुष्य की अस्मिता की पहचान है। सम्यक ज्ञान और आचरण प्रधान है।

अपने मूल स्वरूप में रहना मनुष्य के अस्तित्व का सम्मान है। समाज के धरातल पर, मर्यादा के परकोटे में रहते हुए, स्वस्थ और सुंदर जीवन जीते हुए ऊंचाइयों का स्पर्श करना ही इसका सोपान है। जिसका फलित होगा नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा, मानवता के प्रति निष्ठा, संवेदनशीलता एवं स्वच्छ दर्पण सी पवित्रता। इन्हीं गुणों की विद्यमानता ही अस्तित्व की सुरक्षा का सही परिचायक हो, जो आज बिखरता सा नजर आ रहा है। आगमों में आत्मस्वरूप की दुर्लभता को बताते हुए कहा है

अप्पा चेव दमेयव्वो अप्पा हु खलु दुट्टमें।

अप्पा दंतो सुही होई, अस्सिंलोए परत्थय।।

आत्मा दमन करने योग्य है, दुर्दम है। आत्मा का संयम करने पर आत्म स्वरूप में उपलब्ध हो शाश्वत सुखों को प्राप्त किया जा सकता है। लेकिन वर्तमान में आत्म स्वरूप की बात को नजरअंदाज करते हुए असंयम की तरफ बढ़ता रुझान अस्तित्व के बिखराव का प्रमुख कारक है।

युग जिस दौर से गुजर रहा है उसे अर्थ प्रधान, वासना प्रधान एवं प्रतिद्वंद्वात्मक प्रधान जीवनशैली युक्त कहा जा सकता है। आज व्यक्ति के रूप में अनैतिक पथ का अनुसरण कर रहा है। विज्ञान के अद्भुत नजारों के बीच चकाचौंध की दुनिया में मानव मात्र भ्रमित हो रहा है। केवल बाहर की आंख ही नहीं, भीतर की आंख भी चुंधिया चुकी है। स्वार्थमय एवम व्यसनपरक, जिंदगी की दौड़ में अपने पराये के भेद को तो पहचानना कठिन है ही, बल्कि स्वयं की जिंदगी भी गटर व गंदे नालों में स्वाहा हो रही है। विषमता से समता का साम्राज्य लुट चुका है।

पदार्थवादी चेतना प्राणीमात्र को गुमराह बना रही है। अमेरिका आदि विकसित देशों का अनुसरण कर भारत भी विकास की दौड़ में अच्छाई के साथ बुराई का आलिंगन कर रहा है। भारतीयता को छोड़ आधुनिकता का जामा पहन कर पाश्चात्यकरण अपना रहा है। परिणाम मानवीयता संवेदनशीलता समाप्त हो रही है। स्वयं की अस्मिता को ताक में रखते हुए हिंसा, चोरी और झूठ का आलंबन ले रहा है। जिससे अनैतिकता और भ्रष्टाचार का ग्राफ बढ़ता जा रहा है। अपराध द्रौपदी के चीर की तरह बढ़ते हुए अंतहीन से प्रतीत हो रहे हैं। एक दिन में करोड़पति बनने का स्वप्न रोड़पति बनने की नौबत पैदा कर रहा है। असीमित इच्छाएं आकाशीय उड़ान भर रही है। भावनाएं बदल रही हैं। भाव-धाराएं अधोमुखी बन विचारों को प्रभावित कर रही हैं। इसे प्रस्तुत संदर्भ से समझा जा सकता है।

नवयुवक सम्राट् ने अपने वयोवृद्ध महामंत्री से प्रश्न करते हुए कहा महामंत्रीजी आपने हमारी तीन पीढ़ियों को संभाला है, देखा है। क्या आप बता सकते हैं कि सर्वश्रेष्ठ कार्यकाल किसका रहा? महामंत्री ने कहा सम्राट्। मैं यह तो स्पष्ट रूप से नहीं बता सकता कि किसका कार्यकाल कैसा रहा? पर हां एक घटना से उक्त प्रश्न समाहित हो सकता है। घटना ऐसी थी कि मैं एक समय आपके दादा के राज्यकाल में मेले में गया। वहां मुझे भीड़ में परिवार से बिछुड़ी एक युवती मिली, जिसे मैंने उसके परिवार तक सकुशल पहुंचा कर हर्ष का अनुभव किया। उस समय कन्या के पारिवारिक जनों ने हर्षित होते हुए मुझे 500 रुपये उपहार स्वरूप देने चाहे, जिसे मैंने लेने से साफ इन्कार करते हुए अपना कर्त्तव्य माना। इसे पश्चात आपके पिताश्री के शासन काल में उस घटना ने मेरे मन को विचलित कर दिया और सोचा काश वे रुपये अगर मैं स्वीकार कर लेता, तो आज वे रुपये मेरे बहुत काम आते और आज आपश्री के राज्यकाल में तो रुपये न लेने, साथ-साथ युवती को लौटाने का भी पश्चाताप कर रहा हूं। महाराज! क्षमा करें और आप स्वयं ही चिंतन करे कि किसका शासनकाल कितना प्रभावी रहा।

आज पुनः आवश्यकता है ठहराव की, पीछे मुड़कर देखने की। अल्पकालीन समय के लिए उपलब्ध अनमोल मानव जीवन कहीं खो न जाये। सांसे टूट न जाये। यमराज की दस्तक शरीर बल को

कमजोर न बना दे, उससे पहले जागने की। हर पल को सार्थक बनाने की। अतीत की यादें एवं भविष्य की कल्पनाओं में न उलझ वर्तमान में जीने की। बिखरते अस्तित्व को समेटने का साहस आज भी संभव है, यदि हो दृढ़ संकल्प, इन्द्रियों का संयम, मन और भावों की शुद्धि, अनासक्त चेतना का विकास और विचारों की पवित्रता। कहा भी है

समय की गड़गड़ाहट में खोता अस्तित्व,
धुएं की चपेट में रोता अस्तित्व,
व्रतों की शीतल चांदनी में भीगे यदि,
तो संभव है बिखराव में निखरता अस्तित्व।।

व्रत अंकुश है, जो बिना लगाम के घोड़े की तरह चंचल मन को स्थिर बनाता है। सम्यक जीवन यापन करने को प्रेरित करता है। व्रत वह शक्ति है, जो दुर्बलता को दूर कर मनुष्य को सबल बना देती है। जैसे बिना पतवार की नौका लहरों की चपेट में अपने अस्तित्व को जल की तह में विलीन कर देती है बिना अंकुश का हाथी मदोन्मत्त बन तबाही मचा देता है, वैसे ही व्रत के बिना मनुष्य का अस्तित्व बिखर कर अपने लिए एवं औरों के लिए भी खतरा पैदा कर सकता है, कर रहा है। उस खतरे से बचने हेतु व्रत संजीवनी बूटी है जो बेभान मनुष्य की बेहोशी को तोड़ती है।

व्रतों को सही रूप में प्रस्तुत करते हुए आज से 60 वर्ष पूर्व गणाधिपति गुरुदेव तुलसी ने एक टॉनिक दुनिया के हाथों सौंपा, जिसे 'अणुव्रत' के नाम से पहचान मिली। जिसकी गूंज राष्ट्रपति भवन से गरीब की झोपड़ी तक पहुंची। मानवीय मूल्यों की न्यूनतम आचार संहिता है 'अणुव्रत'। जैसे खेत की सुरक्षा का आधार है बाढ़, मकान की सुरक्षा का कवच है दीवार देश सुरक्षा की जिम्मेदारी है सुरक्षा बल पर, ठीक वैसे ही अनन्तशक्ति आत्मा की खुशहाली का महामंत्र है अणुव्रत। दहशत के युग में वरदान है अणुव्रत। अनैतिकता और भ्रष्टाचार के अंधेरे को दूर करने वाला प्रकाश है अणुव्रत। जिसने असीमित इच्छाओं के दरवाजों को बंद कर खुले गगन में जीने का नया अंदाज दिया। अपेक्षा बस इतनी है कि व्रतों को अपनायें। आनन्द, शान्ति और सुख का संसार बसायें। दीये से दीया जलाकर प्रकाशमय बन जाये। गुणों की छतरी हाथ में थामें बाहरी हवाओं से बचते हुए शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक स्वास्थ्य को प्राप्त कर हर्षायें। अपने स्वरूप में उपलब्ध हों तो बिखराव स्वतः समाप्त हो सकता है।

बदले युग की धारा - अणुव्रतों के द्वारा

अणुव्रत अनुशास्ता
युवा मनीषी आचार्य श्री महाश्रमण

का

शत-शत हार्दिक अभिवन्दन

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा
श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ महिला मंडल
डूंगरी (वलसाड़-गुजरात)

ढलती उम्र का प्राणवायु

शिवचरण मंत्री

जीवन के छः या छः से अधिक दशक पार कर चुके वरिष्ठजनों की मानसिक, पारिवारिक, सामाजिक, शारीरिक आदि परिस्थितयां भिन्न-भिन्न होती हैं। तदुपरांत वर्तमान अर्थप्रधान युग में इन वरिष्ठजनों को आर्थिक स्थिति पर चिंतन आवश्यक है। ढलती उम्र में किसी व्यक्ति की आर्थिक स्थिति उसकी प्राणवायु से कम महत्व की नहीं होती है।

वरिष्ठजनों में नौकरीपेशा, व्यवसायी, किसान, शिक्षित, अशिक्षित आदि कई वर्ग के लोग होते हैं। इस समुदाय के अल्पसंख्यक लोग जहां आर्थिक रूप से समृद्ध होते हैं वहीं अतिसंख्यक लोग अति समृद्ध होते हैं। सामान्यतः वरिष्ठ समुदाय को शारीरिक रूप से अशक्त होने के कारण अपनी शेष आयु पेंशन, प्रोविडेन्ट फंड, जीवन में पेट काट कर की गई बचत का ब्याज, किराया आदि से ही करनी होती है। पेट काट कर अतीव कष्ट से की गई ऐसी बचतें जहां बीस-तीस रुपयों से अधिक नहीं होती, वहीं दस-पंद्रह हजार रुपयों की मासिक पेंशन आज इसलिए महत्वहीन है कि मुद्रा का (रुपए) का बहुत अवमूल्यन हो गया है, महंगाई दिनोंदिन बढ़ती जा रही है, इस पर लगाम नहीं लग पा रही है। तदुपरांत पेंशन, बचत आदि के ये लाभ प्रत्येक व्यक्ति के पास उपलब्ध भी नहीं होते हैं। परन्तु जिनके पास बचत, पेंशन आदि के परिणाम है उन्हें भी अपनी यह राशि सुरक्षित रखनी जरूरी है।

अपनी मेहनत की कमाई को सुरक्षित रखना इसलिए आवश्यक है कि जब तक व्यक्ति व्यवसाय करता है, नौकरी करता है तब तक आय के साधनों के बढ़ने की और नौकरी में पदोन्नति की आशा होती है। परन्तु व्यवसाय न करने पर, सेवानिवृति पश्चात इन परिणामों की आशा करना व्यर्थ है।

बचत को सुरक्षित रखने के लिए यह आवश्यक ही नहीं अपितु अत्यावश्यक है कि लोभ, लालच, झांसे, भुलावे आदि में न आएं तथा जीवन में बड़ी कठिनाई से की गई बचत को सुरक्षित रखा जाये। खून-पसीने की कमाई राशि को इस आयु में संभाल कर रखना इसलिए भी जरूरी है कि व्यक्ति अपनी मृत्यु के समय को जहां नहीं जानता वहीं इस उम्र में बीमारी, दुर्घटना, सामाजिक दायित्वों में वृद्धि से भी बचत की अपेक्षा खर्च अधिक होता है। अतः बचत यथासंभव सुरक्षित रखी जाये।

मैं कतिपय निम्न उदाहरणों से उक्त कथन को स्पष्ट करना चाहूंगा

मेरे एक परिचित सज्जन गत दिनों राजकीय सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए। उनका छोटा भाई ठेकेदारी (मकान बनाने) का काम करता था। छोटे भाई ने समझा बुझाकर बाजार की ब्याज का लोभ देकर रुपये ले लिये। सालभर तक छोटे भाई ने बड़े भाई को ब्याज के साथ-साथ लाभांश भी दिया। सालभर बाद ब्याज, लाभ में ना-नुकर चली और दो साल बाद सगे छोटे भाई ने बड़े भाई को ठेंगा दिखा दिया। आज पैंसठ वर्षीय मेरे परिचित कोर्ट के चक्कर लगा रहे हैं।

गांव में रहने वाले नाथूलाल ने अपनी ढलती उम्र में अपनी जीवनभर की कमाई बैंक, पोस्ट ऑफिस की जमा राशियां अपने श्वसुर के कहने से अपनी सारी पूंजी शहर में कपड़े के व्यवसाय में इस शर्त पर लगा दी कि ससुर ने उनको उनकी पूंजी का ब्याज, दुकान पर बैठने का वेतन व लाभ दिया जाएगा। एक दिन दुर्घटना में नाथूलाल की मृत्यु हो गयी। कुछ दिनों तक बूढ़े ससुर ने अपने नातियों को ब्याज आदि दिया। पर ससुर भी मर गया तो मामा-भान्जों में विवाद शुरू हो गया। आज नाथू के बेटे दुर्गेश के पास अपने पिता के द्वारा दिए गए पैसे का कोई ठोस प्रमाण नहीं है।

सविता ने अपनी सेवानिवृत्ति के समस्त परिलाभ बैंक के सावधि खातों में अपने तथा पति के नाम जमा करवा दिए और वसीयत में लिखा कि मेरी परिसम्पत्ति मेरे मरणोपरांत मेरी दोनों बेटियों में समान रूप से बांट दी जाये। सविता यकायक हार्ट अटैक में चल बसी। सविता के पति ने उसकी सम्पत्ति का आधा भाग बड़ी बेटी को तो दे दिया परन्तु छोटी बेटी को सविता की परिसम्पत्ति का आधा भाग यह कहकर मना कर दिया कि उसका हिस्सा सामाजिक कार्य के समय दे दिया जायेगा। परिणामतः बाप-बेटी में मन-मुटाव के साथ न्यायपालिका के दरवाजे खटखटाने की भी तैयारी हो चुकी है।

उपरोक्त उदाहरणों के सिवाय कई और भी उदाहरण हो सकते जिसमें ढलती उम्र में जीवन का प्राणवायु अर्थ कोई रिश्तेदार, दोस्त, जालसाज, पाखण्डी अपनी बातों में फंसा हड़प न लें इसके लिए वृद्ध को बहुत सावधान, सतर्क रहना चाहिए। लोभ-लालच को छोड़कर अपनी प्राणवायु-सा अर्थ संग्रह को अन्तिम क्षण तक यथावत रखना चाहिए क्योंकि मानव को अन्तिम सांस का कोई पता नहीं होता है, वहीं दुर्घटना हो जाने का भय भी बना रहता है।

प्राणवायु सी जीवन की बचत को जीतेजी सदुपयोग, सत्कार्यों के साथ-साथ अपने असहाय, असमर्थ और जरूरतमंद परिजनों की आर्थिक सहायता अपनी सामर्थ्यानुसार यह सोचकर करनी चाहिए कि दी गयी राशि वापिस नहीं आयेगी।

अंततः एक तथ्य और आवश्यक है ढलती उम्र का प्राणवायु बचत के लिए अपनी वसीयत लिखना अच्छा है। किन्तु वसीयत को साकार करना, लागू करना उत्तराधिकारियों की सद्भावना पर निर्भर करता है। क्योंकि विष भरे घड़े में दूध की एक बूंद का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, परन्तु विष की एक ही बूंद पूरे घड़े के दूध को विष बना देती है।

श्रीनगर (अजमेर-राजस्थान) 305025

सबसे आवश्यक है पानी का सदुपयोग

मेघराज जैन

आज जलवायु परिवर्तन ने पूरे विश्व के प्रबुद्ध जनमानस को चिंतित कर रखा है। इस जलवायु परिवर्तन का मुख्य कारण मनुष्य की जीवन शैली और विकास के तौर-तरीकों से उत्पन्न हुई परिस्थितियां हैं। पृथ्वी के तापमान में लगातार वृद्धि हो रही है, जिससे समूचे विश्व में उष्णता बढ़ रही है। लगभग सभी हिमनद यानी ग्लेशियर पिघल रहे हैं। बर्फ पिघलने की रफ्तार बढ़ने से हिमनद छोटे होते जा रहे हैं, जिससे नदियों का स्वरूप ही बदल रहा है।

जीवन को अधिक से अधिक आरामदेह बनाने की होड़ में कार्बन-डाई-ऑक्साइड और अन्य गैसों का भंडार हमारे वायुमंडल में इतना अधिक हो गया है कि पृथ्वी की उष्मा निकलकर अंतरिक्ष में उतनी नहीं जा पा रही है जितनी पहले जाती थी। इन गैसों को ग्रीन हाऊस गैस कहा जाता है। वास्तव में 30 से ज्यादा ऐसी गैसें हैं जिन्हें ग्रीन हाऊस गैसों की श्रेणी में रखा जा सकता है, लेकिन इनमें कार्बन-डाई-ऑक्साइड और मिथेन को सबसे हानिकारक माना जाता है।

हम जो सांस छोड़ते हैं, वह कार्बन-डाई-ऑक्साइड ही है। चूल्हा जलाने से निकलने वाला धुआं भी कार्बन-डाई-ऑक्साइड है। लेकिन पेड़-पौधे सूरज की रोशनी में इस गैस को सोख लेते हैं। इसी वजह से हजारों सालों से कभी वातावरण में कार्बन-डाई-ऑक्साइड बढ़ने की समस्या पैदा नहीं हुई। लेकिन औद्योगिक सम्पदा यह समस्या अपने साथ लेकर आई। जिससे बड़ी मात्रा में ग्रीन हाउस गैसें निकल रही हैं और दूसरी तरफ जंगलों को वृक्षों के स्थान पर कंक्रीट में बदलने का क्रम रोके नहीं रूक पा रहा है।

पानी हमारी बुनियादी आवश्यकता है। पीने के साथ-साथ घरेलू कामों, साफ-सफाई, सिंचाई, उद्योग, बिजली उत्पादन आदि में भी इस्तेमाल होता है। कहने को तो ब्रह्माण्ड का दो-तिहाई भाग पानी है। लेकिन उपयोग योग्य पानी की उपलब्धाता लगातार कम होती जा रही है। समूचे विश्व में भविष्य की सबसे बड़ी गंभीर समस्या यही होगी।

ओजोन परत में छेद होने की आशंका भी एक बड़ी चिंता है। यह खतरा सी.एफ.सी. की बढ़ती मात्रा से पैदा हुआ। यह औद्योगिक गैसें हैं जो मुख्य रूप से रेफ्रिजरेटर और एयर कंडीशनरों से निकलती है। शायद आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि सी.एफ.सी. का एक कण कार्बन-डाई-ऑक्साइड के एक कण से दस हजार गुना ज्यादा खतरनाक होता है।

ताजा सर्वेक्षणों से पता चला है कि समुद्रों में ऐसे क्षेत्रों का विस्तार हुआ है जहां ऑक्सीजन की मात्रा बहुत कम है। ग्लेशियरों के लगातार पिघलने से समुद्रों में बसे कई टापू तथा किनारे की बस्तियां समुद्र में डूबती जा रही हैं। ऑक्सीजन की कमी के कारण समुद्र के भीतर रेगिस्तान बन रहे हैं अर्थात् इन जल-क्षेत्रों में जीव और वनस्पति का उत्पादन बंद होता जा रहा है। इस कारण मछलियों की संख्या घट जाने की संभावना है।

ग्रीन हाऊस गैसों के प्रभाव से समुद्र और नदियों की दशा और दिशा बदलने के साथ-साथ वर्षा की मात्रा और समय में भी बदलाव आने की आशंका है। जिससे बाढ़, सूखा, तूफान जैसी प्राकृतिक आपदाओं का प्रकोप और प्रभाव व्यापक हो सकता है।

पानी हमारी बुनियादी आवश्यकता है। पीने के साथ-साथ घरेलू कामों, साफ-सफाई, सिंचाई, उद्योग, बिजली उत्पादन आदि में भी इस्तेमाल होता है। कहने को तो ब्रह्माण्ड का दो-तिहाई भाग पानी है। लेकिन उपयोग योग्य पानी की उपलब्धता लगातार कम होती जा रही है। समूचे विश्व में भविष्य की सबसे बड़ी गंभीर समस्या यही होगी।

हम पानी का सदुपयोग कम, दुरुपयोग अधिक करते हैं। दूसरे शब्दों में पीते कम हैं, बर्बाद ज्यादा करते हैं। अतः आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है कि हमारा विवेक जागृत हो। इस समस्या से तभी निपटा जा सकता है जब हम पानी को बर्बाद होने से बचाएं एवं पानी का सदुपयोग करें। इस प्रकार हम आने वाली पीढ़ी के लिए पानी को बचाते हुए सही दिशा में अपने सार्थक कदम उठाएं।

वस्तुतः यह पृथ्वी मनुष्य की जरूरतें पूरी करने में सक्षम है, किन्तु उसके लालच को पूरा नहीं कर सकती। नदी को मां मानने और उनके जल को संरक्षित करने की परम्परागत मान्यता का भी उपयोग जल स्त्रोतों के संतुलित प्रबंधन के लिए किया जा सकता है। आज उन प्रथाओं को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है, जिनमें व्यक्ति का प्रकृति के साथ भावात्मक रिश्ता जुड़ता था और वह प्रकृति की रक्षा को अपना धर्म मानता था।

सचिव, जैन ग्रंथागार
चांदनी चौक दिल्ली-6

बढ़ें संयम पथ पर

INDUSTRY • COMMERCE • WELFARE
Golchha Organisation

लोकमान्य गोल्छा

अध्यक्ष
गोल्छा ऑर्गेनाइजेशन
एवं
समस्त गोल्छा परिवार

गोल्छा हाउस, काठमांडो (नेपाल)

फोन नं. : 4250001/4249939 (D)

फैक्स : 00977-1-4249723

अहिंसा यात्रा का प्रथम पड़ाव लूणासर

आचार्य महाश्रमण का मेवाड़ की ओर प्रस्थान

राजलदेसर, 14 फरवरी। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने अपने संक्षिप्त उद्‌बोधन में कहा 'मैं पूज्य आचार्य महाप्रज्ञ की अहिंसा यात्रा के द्वितीय चरण की संपूर्ति के लिए उद्यत हो रहा हूं, इसका मुझे आत्मतोष है। गुरुद्वय के द्वारा प्रारंभ किए गए कार्यों को आगे बढ़ाना मेरा दायित्व है। प्रभु महावीर, आचार्य भिक्षु, आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ को श्रद्धा के साथ स्मरण करता हुआ मैं उसी मंत्र को समुच्चारित कर रहा हूं जिसका पाठ सुजानगढ़ में सन् २००१ में अहिंसा यात्रा का प्रारंभ करते हुए पूज्य आचार्य महाप्रज्ञ के पावन सान्निध्य में मैंने किया था।'

'ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं सिद्धाणं सूरीणं उवज्झायाणं साहू य...' को तीन बार समुच्चारित करते हुए आचार्य महाश्रमण ने महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा आदि साध्वियों को अभिवादन किया तथा रत्नाधिक संतों के प्रतीक मंत्री मुनि सुमेरमल की चरण वंदना की। पूज्यप्रवर के मंगलपाठ के पश्चात 'अहिंसा यात्रा सफल हो' के घोष से वातावरण गुंजित हो उठा।

आचार्यप्रवर ने मार्ग में सेवा केन्द्र में वृद्ध साध्वियों को दर्शन दिए तथा उनकी मंगलभावना को स्वीकार किया।

अहिंसा यात्रा का प्रथम पड़ाव

आज 5.3 किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर लूणासर गांव में पधारे। यहां उनका प्रवास शहीद भगवानसिंह उच्च माध्यमिक विद्यालय में रहा। प्रातःकालीन कार्यक्रम में कन्यामंडल ने गीत का संगान किया। विजयसिंह सुराणा, दिलीप दूगड़, गोविन्दराम पुरोहित एवं स्थानीय विधायक राजकुमार रिणवा ने पूज्यवर की अभिवंदना में अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने राजलदेसर और उसके परिपार्श्व में चल रहे अणुव्रत के कार्यों की अवगति दी।

आचार्य महाश्रमण ने कहा 'राजलदेसर में मर्यादा महोत्सव की सानंद संपन्नता के पश्चात हमने अहिंसा यात्रा प्रारंभ की और उसका पहला पड़ाव लूणासर में हुआ। पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा ५ दिसम्बर २००१ को सुजानगढ़ से प्रारंभ की गई अहिंसा यात्रा अनेक प्रान्तों में चली एवं वह बहुत प्रभावशाली और सफल रही। उस यात्रा के दौरान घोषित मेवाड़ और मारवाड़ के कार्यक्रम स्वास्थ्य आदि कारणों से स्थगित करने पड़े। आचार्यश्री के महाप्रयाण के बाद मैंने अवशिष्ट यात्रा को पूरा करने का निर्णय लिया और आज फिर उसे प्रारंभ कर रहा हूं। अनुकंपा की चेतना का विकास अहिंसा यात्रा का घोषित मुख्य लक्ष्य है।' कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उपस्थित विद्यार्थियों ने नशामुक्त रहने का संकल्प स्वीकार किया।

पीपल के नीचे प्रवचन

15 फरवरी। लूणासर से प्रस्थान कर आचार्य महाश्रमण ने जय माँ करणी गोशाला होते हुए पड़िहारा की ओर प्रस्थान किया। मार्गवर्ती रतनादेसर में आचार्यप्रवर ने पीपल वृक्ष के नीचे गांव के लोगों को संबोधित किया। पूज्यवर की प्रेरणा से अनेक ग्रामीणों ने नशामुक्त रहने का संकल्प स्वीकार किया। गणपतराम चौधरी के अनुरोध पर आचार्यप्रवर ने उनके घर का स्पर्श किया।

पड़िहारा में भव्य स्वागत

लगभग साढ़े दस किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर भव्य जुलूस के साथ पड़िहारा पधारे। यहां उनका प्रवास प्रज्ञा भवन में हुआ। ग्राम पंचायत के अध्यक्ष जगजीत सिंह आदि गणमान्य लोगों ने आचार्य महाश्रमण की अगवानी की। प्रातःकालीन कार्यक्रम में समता बैंगानी और कन्यामंडल की कन्याओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। सभा के अध्यक्ष धर्मचन्द गोलछा एवं ग्राम पंचायत के सरपंच जगजीतसिंह ने पूज्यवर के स्वागत में अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए।

आचार्य महाश्रमण ने कहा 'जीवन में सबसे बड़ा और ऊंचा स्थान है सत्य का। सत्य पर जो गहरी और अविचल आस्था रखता है, वह जीवन में आने वाली हर तरह की कठिनाइयों से पार पा लेता है। सत्य के लिए जो प्राणों का भी मोह नहीं करते, वे महापुरुष होते हैं।'

आचार्य महाश्रमण ने आगे कहा 'परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने पड़िहारा के लिए एक महीने का प्रवास घोषित किया था, वे उस समय सीमित क्षेत्र में विचरण कर रहे थे। किन्तु मैं तो अभी असीम रहना चाहता हूं। फिर भी यथासंभव गुरु-वचनों को किसी न किसी रूप में पूरा करने का प्रयास रहेगा।' प्रवचन के पश्चात साध्वी चन्दनबाला और लुधियाना के कमल नौलखा ने दिवंगत साध्वी जतनकुमारी 'कनिष्ठा' के संदर्भ में अपने विचारों को अभिव्यक्ति दी।

16 फरवरी। पड़िहारा से लगभग ग्यारह किमी. का विहार कर आचार्य महाश्रमण रणधीसर पधारे। यहां प्रवास राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में रहा। प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्य महाश्रमण ने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा 'मैं तपस्या से अधिक ऋजुता को महत्त्व देता हूं। जो ऋजु होता है, वह सबको प्रिय होता है। साधु माया से मुक्त होता है। माया से चित्त की मलिनता बढ़ती है। सरलता माया को तिरोहित करती है। आचार्य महाश्रमण ने प्रसंगवश मुनि छोगालाल का स्मरण किया, जो रणधीसर में दिवंगत हुए थे।

प्रवचन के पश्चात पूज्य आचार्यप्रवर ने नोखा में दिवंगत साध्वी मोहनाजी का संक्षिप्त परिचय दिया।

कालूगणी की जन्मभूमि में

17 फरवरी। रणधीसर से साढ़े दस किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर अष्टमाचार्य पूज्य कालूगणी की जन्मभूमि छापर पधारे। पूज्यप्रवर ने सर्वप्रथम सेवाकेन्द्र में वृद्ध संतों को दर्शन दिए। सेवाकेन्द्र के निवर्तमान व्यवस्थापक एवं नवनियुक्त सेवाकेन्द्र व्यवस्थापक शासन गौरव मुनि ताराचन्द एवं मुनि सुमतिकुमार ने सहवर्ती संतों के साथ आचार्य प्रवर का स्वागत किया।

सेवाकेन्द्र में वृद्ध संतों की सुखपृच्छा के पश्चात आचार्यप्रवर नवनिर्मित आचार्य महाप्रज्ञ शिशु वाटिका आदर्श विद्या निकेतन में पधारे। यह विद्यालय हनुमानमल सिंघी द्वारा प्रदत्त भूमि पर स्व. कन्हैयालाल दुधोड़िया परिवार द्वारा निर्मित है। विद्यालय परिसर में आयोजित एक संक्षिप्त लोकार्पण कार्यक्रम में इन्द्रचन्द दुधोड़िया ने पूज्यप्रवर से मंगलपाठ श्रवण कर विद्यालय का लोकार्पण किया। छात्र- छात्राओं ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। महिला मंडल की बहनों ने स्वागत गीत एवं विद्यालय की छात्राओं ने अणुव्रत गीत का संगान किया। स्थानीय विधायक राजकुमार रिणवा, नगर पालिकाध्यक्ष सुनीता पारीक, अ. भा. तेयुप के अध्यक्ष गौतमचंद डागा, इन्द्रचन्द दुधोड़िया एवं

हिंसा का मूल कारण है मोह कर्म की प्रबलता

मुनि आलोककुमारजी ने पूज्यप्रवर की अभिवंदना में अपने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त किए। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभागीय प्रचारक योगेन्द्रकुमार ने आचार्य महाश्रमण का स्वागत करते हुए ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु विद्यालय की संस्थापना करने वाले सिंघी एवं दुधोड़िया परिवार का आभार व्यक्त किया।

गत दो वर्षों से सेवाकेन्द्र में सेवारत मुनि आलोककुमार ने सेवा संपन्नता के अवसर पर अपने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त करते हुए सेवाकेन्द्र से संबद्ध फाइल मुनि सुमतिकुमार को सौंपी। इस वर्ष से सेवाकेन्द्र का दायित्व संभालने वाले मुनि ताराचन्द के सहअग्रणी मुनि सुमतिकुमार ने पूज्यप्रवर के पावन सान्निध्य में सेवा दायित्व के हस्तान्तरण एवं स्वीकृति को अपने परम सौभाग्य के रूप में स्वीकार करते हुए पूज्य आचार्य महाश्रमण के मंगल आशीर्वाद की कामना की।

आचार्य महाश्रमण ने कहा 'छापर उस महान आचार्य की जन्मभूमि है, जिसने आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जैसे दो युगप्रधान आचार्यों को दीक्षित और शिक्षित किया। इसलिए यहां आने पर महामना आचार्य कालूगणी की पुण्यस्मृति स्वतः हो जाती है।'

अहिंसा यात्रा के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए आचार्यप्रवर ने कहा 'हिंसा का मूल कारण है मोह कर्म की प्रबलता। काम और क्रोध की वृत्ति भी हिंसा के लिए प्रेरित करती है। धन और सत्ता का लोभ भी व्यक्ति को हिंसा की दिशा में ले जाता है। अभाव और गरीबी भी इसका एक कारण है। हिंसा से बचने के लिए इन वृत्तियों पर अंकुश बहुत जरूरी है। अहिंसा यात्रा का मुख्य उद्देश्य है अनुकंपा की चेतना का विकास। अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है। अहिंसा जीवन में उतर जाए तो मनुष्य हर तरह की पापकारी प्रवृत्ति से बच सकता है।'

नवनिर्मित विद्यालय के संदर्भ में आचार्य महाश्रमण ने कहा 'बच्चों को संस्कारवान बनाने में विद्यालय की बड़ी भूमिका हो सकती है। विद्यालय विद्या का मंदिर होता है, जहां विद्यार्थी और शिक्षक दोनों मिलकर सरस्वती की आराधना करते हैं। विद्या संस्थानों में बालक-बालिकाएं ज्ञानसंपन्न बनें, सुसंस्कारी बनें, आत्मनिर्भर बनें। अगर इन तीन अपेक्षाओं की संपूर्ति होती है तो विद्यालयों की स्थापना सार्थक है।'

सेवाकेन्द्र के दायित्व हस्तान्तरण के संदर्भ में आचार्य महाश्रमण ने कहा 'मुनि शासन गौरव मुनि ताराचन्द के प्रतिनिधि मुनि सुमतिकुमार ने नया दायित्व लिया है। छापर के लोगों ने इन्हें सराहा। अब आगे भी जहां जाएं, वहां अच्छा काम करें।

मुनि ताराचन्द धर्मसंघ के साधनाशील संत हैं। ये निस्पृहता और निवृत्ति के पथ पर बढ़ रहे हैं। मुनि सुमतिकुमार भी अच्छे युवा संत हैं। अब ये सेवाकेन्द्र के वृद्ध संतों को और छापर की जनता को संभालेंगे।' कार्यक्रम का संयोजन जयप्रकाश सोनी ने किया। आचार्यप्रवर का रात्रिकालीन प्रवास कालू कल्याण केन्द्र में रहा।

अहिंसा यात्रा उद्गम स्थली में

18 फरवरी। छापर से विहार कर पूज्य आचार्यप्रवर अहिंसा यात्रा की उद्गम स्थली सुजानगढ़ पधारे। नगर की जनता ने आचार्य महाश्रमण का भावभीना स्वागत किया। प्रवास तेरापंथ भवन में हुआ। मुनि सुखलाल ने अपनी जन्मभूमि में आचार्य महाश्रमण का अभिनंदन किया। मुनि रमेशकुमार ने भी पूज्यवर की अभिवंदना में अपने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त किए।

आचार्य महाश्रमण ने अपने उद्बोधन में कहा 'इस दुनिया में युद्ध और शान्ति का क्रम चलता रहता है। युद्ध समरांगण में बाद में लड़ा जाता है, सबसे पहले यह प्रकट होता है आदमी के दिमाग में। शत्रुता का भाव आते ही मस्तिष्क में भीषण झंझावात उठने लगता है और आदमी शस्त्र उठाकर मरने-मारने पर आमादा हो जाता है। साधना भी एक प्रकार का युद्ध है। इसमें शत्रु के रूप में होते हैं विजातीय तत्त्व काम, क्रोध, लोभ, मोह जैसे कषाय। साधना के लिए युद्ध से कहीं ज्यादा पराक्रम और पुरुषार्थ की अपेक्षा होती है, क्योंकि यहां केवल एक-दो शत्रुओं से नहीं, कई शत्रुओं से एक साथ लड़ना पड़ता है।'

आचार्य महाश्रमण ने आगे कहा 'हम अहिंसा यात्रा के साथ सुजानगढ़ आए हैं। पूज्य आचार्य महाप्रज्ञ ने अहिंसा यात्रा यहीं से प्रारंभ की और समापन भी यहीं किया। समापन नहीं, पड़ाव पर पहुंच कर विश्राम कहें। वह यात्रा अब फिर से प्रारंभ हो गई है और पूर्व घोषित क्षेत्रों तक पहुंचने वाली है।

आचार्य महाश्रमण ने आगे कहा 'कोई भी क्षेत्र हो, वहां के श्रावकों में परस्पर सौहार्द रहना चाहिए। तेरापंथी सभाएं कलह-कदाग्रह से सर्वथा मुक्त रहें। केन्द्र की ओर से जो भी सुझाव और निर्देश मिलें, उन पर ध्यान दिया जाए और उनकी क्रियान्विति हो। सुजानगढ़ श्रद्धा का विशिष्ट क्षेत्र है। संघ के प्रति समर्पित और निष्ठावान यहां अनेक श्रावक हुए हैं, अब भी हैं। शुभकरण दस्सानी यहीं के थे। वे गुरुदेव तुलसी के अंतरंग श्रावक थे। प्रसंगवश आचार्य महाप्रज्ञ उनका कई बार उल्लेख करते थे। मुझे भी कई बार उनसे बात करने का अवसर मिला। सुजानगढ़ के लोग अपनी समृद्ध विरासत का ध्यान रखेंगे।'

आचार्य महाश्रमण ने आगे कहा 'मुनि रमेशकुमार ने इस वर्ष सुजानगढ़ सेवाकेन्द्र में चाकरी की। निष्ठा से सेवा की। इनमें शासनभक्ति की भावना है। ये अच्छा काम करते रहें।'

शासन सेवा में संलग्न सुजानगढ़ के संतों का उल्लेख करते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा 'मुनि सुखलाल बहुत काम करने वाले, अणुव्रत की चिन्ता करने वाले संत हैं। भिक्षु वाङ्मय आदि अनेक कार्यों में आपका पूरा सहयोग है। मुनि सुमेरमल 'सुदर्शन' चिन्तन एवं समीक्षा करने वाले संत हैं। मुनि विजयकुमार गीतकार और साहित्यकार संत हैं। मुनि योगेशकुमार दीक्षा लेकर हमारे पास आए। अभी हमारी सेवा में हैं। अच्छा काम करने वाले युवा संत हैं। अ.भा. तेयुप के सहप्रभारी हैं। मुनि रिद्धकरण ने आचार्यप्रवर की सेवा की, हमारी भी सेवा की। अभी हमारे साथ आए हैं। मुनि राकेशकुमार भी यहीं के हैं और अभी दिल्ली में प्रवास कर रहे हैं।'

प्रवचन के पश्चात शोभादेवी ने ज्ञानशाला की रिपोर्ट श्रीचरणों में प्रस्तुत की। गौतम सेठिया ने 'अहिंसा उवाच' पुस्तक का अंग्रेजी और तमिल संस्करण उपहृत किया। चिकमगलूर प्रवासित गुड़ा रामसिंह का संघ श्रीचरणों में दर्शनार्थ उपस्थित हुआ। क्षेत्र के प्रायः सभी कार्यकर्ताओं ने आमेट महोत्सव के बाद पाली जिले के सभी क्षेत्रों को स्पर्श करने का पूज्यवर से भाव भरा अनुरोध किया।

www.terapanthinfo.com

शिक्षा का दान सबसे बड़ा दान

भिवानी, 11 फरवरी। अणुव्रत समिति भिवानी एवं निशांत बंसल मैमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट एवं अणुव्रत समिति द्वारा संयुक्त रूप से श्रीराम पाठशाला में बाल प्रतिभा सम्मान कार्यक्रम आयोजित हुआ। मुख्य अतिथि प्रतापसिंह नगराधीश ने कहा शिक्षा का दान सबसे बड़ा दान है। अध्यक्षता सुरेन्द्र जैन एडवोकेट ने की। समिति के अध्यक्ष डॉ. जे.बी. गुप्ता विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

सिटी मजिस्ट्रेट प्रताप सिंह ने कहा कमजोर वर्ग की मदद करके सामाजिक संस्थाएं अपना दायित्व निभा रही हैं और निशांत बंसल मैमोरियल ट्रस्ट जैसी संस्थाएं निशुल्क पाठशालाओं में सहायता करके तथा बच्चों की प्रतिभाओं को निखारकर बहुत अच्छा काम कर रही है। उन्होंने ट्रस्ट एवं समिति के कार्यों की प्रशंसा की और जिला प्रशासन की ओर से हर संभव मदद का आश्वासन दिया।

कार्यक्रम में जनसेवा विद्याविहार की ऋचा शर्मा, फूलादेवी स्कूल की ज्योति, के.एम. पब्लिक स्कूल की वंशिका, लिटिल हर्ट स्कूल की ऋतिका तथा श्रीराम पाठशाला के अनेक बच्चों ने अणुव्रत गीत, भजन एवं देशभक्ति के गीतों की प्रस्तुति दी। अनेक बच्चों ने योगासन का भी प्रदर्शन किया। जनसेवा विद्या विहार के छात्र रोहन एवं रजत का संगीत भी खूब सराहा गया। ट्रस्ट द्वारा श्रीराम पाठशाला की वार्षिक परीक्षा में सभी कक्षाओं के प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को प्रतीक एवं स्मृति-चिह्न द्वारा सम्मानित किया गया। सुलेख प्रतियोगिता के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त छात्र-छात्राओं को भी पुरस्कृत किया गया। ट्रस्ट द्वारा सामाजिक सेवाओं में उल्लेखनीय कार्य करने वाले युवा अशोक भारद्वाज को भी विशेष युवा प्रतिभा सम्मान से नवाजा गया। डॉ. जे.बी. गुप्ता ने पाठशाला के पुस्तकालय के लिए आर्थिक अनुदान देने की घोषणा की। ट्रस्ट द्वारा पाठशाला के सभी 250 विद्यार्थियों को शिक्षण सामग्री वितरित की गई।

इस अवसर पर प्रमोद मिंडूका, सतीश बैनीवाल, राजेन्द्र सुरेका, संगीता तगेजा, संजय तंवर, गुलशन बजाज, ममता शर्मा, सरोज कौशिक, सुनीता सैनी, अनिता शर्मा, हरिराम, सुनीता मेहरा, सन्नी अग्रवाल, कृष्णा वधवा, बबीता दूबे, ललिता बजाज, प्रतिभा श्योराण, ज्योति श्योराण, बालेन्दू पांडे, शिव कुमार, ऊषा तथा संतोष सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। कार्यक्रम का संयोजन अणुव्रत समिति भिवानी के मंत्री रमेश बंसल ने किया।

कविता लेखन प्रतियोगिता-२०१० के परिणाम

लाडनूं। जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूं के दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के अंतर्गत विगत कई वर्षों से विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता के विकास के लिए भिन्न-भिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन होता रहा है। सत्र 2009-2010 पत्राचार के विद्यार्थियों के लिए कविता लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। निदेशक डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने बताया उक्त प्रतियोगिता में योगेन्द्र कुमार शर्मा, भीलवाड़ा को प्रथम स्थान मिला है। अवधेश कुमार दवे, सोजत रोड़ को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ है। छात्रा पिंकी, सांचौर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया है। भारत शर्मा, मालपुरा ने चतुर्थ एवं जितेन्द्र जैन जोधपुर ने पांचवा स्थान प्राप्त किया है।

उक्त प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार 2100 रु., द्वितीय पुरस्कार 1500 रु., तृतीय पुरस्कार 1100 रु. और 500-500 रु. के दो सांत्वना पुरस्कार दिये जाते हैं। सभी सफल प्रतियोगियों को विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस समारोह में पुरस्कृत किया जायेगा। ध्यातव्य है कि प्रतियोगिता के परीक्षक डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, गिरीराज भोजक सहायक आचार्य शिक्षा विभाग एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की हिन्दी की प्राध्यापक डॉ. ममता खाण्डल थे।

सिलीगुड़ी में अणुव्रत कार्यक्रम एवं अध्यक्ष मनोनीत

सिलीगुड़ी। अणुव्रत महासमिति के महामंत्री विजयराज सुराणा के मुख्य आतिथ्य में अणुव्रत समिति सिलीगुड़ी के संयुक्त तत्वावधान में निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन हुआ। शिविर में लगभग 200 व्यक्तियों ने विविध बीमारियों का परीक्षण करवाया। मुख्य अतिथि विजयराज सुराणा ने कहा शारीरिक स्वास्थ्य जरूरी है, परन्तु उससे अधिक मानसिक स्वास्थ्य का होना ज्यादा जरूरी है। मानसिक संतुलन हेतु अणुव्रत एक रसायन है, अतः सभी अणुव्रत को अपनायें।

इस अवसर पर अणुव्रत समिति, सिलीगुड़ी के आगामी दो वर्ष के कार्यकाल हेतु अध्यक्ष पद पर करन सिंह जैन को मनोनीत किया गया। नव-निर्वाचित अध्यक्ष करन सिंह जैन ने नई कार्यसमिति की घोषणा निम्न प्रकार की

प्रथम उपाध्यक्ष	:	मेघराज सेठिया
द्वितीय उपाध्यक्ष	:	प्रमोद दूगड़
मंत्री	:	सुरेन्द्र घोड़ावत
सहमंत्री	:	अरुण सिद्धा
अर्थमंत्री	:	बच्छराज बोथरा
सह-अर्थमंत्री	:	संजय वर्मा
संगठन मंत्री	:	तोलाराम बोथरा
प्रचार-प्रसार मंत्री	:	रतन मालू

इसके अलावा अशोक गोलछा एवं अनिल गोलछा को संयुक्त रूप से अणुव्रत पत्रिका प्रभारी बनाया गया है। अध्यक्ष पद का चुनाव एवं कार्यकारिणी का गठन अणुव्रत महासमिति के महामंत्री विजयराज सुराणा के सान्निध्य में संपन्न हुई।

www.terapanthinfo.com

इंसानियत का पाठ पढ़ाता है अणुव्रत

नई दिल्ली। अणुव्रत प्रभारी मुनि राकेशकुमार ने उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी से भेंटवार्ता कर आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव एवं अणुव्रत आंदोलन की जानकारी दी। इस अवसर पर मांगीलाल सेठिया, के.के. जैन, हेमराज बैद, नरपत मालू उपस्थित थे। मांगीलाल सेठिया ने मुनिश्री का परिचय दिया। यह विचार चर्चा लगभग 30 मिनट चली विचार-चर्चा में उपराष्ट्रपति की विनम्रता, शालीनता और व्यवहार कुशलता ने सभी को आकृष्ट किया। मुनिश्री द्वारा अणुव्रत दर्शन की व्याख्या सुन उपराष्ट्रपति ने हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की।

मुनि राकेशकुमार ने अमृत महोत्सव की जानकारी देते हुए बताया आचार्य महाश्रमण दार्शनिक और अध्यात्मयोगी संत हैं। उनके पचासवें जन्मदिवस को सम्पूर्ण भारत में अमृत महोत्सव के रूप में मनाया जायेगा। जिसके चार-चरण निर्धारित हुए हैं। इसका प्रथम और मुख्य कार्यक्रम राजस्थान के उदयपुर संभाग के कांकरोली कस्बे में 12 मई को आयोजित किया जायेगा।

मुनिश्री ने अणुव्रत आंदोलन के संदर्भ में चर्चा करते हुए कहा आचार्य तुलसी ने नैतिक जागरण के लिए अणुव्रत आंदोलन का प्रारंभ किया। उसका एक घोष है 'इंसान पहले इंसान - फिर हिन्दू या मुसलमान'। अणुव्रत इन्सानियत का पाठ पढ़ाता है। इसके द्वारा समाज में नैतिकता, एकता का प्रचार-प्रसार किया जाता है। अणुव्रत दर्शन में संयम और अनुशासन पर बल दिया गया है। उसका एक सूत्र है 'निज पर शासन, फिर अनुशासन'। आज देश में भ्रष्टाचार, कालाबाजारी का मायाजाल फैल रहा है। उसका मुख्य कारण अनुशासन का अभाव है। मुनिश्री ने उपराष्ट्रपति को आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में चल रही गतिविधियों की जानकारी देते हुए आचार्यश्री की कृति ''लाइफ लैट अस लर्न टू लिव'' भेंट की।

उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी ने कहा आज मानव ने नाना प्रकार के विकास किये हैं किन्तु उसमें मानवता और नैतिकता का अभाव दिख रहा है। अणुव्रत के विचार राष्ट्र के लिए बहुत उपयोगी प्रतीत होते हैं। देश में फैल रही सांप्रदायिकता, भ्रष्टाचार व कालाबाजारी जैसी बुराइयों का समाधान ऐसे विचारों से ही संभव है। हमें अपने विचारों को व्यापक और उदार बनाना चाहिए। देश का हर नागरिक अणुव्रत के सिद्धांतों का पालन करे तो अधिकांश समस्याओं का समाधान स्वतः हो जायेगा। उन्होंने मुनिश्री के प्रति आभार व्यक्त किया। उपस्थित प्रतिनिधिमंडल ने उन्हें अणुव्रत साहित्य भेंट किया।

शिक्षिका-छात्रा संगोष्ठी

डाबड़ी। अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र डाबड़ी के तत्वावधान में रा.क.उ. प्रा. विद्यालय डाबड़ी में छात्रा-शिक्षिका संगोष्ठी का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि अवधेश कुमार ने गीत व प्रेरक उद्बोधन के माध्यम से ईमानदारी एवं नशामुक्त जीवन जीने की बात कही। अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र डाबड़ी के केन्द्र प्रभारी ने अहिंसा प्रशिक्षण में चल रहे कार्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला। विद्यालय की प्रधानाध्यापिका सुदर्शना ग्रोवर ने सभी के प्रति धन्यवाद व्यक्त किया। इस अवसर पर अन्य वक्ताओं ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन भवानी सिंह ने किया।

अणुव्रत समिति रायपुर

रायपुर, 19 फरवरी। अणुव्रत समिति रायपुर के अध्यक्ष जीतमल जैन के निर्देशन में क्षेत्र में अणुव्रत कार्यक्रमों का संचालन सुचारु रूप से किया जा रहा है। क्षेत्र में अणुव्रत आचार संहिता का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है एवं अणुव्रत संकल्प पत्र भी भरवाए जा रहे हैं। अणुव्रत महासमिति द्वारा प्रेषित बिजली बचाएं, पृथ्वी बचाएं, पानी बचाएं, पर्यावरण बचाएं इत्यादि स्टीकरों को स्थान-स्थान पर लगाया जा रहा है एवं लोगों के बीच वितरण किया जा रहा है। अणुव्रत पत्रिका के सदस्य भी बनाए जा रहे हैं। अणुव्रत समिति रायपुर के अधिकांश सदस्य प्रेक्षावाहिनी रायपुर में सम्मिलित हो प्रति रविवार प्रातः 10 बजे से 11 बजे तक अमोलक भवन में प्रेक्षाध्यान का अभ्यास करते हैं। अणुव्रत महासमिति द्वारा प्रेषित आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव 2011-2012 पंचसूत्रीय संकल्प पत्र क्षेत्र के लोगों से भरवाने प्रारंभ कर दिये गये हैं। साथ ही नशामुक्ति अभियान से संबंधित प्राप्त फोल्डर से संदेश बनाकर अनेक व्यक्तियों तक मोबाइल के माध्यम से पहुंचाया जा रहा है। कार्यक्रमों की आयोजना में गौतम गोलछा, सुरेन्द्र ओसवाल, सुनील जैन एवं कार्यकारिणी के सदस्य सहयोग दे रहे हैं।

महासभा द्वारा संबोधन-अलंकरण समारोह

राजलदेसर, 7 फरवरी। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में तेरापंथी महासभा कोलकाता द्वारा संबोधन-अलंकरण सम्मान पत्र समर्पण समारोह का आयोजन। इस कार्यक्रम में सन् २०१० में आचार्य महाप्रज्ञ एवं आचार्य महाश्रमण द्वारा प्रदत्त 'शासनसेवी', 'शासनभक्त', 'संघसेवी', 'समाधिनिष्ठ', 'तपोनिष्ठ', 'संस्कारनिष्ठ', 'महादानी', 'तत्वज्ञ', 'सौम्यमूर्ति', 'दृढ़धर्मिणी', 'श्रद्धानिष्ठ', 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति', 'कल्याणमित्र' आदि विशेष संबोधनों से संबोधित श्रावक-श्राविकाओं का सम्मान किया गया। महासभा के अध्यक्ष चैनरूप चंडालिया, निवर्तमान अध्यक्ष जसकरण चोपड़ा, प्रधान ट्रस्टी राजेन्द्र बच्छावत, उपाध्यक्ष प्रकाशचन्द बैद, ख्यालीलाल तातेड़, रतन दूगड़ आदि पदाधिकारियों ने स्मृतिचिह्न प्रदान कर २२७ संबोधन प्राप्तकर्ताओं को सम्मानित किया। महासभा के अध्यक्ष चैनरूप चंडालिया ने स्वागत भाषण करते हुए कार्यक्रम की प्रासंगिकता को रेखांकित किया। कार्यक्रम का संयोजन भंवरलाल सिंघी ने किया।

आचार्य महाश्रमण ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा 'समाज के श्रावक-श्राविकाओं के सद्गुणों, सेवाओं तथा समाज हित में किए गए कार्यों का अंकन करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ और मैंने समय-समय पर अलग-अलग संबोधन दिए हैं। ये संबोधन आत्मा के उत्थान की दिशा में प्रेरक का कार्य कर सकते हैं और संबोधन प्राप्तकर्ताओं को आत्मसाधना की दिशा में गतिशील कर सकते हैं। इन संबोधनों से जहां संबोधन प्राप्तकर्ताओं को सम्मान प्राप्त होता है, वहीं उन पर जीवन, समाज और संघ के प्रति उत्तरदायित्व भी आ जाता है। उनसे अपेक्षा होती है कि उनमें धर्म के प्रति अधिक आस्था पैदा हो तथा वे आत्मोन्नयन की दिशा में अग्रसर हों।'

आचार्यप्रवर ने आगे कहा 'संबोधन प्राप्तकर्ताओं के कार्यों को अंकित करके महासभा इतिहास रचती है। इस अवसर पर प्रकाशित पुस्तिका से संबोधन प्राप्तकर्ताओं की स्मृति बनी रहती है और समाज के लोगों को प्रेरणा मिलती है। महासभा मां के समान है, जो जागरूक होकर संतान का पालन-पोषण करती है और उसके विकास की चिंता करती है। मां की जागरूकता से संतान का विकास होता है तो संतान का भी दायित्व है कि वह मां का ध्यान रखे।'

www.terapanthinfo.com

अणुव्रत विज्ञ और विशारद परीक्षा संपन्न

सायरा। अणुव्रत समिति सायरा द्वारा पिछले 20 वर्षों से अणुव्रत जीवन विज्ञान के परीक्षा प्रभारी राजेन्द्र गौरवाड़ा के तत्वावधान में करवाई जा रही हैं। इस वर्ष 2010-2011 में रा.स.उ.मा.वि. सायरा में 135 छात्र व 4 शिक्षकों ने तथा मा.बा.वि. सायरा में 43 छात्राएं व रा.मा.वि. दीयारण में 65 छात्र-छात्राएं रा.उ.प्रा. ढीवोडा में 33 छात्राए, रा.प्रा.वि. काम्बा में 23 छात्राओं ने, कुल 302 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी। 'अणुव्रत सेवी' जसराज जैन, 'अणुव्रत सेवी' अध्यक्ष मीठालाल भोगर द्वारा विशेष प्रयत्न करने से प्रत्येक वर्ष आयोजन किया जाता है। साथ ही जीवन विज्ञान के भी कार्यक्रम करवाये जा रहे हैं।

हांसी में अणुव्रत परीक्षाएं

हांसी। अणुव्रत शिक्षक संसद राजसमंद द्वारा होने वाली अणुव्रत विज्ञ और विशारद की परीक्षाओं का आयोजन अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र हांसी के तत्वावधान में हांसी के विभिन्न स्कूलों में हुआ। जिसमें ममता पब्लिक स्कूल लाल सड़क, जेडी आर्य पब्लिक स्कूल, न्यू छोटूराम हाई स्कूल जमावड़ी एवं गुरु नानक देव पब्लिक स्कूल के छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक परीक्षा में भाग लिया। इन परीक्षाओं का मूल उद्देश्य है छात्रों में नैतिकता का विकास, साम्प्रदायिक एकता का समन्वय एवं पुरुषार्थ का विकास करना। कार्यक्रम के संयोजक अहिंसा प्रशिक्षक अवधेश कुमार थे। परीक्षाओं की आयोजना में संबंधित स्कूल के शिक्षक-शिक्षिकाओं एवं विद्यार्थियों का भावपूर्ण सहयोग रहा।

अणुव्रत समिति कोलकाता

कोलकाता, 22 फरवरी। अणुव्रत समिति कोलकाता की कार्यसमिति का आगामी दो वर्ष हेतु निम्नानुसार गठन हुआ

अध्यक्ष	:	श्री श्यामसुंदर चौरड़िया
उपाध्यक्ष	:	श्री जंवरीलाल नाहटा
	:	श्री सुशील चौपड़ा
	:	श्रीमती मंजू बाई सुराना
मंत्री	:	श्री सुरेन्द्र कुमार सेठिया
सहमंत्री	:	श्री नरेन्द्र कुमार लूणिया
	:	श्री प्रकाश कुमार डागा
कोषाध्यक्ष	:	श्री राजेन्द्र सुराना
सदस्य	:	श्री प्रकाश नाहर
	:	श्रीमती सुनीता सेठिया
	:	श्री गौतम दूगड़
	:	श्रीमती सरिता श्यामसुखा
	:	श्री प्रदीप सिंघी
	:	श्री पंकज दुधेड़िया
	:	श्री आदित्य रामपुरिया
	:	श्री रणजीत चौरड़िया
	:	श्री बुद्धमल लूणिया
	:	श्री सुशील चिण्डालिया
	:	श्री विजय सिंह बरमेचा
	:	श्री कमल कुमार कोठारी
	:	श्री रूपचन्द श्रीमाल

आमेट में अणुव्रत संगोष्ठी

आमेट। मुनि संजयकुमार के सान्निध्य में एवं राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष संपत श्यामसुखा की उपस्थिति में अणुव्रत संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इसमें धर्मचंद मुनोत, मनोहर बापणा, रामकरण चोरड़िया ने भाग लिया। धर्मचंद मुनोत ने अणुव्रत से जुड़ने व अन्य वर्गों में अणुव्रत के कार्य करवाने के सुझाव दिये। सम्पत श्यामसुखा ने सभी को साथ लेकर कार्य करने की बात कही। उपस्थित संभागियों का मानना था कि अणुव्रत ग्रहण करने वालों को आचार संहिता व अणुव्रत का उद्देश्य छपवाकर देने का रहा। ताकि अन्य लोगों को भी प्रेरणा मिले एवं अणुव्रती को हर समय नियम सामने दीखते रहें। क्योंकि पुस्तकों का इतना प्रभाव नहीं रहता। पुस्तकें घरों के एक तरफ कोने में पड़ी रहती हैं।

इस अवसर पर यह भी सुझाव आया कि अणुव्रत आचार संहिता परिपत्र में अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ, वर्तमान आचार्य महाश्रमण, अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष, महामंत्री के नाम होने चाहिएं। ताकि उनका प्रभाव पड़ सकें। साथ ही अणुव्रत के वर्गीय नियम यथा विद्यार्थी, व्यापारी एवं कर्मचारी नियम भी होने चाहिएं। इससे यह लाभ होगा कि अणुव्रत के सभी नियमों की जानकारी एक साथ मिल सकती है।

साहित्यकारों को आह्वान

राजलदेसर, 11 फरवरी। अणुव्रत लेखक पुरस्कार-2009 प्राप्त करते हुए सहारनपुर से पधारी वरिष्ठ साहित्यकार सुषमा जैन ने अपने स्वीकृत वक्तव्य में कहा यह पुरस्कार मुझे और अधिक दायित्व बोध का अहसास कराएगा। उन्होंने वर्तमान परिदृश्य पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि आज संकटों और चुनौतियों से जूझते भारत में सुख-समृद्धि व शान्ति के लिए अहिंसक मानसिकता वाले साहित्यकारों को ही अपने सांस्कृतिक हथियारों की धार को तेज करना होगा। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय राष्ट्र विकास का जो संकल्प पत्रकारों में उगा था वह स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् ही छिन्न-भिन्न हो गया। यही कारण है कि मीडिया तंत्र का एक बहुत बड़ा भाग मुनाफाखोरों के कब्जे में है। और मुनाफा केन्द्रित बाजार व्यवस्था के चलते टी.वी. आदि द्वारा प्रसारित अश्लील विज्ञापन और कार्यक्रम हमारे नौनिहालों की जिन्दगी को लील रहे हैं।

उन्होंने राजनीतिक पतन का कारण भी मीडिया को बताते हुए कहा पत्रकारिता में आई गिरावट के कारण ही सदन जैसे गरिमामय स्थान बाहुबलियों के अड्डे बनते दिखाई दे रहे हैं। कुछ पत्रकार और साहित्यकार भ्रष्टतम नेताओं को भी अपना मसीहा और पैगम्बर बनाने पर तुले हुए हैं, इनमें से कुछ तो सत्ता में भी स्थापित हो चुके हैं और कुछ स्थापित होने की कौशिश में हाथ-पांव मार रहे हैं। इसलिए अब ईमानदार साहित्यकारों और पत्रकारों को ही आगे आकर भ्रष्टाचारियों, राजनीतिज्ञों और नौकरशाहों की तिकड़ी पर वार करना होगा, तभी देश में कुछ सुधार संभव हो सकता है।

उन्होंने आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन की सराहना करते हुए कहा कि आचार्य महाश्रमण जन जीवन के अस्तित्व की रक्षा और अस्मिता के संरक्षण के लिए आस्था की लौ के रूप में उभरे हैं और जो आखिरी सांस लेती दम तोड़ती भारतीय संस्कृति में प्राण फूंकने का वंदनीय कार्य करने में संलग्न हैं। अणुव्रत आंदोलन से जुड़कर आचार्यश्री के सुझाये मार्ग पर चलकर ही सांस्कृतिक संरक्षण संभव है।

www.terapanthinfo.com

जीवन विज्ञान प्रशिक्षण शिविर

सूरत, 15 फरवरी। साध्वी कंचनप्रभा के सान्निध्य में सिटीलाइट सभा भवन सूरत में 150 स्कूलों के शिक्षकों एक दिवसीय जीवन विज्ञान प्रशिक्षण शिविर में भाग लिया। प्रारंभ महिला मंडल द्वारा जीवन विज्ञान गीत के संगान से हुआ। सभाध्यक्ष बालचंद बेताला ने जिला शिक्षा अधिकारी दिनेश पटेल, योग शिक्षक शिक्षा विभाग के संचालक नवनीत भाई एवं शिविर में संभागी शिक्षकों के स्वागत में विचार रखे। अणुव्रत समिति के पूर्व अध्यक्ष सुवालाल बोल्या ने अपने विचार रखे।

जिला शिक्षा अधिकारी दिनेश पटेल ने कहा हम गलत काम करने में किसी की इजाजत नहीं लेते तो फिर अच्छा काम करने में हम फिर किसका इंतजार करेंगे। हमें बच्चों को अच्छे संस्कार देने के लिए जीवन विज्ञान अभियान को स्वीकार करना चाहिए।

साध्वी कंचनप्रभा ने कहा चारित्रिक मूल्यों के प्रति आस्था उत्पन्न करने का उत्तम समय शैशव अवस्था है। जीवन विज्ञान अभियान बचपन से ही सत् संस्कारों के जागरण का व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक उपक्रम है। इससे भावनात्मक विकास की यात्रा प्रारंभ हो जाती है। जीवन विज्ञान प्रार्थना सभा में तथा परीक्षा पाठ्यक्रम में लागू हो ऐसा प्रयास शिक्षाविद् करें। आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ का अनुपम उपहार है 'जीवन विज्ञान'।

साध्वी मंजूरेखा ने कहा हर सुयोग्य शिक्षक चाहता है कि मेरे पास अध्ययनरत छात्र सत्संस्कारी बनें, इसलिए सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया देने वाला जीवन विज्ञान शिक्षक समुदाय के लिए अनिवार्य उपादेय है। प्रथमतः आप सभी जीवन विज्ञान के प्रयोगों से स्वयं को लाभान्वित करें। जीवन विज्ञान के प्रयोगों के द्वारा रासायनिक परिवर्तन संभव है। अनेक प्रांतों के स्कूलों में जीवन विज्ञान की उपलब्धि प्रमाणित हो चुकी है। अलका सांखला, मधु नाहटा एवं राकेश पाण्डेय ने योगासन, कायोत्सर्ग व प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कराए। जिज्ञासा व समाधान का भी क्रम रहा। जीवन विज्ञान शिविर में संभागी सभी शिक्षकों ने प्रसन्नता का अनुभव करते हुए लिखित सुझाव दिए कि ऐसे शिविर पुनः समायोजित होने चाहिएं। साध्वी उदितप्रभा, साध्वी निर्भयप्रभा, साध्वी चेलना एवं महिला मंडल अध्यक्षा सरोज बांठिया ने विचार रखे। प्रबंधक ट्रस्टी संजय सुराना, सभाध्यक्ष बेताला ने साहित्य द्वारा अतिथियों का सम्मान किया। सभी शिक्षकों को प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान बुकलेट एवं प्रमाण-पत्र दिए गए। आभार ज्ञापन तेयुप अध्यक्ष अनिल समदरिया ने एवं संचालन अलका सांखला ने किया।

मर्यादा है शांति एवं विकास का आधार

बाढ़, 8 फरवरी। मर्यादा शान्ति और विकास का आधार है। मर्यादा और अनुशासन के बिना हम उन्नति की कोई कल्पना नहीं कर सकते। जहां मर्यादा की प्रतिष्ठा है वहां सृजन का सुनहरा संसार तैयार हो जाता है। अणुव्रत अनुशासन और मर्यादा की ही आचार संहिता है। वैश्विक शान्ति के लिए जो भी प्रयोग हो रहे हैं अगर उनमें अणुव्रत की आचार संहिता और अहिंसा प्रशिक्षण जैसे आयामों को शामिल करें तो सुख-शान्ति की सरिता बह सकती है। ये विचार जिले के शिशु रोग विशेषज्ञ तथा संभावना चेरिटेबल ट्रस्ट के संस्थापक सचिव डॉ. अंजेश कुमार ने स्थानीय अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र में आयोजित मर्यादा दिवस समारोह में मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए व्यक्त किए।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए बाढ़ नगर परिषद के उपाध्यक्ष राजीव कुमार चून्ना ने राष्ट्र निर्माण में अहिंसा प्रशिक्षण की भूमिका पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के आयोजक-संयोजक प्रो. साधुशरण सिंह सुमन ने आचार्य महाश्रमण की प्रेरणा से इस जनपद में चल रहे अणुव्रत, जीवन विज्ञान, अहिंसा प्रशिक्षण और प्रेक्षाध्यान के कार्यों पर प्रकाश डाला। छात्र संसद संयोजक राणा शत्रुघ्न सिंह, शिक्षक संसद के जिला संयोजक राजेश राजू, दैनिक जागरण से पं. सत्यनारायण चतुर्वेदी, डॉ. आले हसन आजाद, दीपक सिन्हा, रविरंजन कुमार ने अपने विचार रखे। डॉ. अंजेश कुमार ने अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र बाढ़ को अत्याधुनिक प्रिंटर भेंट किया। कार्यक्रम में सैकड़ों नागरिक उपस्थित थे।

अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र शेरपुर द्वारा सेवा कार्य

शेरपुर। अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र शेरपुर द्वारा समाज में लड़कियों के प्रति सोच में बदलाव हेतु कार्यक्रम रखा गया। इस अवसर पर शेरपुर सभाध्यक्ष नरेश गर्ग के सौजन्य से नवजन्मी 15 बच्चियों हेतु उनके अभिभावकों को कपड़े एवं खिलौने देकर प्रोत्साहित किया गया। फलाहार एवं खाद्य सामग्री की व्यवस्था ग्राम पंचायत द्वारा की गयी। कार्यक्रम का प्रारंभ अहिंसा प्रशिक्षण में संभागी प्रशिक्षकों द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ।

मुख्य अतिथि पंजाब पब्लिक सर्विस कमीशन के मेम्बर व विधानसभा धुरी के इंचार्ज तथा पूर्व जिला परिषद संगरूर के चेयरमैन रूपकौर बागड़िया ने कहा आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ के अवदान अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान और अहिंसा प्रशिक्षण जैसे अभियान से हर व्यक्ति को जुड़कर अपने जीवन को सार्थक बनाना चाहिए। लड़कियों का मनोबल बढ़ाने के लिए नवजन्मी बच्चियों को प्रोत्साहित करना समाज को सही दिशा देने का कार्य है। संजय भाई ने कहा लड़कियां आज समाज के हर क्षेत्र में आगे दिखाई दे रही हैं। वे पढ़ाई में भी लड़कों से अव्वल रहती हैं। अतः समाज को इसके प्रति सोच बदलने की जरूरत है।

इस अवसर पर संत बाबा निर्मल सिंह, आंगनवाड़ी से सिन्द्रकौर, स्टेट बैंक ऑफ पटिलयाला धनौरीकला के ब्रांच मैंनेजर रवि शंकर चौधरी, पंच गुरमेल सिंह, रोजगार प्रशिक्षक सुखविन्द्र कौर, पंजाबी ट्रिब्यून के पत्रकार बीरबल ऋषि एवं पंजाब केशरी के पत्रकार अनिस गर्ग ने अपने विचार रखे। आभार ज्ञापन अहिंसा प्रशिक्षक ने किया। उपस्थित अतिथियों का सम्मान साहित्य द्वारा किया गया।

www.terapanthinfo.com

अणुव्रत जीवन विज्ञान कार्यक्रम

बहल, 19 फरवरी। अणुव्रत, जीवन विज्ञान अभियान के तहत हरियाणा की यात्रा करते हुए मुनि विजयराज के ज्ञानकुंज पब्लिक स्कूल में पड़ाव के दौरान कार्यक्रम रखा गया। इसमें ज्ञानकुंज पब्लिक स्कूल, स्वामी विवेकानंद सीनियर सेकेंडरी स्कूल एवं महेश्वरी सीनियर सेकेंडरी स्कूल के विद्यार्थियों एवं शिक्षक-शिक्षिकाओं ने भाग लिया।

मुनि विजयराज ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा सोने की चिड़िया कहलाने वाला भारत आज गमगीन इसलिए हो गया है। क्योंकि भारतीय जनजीवन पाश्चात्य संस्कृति के आधीन हो गया है। आज शिक्षा के साथ अच्छे संस्कारों का निर्माण होना जरूरी है। जीवन विज्ञान के द्वारा भावात्मक विकास किया जा सकता है। शिक्षा को सर्वांगीण बनाया जा सकता है।

मुनिश्री ने आगे कहा आज की शिक्षा से अच्छे वैज्ञानिक, डॉक्टर, वकील, इंजीनियर, प्रशासक एवं कुशल उद्यमी तो बन रहे हैं। किन्तु सदाचारी श्रेष्ठ व्यक्तित्व का निर्माण नहीं हो पा रहा है। आज अपराधों का ग्राफ बढ़ता जा रहा है। नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। इस अवसर पर मुनिश्री ने विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को व्यसनमुक्ति के संकल्प करवाए। संस्था प्रधान संदीप टंडन ने मुनिश्री का स्वागत किया। विद्यालय में अणुव्रत जीवन विज्ञान का साहित्य भेंट किया गया। अभय सिंह यादव व महेन्द्र कुमार ने आभार व्यक्त किया। संयोजन प्रदीप चौधरी ने किया।

शान्ति एवं अहिंसा की संस्कृति का विकास

राजसमंद, 2 फरवरी। अणुव्रत विश्व भारती राजसमंद द्वारा विद्यालयों में शान्ति व अहिंसा की संस्कृति विकसित करने हेतु एक विशिष्ट प्रायोजना 'स्कूल विद ए डिफरेन्स' का शुभारंभ किया गया है। इसके अंतर्गत शिक्षा, भाषा, भूषा, भवन, भोजन व भावना के स्तर पर सूक्ष्म परिवर्तनों द्वारा विद्यालय के वातावरण को संस्कारयुक्त बनाने की दिशा में चयनित पांच विद्यालयों में यह प्रयोग गतिशील है।

राजसमंद के आचार्य निरंजन नाथ उच्च माध्यमिक विद्यालय, यूनिक माध्यमिक विद्यालय, इण्डियन पब्लिक माध्यमिक विद्यालय, विद्या निकेतन उच्च प्राथमिक विद्यालय, मयूर माध्यमिक विद्यालय में इस प्रायोजना के अंतर्गत व्यापक सर्वेक्षण द्वारा कार्य बिन्दुओं का निर्धारण किया गया। संस्था प्रधान व प्रभारी शिक्षकों की कार्यशाला में विचार विमर्श द्वारा कार्य योजना का निर्माण हुआ। कार्यशाला को प्रयोजना अधिकारी प्रकाश तातेड़, बालोदय निदेशक बालमुकुन्द सनाढ्य, शिक्षाविद् एम.एल. माण्डोत एवं जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. राकेश तैलंग, प्राचार्य सुरेन्द्र सिंह पाल ने संबोधित एवं निर्देशित किया।

प्रायोजना के सुचारु संचालन हेतु अणुविभा द्वारा विद्यालयों को प्रबोध प्रेरणा पट्ट, प्रसाधन मंजूषा एवं पुस्तकों का सेट प्रदान किया गया। विद्यालयों की सक्रिय सहभागिता हेतु उनमें बालोदय क्लबों का गठन किया। जहां बालक विभिन्न रुचिशील कार्यक्रमों द्वारा भावात्मक शिक्षा के अछूते पहलुओं से होंगे। चतुर कोठारी, मनोहर गिरी गोस्वामी, साबिर शुक्रिया, देवेन्द्र आचार्य के संयोजन में यह प्रायोजना एक नवाचार स्वरूप संचालित है।

व्यसनमुक्ति संगोष्ठी का आयोजन

बालसमंद, 25 फरवरी। राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद राजसमंद द्वारा संचालित अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र बालसमंद के तत्वावधान में राजकीय कन्या प्राथमिक विद्यालय के प्रांगण में नशामुक्ति संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें सैकड़ों विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने भाग लिया। अहिंसा प्रशिक्षक ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा नशा नाश का द्वार है। इसके प्रति सावधान रहने की महती जरूरत है। अवधेशकुमार ने विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से चलाए जा रहे नशामुक्ति अभियान की विस्तार से जानकारी दी।

इस अवसर पर विद्यालय की छात्राओं ने प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान के प्रयोग किए। उन्होंने जीवन भर नशा नहीं करने का भी संकल्प लिया। कार्यक्रम का संचालन अहिंसा प्रशिक्षक राकेश पारीक ने किया। विद्यालय के प्रधानाध्यापक सुन्दरलाल, अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र के समन्वयक महावीर सैनी एवं अन्य वक्ताओं ने अपने विचार रखे। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य ने अपने विद्यालय के सभी विद्यार्थियों को अणुव्रत एवं जीवन विज्ञान के रास्ते पर चलने की बात कहते हुए जीवन भर नशा नहीं करने का आह्वान किया।

विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास

लेहसना बड़ा, 2 फरवरी। अणुव्रत शिक्षक संसद राजसमंद द्वारा संचालित अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र लोहसना बड़ा में जैन विश्व भारती के अहिंसा व शांति विभाग के सहायक आचार्य रविन्द्र सिंह व विकास कुमार के आतिथ्य में कार्यक्रम रखा गया। उन्होंने केन्द्र द्वारा संचालित गतिविधियों की जानकारी लेते हुए कहा कि स्वस्थ समाज संरचना हेतु समाज के हर वर्ग को अणुव्रत आंदोलन से जुड़कर कार्य करना होगा। इस अवसर पर गांव के टैगोर माध्यमिक शिक्षण संस्थान एवं रघुवीर नरेन्द्र पब्लिक स्कूल के छात्र- छात्राओं से भी जानकारी ली एवं उनके अनुभव सुने।

शिक्षक सुनील कुमार एवं अकरम अली ने कहा कि शिक्षा के साथ अहिंसा प्रशिक्षण से विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होने के साथ अणुव्रत शिक्षा से व्यवहार में परिवर्तन स्पष्ट नजर आ रहा है। अहिंसा प्रशिक्षक के.जी. मून्दड़ा ने स्वरोजगार केन्द्र पर आज के समयानुसार कम्प्यूटर प्रशिक्षण शुरुआत करने का सुझाव दिया।

अहिंसा संगोष्ठी

मौजाना। अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र मौजाना के तत्वावधान में रा.उ.प्रा. विद्यालय मौजाना में अहिंसा संगोष्ठी का आयोजन हुआ। पर्यवेक्षक अवधेशकुमार ने विद्यार्थियों और शिक्षकों में आध्यात्मिक चेतना का जागरण किया। प्रेरक गीतों के माध्यम से जागृति लायी गयी। सिलाई संभागियों को भी प्रेरित किया गया। संचालन अहिंसा प्रशिक्षक श्यामलाल लखारा ने किया। विद्यार्थियों के भावात्मक विकास हेतु महाप्राण ध्वनि, अणुव्रत गीत व जीवन विज्ञान के प्रयोग करवाए गए। कार्यक्रम में रामकुमार, श्रीभगवान, वेदवती, सुधा शर्मा इत्यादि शिक्षकों ने अपने विचार रखे। विद्यार्थियों ने भी अपने अनुभव बताये। प्रधानाध्यापक जसवंत ने आभार व्यक्त किया।

www.terapanthinfo.com

स्वस्थ समाज का आधार है नैतिकता

बालोतरा, 10 फरवरी। मुनि मदनकुमार के सान्निध्य में सभा भवन में भ्रष्टाचार उन्मूलन और अणुव्रत पर परिचर्चा का आयोजन हुआ। इसमें अनेक शिक्षाविदों, बुद्धिजीवियों और समाज सेवियों ने सोत्साह भाग लिया।

मुनि मदनकुमार ने कहा जीवन में आर्थिक पवित्रता जरूरी है। नैतिकता स्वस्थ समाज का आधार है। लोभ और आवेश को नियंत्रित करके ही जीवन को शुद्ध रखा जा सकता है। जब पदार्थ की सीमा है तो इच्छा की सीमा क्यों नहीं होनी चाहिए। समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार तनाव और रोग का जनक है।

चरित्र विकास पर बल देते हुए मुनिश्री ने कहा जीवन में धर्म और मोक्ष को गौण करने से ही अर्थ और काम की समस्या जटिल बनी है। धर्म को जानने के लिये नैतिकता को और नैतिकता को जानने के लिए अणुव्रत को जानना जरूरी है।

कार्यक्रम में नगरपालिका अध्यक्ष महेश चौहान ने कहा अणुव्रत के पालन से ही भ्रष्टाचार से मुक्ति पायी जा सकती है। अणुव्रत के नियम मानव मात्र के लिये कल्याणकारी है। मुनि कोमलकुमार ने भी अपने विचार रखे।

● **13 फरवरी।** मुनि मदनकुमार ने सुमेर निकेतन में आयोजित ''अणुव्रत के आदर्श और कर्त्तव्य बोध'' विषयक संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा नैतिकता के विकास से ही स्वस्थ समाज की रचना की जा सकती है। वही धर्म प्राणवान है जिसमें अध्यात्म और नैतिकता का पुट है। कोरी उपासना मनुष्य के लिये त्राण नहीं बन सकती।

उन्होंने आगे कहा संयम से ही जीवन में शान्ति का अनुभव किया जा सकता है। असंयम और अपव्यय से जीवन बोझिल बनता है। भोज और शादी में होने वाला प्रदर्शन तथा फिजूलखर्च चिंतनीय है। जीवन में संयम को लाकर ही नैतिकता की प्रतिष्ठा की जा सकती है।

कार्यक्रम में जोधपुर आयकर आयुक्त बी.पी. जैन ने कहा संयम में चुम्बकीय आकर्षण होता है। अणुव्रत में अद्भुत शक्ति है जिससे नये समाज का निर्माण किया जा सकता है। मुनि कोमलकुमार एवं शान्तिप्रिय ने उद्गार व्यक्त किये तथा सुमेरमल भंसाली एवं जवेरीलाल सालेचा ने अतिथि बी. पी. जैन का साहित्य से सम्मान किया। संचालन अणुव्रत समिति के अध्यक्ष ओम बांठिया ने किया तथा संकल्प ग्रहण के लिये आह्वान किया।

तेरापंथी महासभा कोलकाता द्वारा आह्वान

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा कोलकाता ने देशभर की सभी सभाओं को आह्वान करते हुए कहा कि अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत नैतिक क्रांति का आंदोलन है। अणुव्रत के स्वर ने सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया है। इसकी पवित्र भावना से उत्प्रेरित होकर लाखों व्यक्तियों ने अपनी जीवन दिशा बदली है। यह एक मानवीय आचार संहिता है। इस अभियान को गति देने हेतु हमें सघन प्रयास करना है। तेरापंथ विकास परिषद के निर्देशानुसार जहां अणुव्रत समिति है, वहां तेरापंथी सभाएं हर दृष्टि से अणुव्रत समिति को सहयोग कर कार्य को गति प्रदान करे एवं जहां अणुव्रत समिति नहीं है वहां अणुव्रत के प्रचार-प्रसार के पूरे दायित्व का निर्वहन तेरापंथी सभा करे।

इसी क्रम में आपसे सादर निवेदन है कि अणुव्रत के कार्य को विस्तार देने हेतु अणुव्रत समिति यदि तेरापंथ भवन में कोई कार्यक्रम करना चाहें तो आप उन्हें स्थान उपलब्ध कराने की व्यवस्था करें। आशा है अणुव्रत के प्रचार-प्रसार में आपका पूर्ण सहयोग मिलेगा।

भंवरलाल सिंघी, *महामंत्री*

आवश्यक सूचना

अणुव्रत महासमिति के संविधान में संशोधन की अपेक्षा काफी लम्बे समय से महसूस की जा रही है। पिछले वर्ष सरदारशहर में आयोजित वार्षिक अधिवेशन एवं उसके पहले व बाद में कार्यसमिति में भी इस पर अनेक चर्चाएं हो चुकी हैं। 26 जनवरी 2011 को अणुव्रत भवन में हुई कार्यकारिणी बैठक में यह निर्णय लिया गया कि वर्तमान संविधान के कुछ आवश्यक बिन्दुओं में संशोधन करते हुए, पूरा विधान सदस्यों को चिंतन-मनन हेतु भेज दिया जाये, एवं उस पर जो विचार आयें उन्हें समायोजित करके, पूरा विधान अगली विशेष साधारण सभा बैठक में पारित करने हेतु रखा जाये। आपसे निवेदन है कि आप अपने चिंतनपूर्वक विचारों से हमें अवगत करवायें। कृपया अपने विचार लिखित में भिजवाएं।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण मेवाड़ यात्रा के क्रम में 11-12 मई 2011 को राजसमंद पधारने का संभावित कार्यक्रम है, यहां उनकी रजत जयंति वर्ष का प्रथम चरण एवं आचार्य पदारोहण की प्रथम वर्षगांठ के समारोह का आयोजन होगा। इस अवसर पर राजसमंद में कार्यसमिति व साधारण सदन का विशेष अधिवेशन आयोजित होगा। बैठक का एजेन्डा यथासमय भेज दिया जायेगा, कृपया इस अग्रिम सूचना पर राजसमंद पधारने का कार्यक्रम बना लेवें।

अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष श्री निर्मल एम. रांका की तरफ से 13 मई 2011 सायं को राजसमंद से रवाना होकर आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण स्थल बगड़ी पधारने एवं वहां उनका एक दिवसीय आतिथ्य स्वीकार का भी आमंत्रण है। वहां से 14 मई 2011 सायं को 10 किमी दूर स्थित सोजत रोड स्टेशन से आप इच्छित वापसी यात्रा के लिए प्रस्थान कर सकते हैं। कृपया आमंत्रण स्वीकार करें।

विजयराज सुराणा, *महामंत्री*

www.terapanthinfo.com